वेदमन्त्राः

Colophon

This document was typeset using XaMax, and uses the Siddhanta font extensively. It also uses several Max macros designed by H. L. Prasād. Practically all the encoding was done with the help of Ajit Krishnan's mudgala IME (http://www.aupasana.com/).

Acknowledgements

The initial ITRANS encodings of some of these texts were obtained from http://sanskritdocuments.org/andhttps://sa.wikisource.org/. Thanks are also due to Ulrich Stiehl (http://sanskritweb.de/) for hosting a wonderful resource for Yajur Veda, and also generously sharing the original Kathaka texts edited by Subramania Sarma. See also http://stotrasamhita.github.io/about/

FOR PERSONAL USE ONLY NOT FOR COMMERCIAL PRINTING/DISTRIBUTION

अनुऋमणिका

| लघुन्यासः | 1 |
|-------------------|----|
| श्री-रुद्रध्यानम् | 1 |
| देवता-स्थापनम् | 2 |
| श्रीरुद्रजपः | 4 |
| ध्यानम् | 5 |
| रुद्रप्रश्नः | 7 |
| चमकप्रश्नः | 15 |
| पुरुषसूक्तम् | 20 |
| नारायणसूक्तम् | 22 |
| विष्णुसूक्तम् | 23 |
| भूसूक्तम् | 24 |
| दुर्गा सूक्तम् | 26 |
| श्रीसूक्तम् | 27 |
| मेधासूक्तम् | 29 |
| रुद्रसूक्तम् | 30 |
| वरुणसूक्तम् | 31 |
| ब्रह्मसूक्तम् | 32 |
| भाग्यसूक्तम् | 32 |
| पवमानसूक्तम् | 33 |

ii

| आयुष्यसूक्तम् | 36 |
|--|----|
| नवग्रहसूक्तम् | 38 |
| नक्षत्रसूक्तम् | 41 |
| गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत् | 48 |
| मृत्युञ्जयहोम-मन्त्राः | 52 |
| महान्यासः | 55 |
| पञ्चाङ्गरुद्रन्यासः रावणोक्ता पञ्चाङ्गप्रार्थना-सहितम् | 55 |
| पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम् | 57 |
| केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः | 59 |
| मूर्घादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः | 65 |
| पादादिमूर्धान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः | 65 |
| हंसगायत्री | 66 |
| दिक् सम्पुटन्यासः | 67 |
| षोडशाङ्गरौद्रीकरणम् | 72 |
| गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थो) न्यासः | 76 |
| आत्मरक्षा | 77 |
| शिवसङ्कर्त्यः | 78 |
| पुरुषसूक्तम् | 83 |
| उत्तरनारायणम् | 85 |
| अप्रतिरथम् | 86 |
| प्रतिपूरुषम् (सं॰) | 87 |
| प्रतिपूरुषम् (ब्रा॰) | 88 |
| शतरुद्वीयम् (सं॰) | 89 |
| शतरुद्रीयम् (ब्रा॰) | 92 |
| पश्चाङ्गम् | 93 |
| अष्टाङ्ग-नमस्काराः | 94 |
| लघुन्यासे श्री-रुद्रध्यानम् | 95 |
| लघुन्यासे देवता-स्थापनम् | 96 |
| आत्मपूजा | 98 |
| कलशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम् | 98 |
| • · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | |

| | षोडशोपचार | पूजा | | | | | | | | | | | | | | | | 99 |
|--------|-----------------|-----------|-----|--|---|--|---|---|--|--|--|--|---|--|--|---|---|-----|
| | श्रीरुद्रनाम हि | ाशती | | | | | | | | | | | | | | | | 103 |
| | प्रदक्षिणम् . | | | | | | | | | | | | | | | | | 110 |
| | | | _ | | | | | | | | | | | | | | | 111 |
| | चमकानुवाकै | : प्रार्थ | ोना | | | | | | | | | | | | | | | 113 |
| | प्रार्थना | | | | | | | | | | | | | | | | | 118 |
| | श्रीरुद्रजपः | | | | | | | | | | | | | | | | | 118 |
| | ध्यानम् | | | | | | | | | | | | | | | | | 119 |
| | रुद्रप्रश्नः . | | | | | | | | | | | | | | | | | 121 |
| | चमकप्रश्नः | | • | | • | | • | • | | | | | • | | | • | • | 128 |
| रुद्र | पद्पाठः | | | | | | | | | | | | | | | | | 136 |
| मन्त्र | भपुष्पम् | | | | | | | | | | | | | | | | | 147 |
| दश | शान्तयः | | | | | | | | | | | | | | | | | 149 |

॥ लघुन्यासः॥

॥श्री-रुद्रध्यानम्॥

अथाऽऽत्मानं शिवात्मानं श्री-रुद्र रूपं ध्यायेत्॥

शुद्धस्फटिकसङ्काशं त्रिनेत्रं पश्चवऋकम्। गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम्॥

नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नागयज्ञोपवीतिनम्। व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम्॥

कमण्डल्वक्षसूत्राणां धारिणं शूलपाणिनम्। ज्वलन्तं पिङ्गलजटाशिखामुद्योतधारिणम्॥

वृषस्कन्धसमारूढम् उमादेहार्धधारिणम्। अमृते नाप्नुतं शान्तं दिव्यभोगसमन्वितम्॥

दिग्देवता समायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम्। नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम्॥

सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम्। एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत्॥

अथातो रुद्र स्नानार्चनाभिषेकविधिं व्याख्यास्यामः। आदित एव तीर्थे स्नात्वा उदेत्य शुचिः प्रयतो ब्रह्मचारी शुक्कवासा ईशानस्य प्रतिकृतिं कृत्वा तस्य दक्षिणप्रत्यग्देशे देवाभिमुखः स्थित्वा आत्मनि देवताः स्थापयेत्॥

॥देवता-स्थापनम्॥

प्रजनने ब्रह्मा तिष्ठतु। पादयोर्विष्णुस्तिष्ठतु। हस्तयोर्हरस्तिष्ठतु। बाह्वोरिन्द्रस्तिष्ठतु। जठरे अग्निस्तिष्ठतु। हृदये शिवस्तिष्ठतु। कण्ठे वसवस्तिष्ठन्तु। वक्रे सरस्वती तिष्ठतु। नासिकयोर्-वायुस्तिष्ठतु। नयनयोश्चन्द्रादित्यौ तिष्ठताम्। कर्णयोरिश्वनौ तिष्ठेताम्। ललाटे रुद्रास्तिष्ठन्तु। मूर्ध्र्यादित्यास्तिष्ठन्तु। शिरासे महादेवस्तिष्ठतु। शिखायां वामदेवस्तिष्ठतु। शिवाशङ्करौ तिष्ठतु। पुरतः शूली तिष्ठतु। पार्श्वयोः शिवाशङ्करौ तिष्ठताम्। सर्वतो वायुस्तिष्ठतु। ततो बहिः सर्वतोऽग्निर्ज्वालामाला-परिवृतस्तिष्ठतु। सर्वेष्वङ्गेषु सर्वा देवता यथास्थानं तिष्ठन्तु। मां रक्षन्तु। [सर्वान् महाजनान् सकुटुम्बं रक्षन्तु॥]

अग्निर्मे वाचि श्रितः। वाग्घृदंये। हृदंयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मंणि। (जिह्ना)

वायुर्में प्राणे श्रितः। प्राणो हृदये। हृदयं मिये। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (नासिका)

सूर्यो मे चक्षुंषि श्रितः। चक्षुर्हदेये। हृदेयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (नेत्रे)

चन्द्रमां मे मनंसि श्रितः। मनो हृदये। हृदयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (वक्षः) दिशों में श्रोत्रें श्रिताः। श्रोत्र हदेये। हदेयं मिये। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (श्रोत्रे)

आपों मे रेतंसि श्रिताः। रेतो हृदंये। हृदंयं मियं। अहमुमृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (गुह्मम्)

पृथिवी मे शरीरे श्रिता। शरीर्॰ हदंये। हदंयं मियं। अहमुमृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (शरीरम्)

ओ्ष्धिवनस्पतयों में लोमंसु श्रिताः। लोमांनि हृदंये। हृदंयं मिये। अहमुमृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (लोमानि)

इन्द्रों में बलें श्रितः। बल् १ हृदये। हृदयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (बाहू)

पुर्जन्यों मे मूर्धि श्रितः। मूर्धा हृदये। हृदयं मियं। अहमुमृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (शिरः)

ईशांनो मे मृन्यौ श्रितः। मृन्युर्ह्दये। हृदयं मियं। अहमुमृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (हृदयम्)

आत्मा मं आत्मिनं श्रितः। आत्मा हृदंये। हृदंयं मियं। अहममृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (हृदयम्)

पुनंर्म आत्मा पुन्रायुरागाँत्। पुनंः प्राणः पुन्राकूंत्मागाँत्। वैश्वानरो रिश्मिभिवीवृधानः। अन्तस्तिष्ठत्वमृतंस्य गोपाः॥ (सर्वाण्यङ्गानि संस्पृश्य स्थापनं कृत्वा मानसैराराधयेत्॥)

॥श्रीरुद्रजपः॥

अस्य श्री-रुद्राध्याय-प्रश्न-महामन्नस्य। अघोर ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। सङ्कर्षणमूर्तिस्वरूपो योऽसावादित्यः परमपुरुषः स एष रुद्रो देवता॥

नमः शिवायेति बीजम्। शिवतरायेति शक्तिः। महादेवायेति कीलकम्। श्री-साम्बसदाशिवप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥

॥करन्यासः॥

ॐ अग्निहोत्रात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दर्शपूर्णमासात्मने तर्जनीभ्यां नमः। चातुर्मास्यात्मने मध्यमाभ्यां नमः। निरूढपशुबन्धात्मने अनामिकाभ्यां नमः। ज्योतिष्टोमात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सर्वऋत्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

॥अङ्गन्यासः॥

अग्निहोत्रात्मने हृदयाय नमः। दर्शपूर्णमासात्मने शिरसे स्वाहा। चातुर्मास्यात्मने शिखायै वषट्। निरूढपशुबन्धात्मने कवचाय हुं। ज्योतिष्टोमात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्। सर्वक्रत्वात्मने अस्त्राय फट्। भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः।

॥ध्यानम्॥

आपाताल-नभः-स्थलान्त-भुवन-ब्रह्माण्डमाविस्फुरत् ज्योतिः स्फाटिक-लिङ्ग-मौलि-विलसत्-पूर्णेन्दु-वान्तामृतैः। अस्तोकाप्नुतमेकमीशमनिशं रुद्रानुवाकान् जपन् ध्यायेदीप्सितसिद्धये ध्रुवपदं विप्रोऽभिषिश्चेच्छिवम्॥ ब्रह्माण्ड-व्याप्त-देहा भित-हिमरुचा भासमाना भुजङ्गैः कण्ठे कालाः कपर्दा-कलित-शिश-कलाश्चण्ड-कोदण्ड-हस्ताः। त्र्यक्षा रुद्राक्षमालाः प्रकटित-विभवाः शाम्भवा मूर्तिभेदाः रुद्राः श्रीरुद्रसूक्त-प्रकटित-विभवा नः प्रयच्छन्तु सौख्यम्॥ ॥पश्चपूजा॥

लं पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि। हं आकाशात्मने पूष्पैः पूजयामि। यं वाय्वात्मने धूपमाघ्रापयामि। रं अग्र्यात्मने दीपं दर्शयामि। वं अमृतात्मने अमृतं महानैवेद्यं निवेदयामि। सं सर्वात्मने सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति हवामहे कुविं केवीनामुंप-

मश्रवस्तमम्।

ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नेः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादनम्॥

ॐ महागणपतये नमः॥

शं चं मे मयंश्व मे प्रियं चं मेऽनुकामश्चं मे कामंश्च मे सौमन्सश्चं मे भूद्रं चं मे श्रेयंश्च मे वस्यंश्च मे यशंश्च मे भगंश्च मे द्रविणं च मे यन्ता चं मे धूर्ता चं मे क्षेमंश्च मे धृतिंश्च मे विश्वं च मे महंश्च मे स्विचं मे ज्ञात्रं च मे सूश्चं मे प्रसूश्चं मे सीरं च मे ल्यश्चं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच मे जीवातुंश्च मे दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृत्रं च मेऽभंयं च मे सुगं चं मे शयंनं च मे सूषा चं मे सुदिनं च मे॥३॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ गृणानां त्वा गृणपंति हवामहे कविं केवीनामुंप्मश्री-वस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नेः शृण्वन्नूतिभिः सीद् सादेनम्॥ ॐ महागणपतये नमः॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नमंस्ते रुद्र मन्यवं उतो तु इषंवे नमंः। नमंस्ते अस्तु धन्वने बाह्भ्यामुत ते नमः॥ या त इषुः शिवतंमा शिवं बभूवं ते धनुंः। शिवा शंरव्यां या तव तयां नो रुद्र मृहय॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तनुवा शन्तंमया गिरिंशन्ताभिचांकशीहि॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभुष्यस्तव। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि ईसीः पुरुषं जगंत्॥ शिवेन वर्चसा त्वा गिरिशाच्छांवदामसि। यथां नः सर्वमिञ्जगंदयक्ष्म र सुमना असंत्॥ अध्यंवोचदिधवक्ता प्रंथमो दैव्यों भिषक्। अही ईश्च सर्वां अम्भयन्थ्सर्वांश्च यातुधान्यः॥ असौ यस्ताम्रो अंरुण उत बभुः सुमङ्गलः। ये चेमा र रुद्रा अभितों दिक्षु श्रिताः संहस्रशोऽवैषा र हेर्ड ईमहे॥ असौ योंऽवसर्पति नीलंग्रीवो विलोंहितः। उतैनं गोपा अंदश्त्रदंशत्रुदहार्यः॥ उतेनं विश्वां भूतानि स दृष्टो मृंडयाति नः। नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषें॥ अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नर्मः। प्र मुंश्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्लियोर्ज्याम्॥ याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप। अवतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतेषुधे॥ निशीर्यं शल्यानां मुखां शिवो नः सुमनां भव। विज्यं धनुः कपर्दिनो विशलयो बाणंवा उत्त॥ अनेशन्नस्येषंव आभुरंस्य निष्क्षिः। या ते हेतिमीं दुष्टम् हस्ते बभूवं ते धनुः॥ तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमंयक्ष्मया परिञ्जा नमंस्ते अस्त्वायंधायानांतताय धृष्णवे॥ उभाभ्यांमुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वंने। परि ते धन्वंनो हेतिर्स्मान्वृंणक्त विश्वतः॥ अथो य इंषुधिस्तवाऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥१॥

नमंस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्तकायं त्रिकालाग्निकालायं कालाग्निरुद्रायं नीलकुण्ठायं मृत्युञ्जयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवाय् नमः॥

नमो हिरंण्यबाहवे सेनान्यें दिशां च पतंये नमो नमों वृक्षेभ्यो हिरंकेशेभ्यः पशूनां पतंये नमो नमोः सस्पिर्श्वराय त्विषीमते पथीनां पतंये नमो नमों बस्रुशायं विव्याधिने- उन्नानां पतंये नमो नमो हिरंकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतंये नमो नमों भ्वस्यं हेत्यै जगतां पतंये नमो नमों रुद्रायांतताविने क्षेत्राणां पतंये नमो नमोः सूतायाहन्त्याय वनानां पतंये नमो नमो रोहिताय स्थपतंये वृक्षाणां पतंये

नमो नमो मुन्तिणे वाणिजाय कक्षाणां पत्ये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनां पत्ये नमो नमे उच्चैर्घोषा-याऽऽऋन्दयंते पत्तीनां पत्ये नमो नमः कृथ्स्रवीताय धावंते सत्वेनां पत्ये नमः॥२॥

नमः सहंमानाय निव्याधिनं आव्याधिनीनां पतंये नमो नमः ककुभायं निषक्षिणं स्तेनानां पतंये नमो नमो निषक्षिणं इषुधिमते तस्कराणां पतंये नमो नमो वश्चते परिवश्चते स्तायूनां पतंये नमो नमो निचेरवे परिचरायारंण्यानां पतंये नमो नमः सृकाविभ्यो जिघा स्मन्धो मुष्णतां पतंये नमो नमे उष्णीषिणं गिरिचरायं कुलुश्चानां पतंये नमो नम् इषुंमन्धो धन्वाविभ्यंश्च वो नमो नमं आतन्वानेभ्यः प्रतिद्धानेभ्यश्च वो नमो नमं आयच्छंन्द्धो विसृजन्धंश्च वो नमो नमोऽस्यन्धो विध्यन्धश्च वो नमो नम् आपनिभ्यश्च वो नमो नम् स्वपन्धो जाग्रन्धश्च वो नमो नम्सिष्ठंन्द्धो धावंन्द्धश्च वो नमो नमः स्वपन्धो जाग्रन्धश्च वो नमो नम्सिष्ठंन्द्धो धावंन्द्धश्च वो नमो नमः स्वपन्धो जाग्रन्धश्च वो नमो नम्सिष्ठंन्द्धो धावंन्द्धश्च वो नमो नमः स्वपन्धो जाग्रन्धश्च वो नमो नम्सिष्ठंन्द्धो धावंन्द्धश्च वो नमो नमः स्वपन्धो जाग्रन्धश्च वो नमो नम्सिष्ठंन्द्धो धावंन्द्धश्च वो नमो नमो नमे स्वपन्धो जाग्रन्धश्च वो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमे स्वपन्धा नमेः स्भाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो नमो अश्वभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमः॥३॥

नमं आव्याधिनींभ्यो विविध्यंन्तीभ्यश्च वो नमो नम् उगंणाभ्यस्तृ १ हृतीभ्यंश्च वो नमो नमो गृथ्येभ्यो गृथ्सपंतिभ्यश्च वो नमो नमो ब्रातेंभ्यो ब्रातंपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृणेभ्यो गृणपंतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमो महन्द्राः, क्षुष्ठकेभ्यंश्च वो नमो नमो रथिभ्योऽरथेभ्यंश्च वो नमो नमो रथैभ्यो रथंपतिभ्यश्च वो नमो नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यंश्च वो नमो नमः, क्षुत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यंश्च वो नमो नमस्तक्षंभ्यो रथकारेभ्यंश्च वो नमो नमः कुलांलेभ्यः कुमरिभ्यश्च वो नमो नमः पुञ्जिष्टेभ्यो निषादेभ्यंश्च वो नमो नमं इषुकुन्द्र्यो धन्वकृन्द्र्यंश्च वो नमो नमो मृगयुभ्यः श्वनिभ्यंश्च वो नमो नमः श्वभ्यः श्वपंतिभ्यश्च वो नमो नमः श्वभ्यः श्वपंतिभ्यः वो नमो नमः श्वभ्यः श्वपंतिभ्यः वो नमो नमः श्वभ्यः श्वपंतिभ्यः वो नमो नमः श्वपंतिभ्यः श्वपंतिभयः श्वपंतिभयः

नमों भ्वायं च रुद्रायं च नमंः श्वीयं च पशुपतंये च नमो नीलंग्रीवाय च शितिकण्ठांय च नमंः कपर्दिनं च व्युंप्तकेशाय च नमंः सहस्राक्षायं च शृतधंन्वने च नमों गिरिशायं च शिपिविष्टायं च नमों मीदुष्टंमाय चेषुंमते च नमों हुस्वायं च वामनायं च नमों बृह्ते च वर्षीयसे च नमों वृद्धायं च संवृध्वंने च नमो अग्नियाय च प्रथमायं च नमं आशवें चाजिरायं च नमः शीघ्रियाय च शीभ्यांय च नमं ऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमः स्रोतस्याय च द्वीप्यांय च॥५॥

नमों ज्येष्ठायं च किन्छायं च नमें पूर्वजायं चापर्जायं च नमों मध्यमायं चापगुल्भायं च नमों जघन्यांय च बुध्नियाय च नमें सोभ्यांय च प्रतिसर्याय च नमो याम्यांय च क्षेम्यांय च नमें उर्वर्याय च खल्यांय च नमः श्लोक्यांय चावसान्यांय च नमो वन्यांय च कक्ष्यांय च नमः श्रवायं च प्रतिश्रवायं च नमं आशुषेणाय चाशुरंथाय च नमः शूरांय चावभिन्दते च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमो बिल्मिने च कव्चिने च नमेः श्रुतायं च श्रुतसेनायं च॥६॥

नमों दुन्दुभ्यांय चाऽऽहन्न्यांय च नमों धृष्णवें च प्रमृशायं च नमों दूतायं च प्रहिंताय च नमों निष्किणें चेष्धिमतें च नमंस्तीक्ष्णेषंवे चाऽऽयुधिनें च नमः स्वायुधायं च सुधन्वंने च नमः सुत्यांय च पथ्यांय च नमः काट्यांय च नीप्यांय च नमः सूद्यांय च सर्स्यांय च नमों नाद्यायं च वेशन्तायं च नमः कूप्यांय चावट्यांय च नमो वर्ष्यांय चावर्ष्यायं च नमों मेघ्यांय च विद्युत्यांय च नमें ईिंप्रयांय चाऽऽतप्यांय च नमो वात्यांय च रेष्मियाय च नमों वास्त्व्यांय च वास्तुपायं च॥७॥

नमः सोमांय च रुद्रायं च नमंस्ताम्रायं चारुणायं च नमंः श्रङ्गायं च पशुपतंये च नमं उग्रायं च भीमायं च नमों अग्रेवधायं च दूरेवधायं च नमों हुन्ने च हनीयसे च नमों वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमंस्ताराय नमः शम्भवं च मयोभवं च नमः शङ्करायं च मयस्करायं च नमः शिवायं च शिवतंराय च नम्स्तीर्थ्याय च कूल्यांय च नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरंणाय चोत्तरंणाय च नमं आतार्याय चाऽऽलाद्यांय

च नमः शष्याय च फेन्याय च नमः सिक्त्याय च प्रवाह्याय च॥८॥

नमं इिष्णांय च प्रपृथ्यांय च नमः किश्शिलायं च क्षयंणाय च नमः कपिदिनं च पुलस्तयं च नमो गोष्ठ्यांय च गृह्यांय च नम्सतल्प्यांय च गेह्यांय च नमः काट्यांय च गह्वरेष्ठायं च नमों हृद्य्याय च निवेष्प्यांय च नमः पाश्स्व्यांय च रजस्यांय च नमः शुष्क्यांय च हिर्त्यांय च नमो लोप्यांय चोलप्यांय च नमं ऊर्व्याय च सूर्म्याय च नमः पुण्यांय च पणश्चांय च नमं उर्व्याय च सर्म्याय च नमः पुण्यांय च पणश्चांय च नमोऽपगुरमाणाय चाभिघृते च नमं आख्विद्ते च प्रख्विद्ते च नमो वः किरिकेभ्यों देवानाश् हृदंयेभ्यो नमो विक्षीणकेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमं आनिरहतेभ्यो नमं आमीवत्केभ्यः॥९॥

द्रापे अन्धंसस्पते दरिंद्रज्ञीलंलोहित। पृषां पुरुषाणामेषां पंशूनां मा भेर्माऽरो मो एषां किं चनाऽऽमंमत्॥ या तें रुद्र शिवा तनः शिवा विश्वाहंभेषजी। शिवा रुद्रस्यं भेषजी तयां नो मृड जीवसें॥ इमा र रुद्रायं तवसें कप्रदिनें क्ष्यद्वीराय प्रभेरामहे मृतिम्॥ यथां नः शमसंद्विपदे चतुंष्यदे विश्वं पुष्टं ग्रामें अस्मिन्ननांतुरम्॥ मृडा नों रुद्रोत नो मयंस्कृधि क्षयद्वीराय नमंसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मन्रायजे पिता तदंश्याम् तवं रुद्र प्रणीतौ॥ मा नों महान्तंमुत मा नों अर्भकं मा न उक्षंन्तमृत मा नं उिष्ठितम्। मा नों वधीः पितरं मोत

मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिषः॥ मा नंस्तोके तनये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितो वंधीर्हविष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥ आरात्तें गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुम्नम्समे ते अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव ब्रूह्यधां च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः॥ स्तुहि श्रुतं गर्तुसद् युवानं मृगं न भीममुपह्लुमुग्रम्। मृडा जीरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यं तें अस्मन्नि वंपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्यं हेतिर्वृणक्त परिं त्वेषस्यं दुर्मतिरंघायोः। अवं स्थिरा मघवंद्र्यस्तनुष्व मीढ्वंस्तोकाय तर्नयाय मृडय॥ मीढुंष्टम शिवंतम शिवो नंः सुमनां भव। पुरमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान आ चंर पिनांकं बिभ्रदा गंहि॥ विकिरिद विलोहित नमंस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्र ५ हेतयोऽन्यम्स्मन्नि वेपन्तु ताः॥ सुहस्राणि सहस्रधा बाहुवोस्तर्व हेतर्यः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखां कृधि॥१०॥

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याँम्। तेषा र सहस्रयोजनेऽव धन्वांनि तन्मसि॥ अस्मिन् मंहृत्यंर्ण्वैं-ऽन्तिरक्षे भवा अधि॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शुर्वा अधः, क्षंमाचराः॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर्र रुद्रा उपंश्रिताः॥ ये वृक्षेषुं सस्पिञ्जरा नीलंग्रीवा विलोहिताः॥ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कप्रदिनः॥ ये अन्नेषु विविध्यंन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्॥ ये पृथां पंथिरक्षंय ऐलबृदा यृव्युर्धः॥ ये तीर्थानि प्रचरेन्ति सृकावंन्तो निषक्षिणः॥ य एतावंन्तश्च भूयारंसश्च दिशों रुद्रा वितस्थिरे॥ तेषारं सहस्रयोजनेऽव धन्वांनि तन्मसि॥ नमों रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येंऽन्तरिक्षे ये दिवि येषामत्रं वातों वर्षमिषंवस्तेभ्यो दश् प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदींचीर्दशोध्वांस्तेभ्यो नम्स्ते नों मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि॥११॥

त्र्यंम्बकं यजामहे सुग्निधं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अपस् य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥ तमृष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वंस्य क्षयंति भेषजस्यं।

(ऋक्) यक्ष्वांमहे सौंमन्सायं रुद्रं नमोंभिर्देवमसुंरं दुवस्य॥ अयं मे हस्तो भगवान्यं मे भगवत्तरः। अयं मैं विश्वभैषजोऽयं शिवाभिमर्शनः॥

ये ते सहस्रंम्युतं पाशा मृत्यो मर्त्याय हन्तंवे। तान् यज्ञस्यं मायया सर्वानवं यजामहे। मृत्यवे स्वाहां मृत्यवे स्वाहां॥ ओं नमो भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्युंमें पाहि। प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनांप्यायस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंमें पाहि॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ चमकप्रश्नः॥

अग्नांविष्णू स्जोषंसेमा वंधन्तु वां गिरं। द्युम्नैर्वाजेंभिरागंतम्॥ वार्जश्च मे प्रस्वश्चं मे प्रयंतिश्च मे प्रसिंतिश्च मे धीतिश्चं मे ऋतुंश्च मे स्वरंश्च मे श्लोकंश्च मे श्रावश्चं मे श्लातिश्च मे स्वंश्च मे प्राणश्चं मेऽपानश्चं मे व्यानश्च मेऽसुंश्च मे चित्तं चं म् आधीतं च मे वार्क्चं मे मनंश्च मे चश्चंश्च मे श्लोत्रं च मे दक्षंश्च मे बलं च म् ओजंश्च मे सहंश्च म् आयुंश्च मे ज्रा चं म आत्मा चं मे त्नूश्चं मे शर्मं च मे वर्मं च मेऽङ्गांनि च मेऽस्थानिं च मे परूरंषि च मे शरीराणि च मे॥१॥

ज्यैष्ठ्यं च म् आधिपत्यं च मे मृन्युश्चं मे भामश्च मेऽमंश्च मेऽम्मंश्च मे जेमा चं मे मिहूमा चं मे विर्मा चं मे प्रिथमा चं मे वृष्मा चं मे द्राघुया चं मे वृद्धं चं मे वृद्धिश्च मे सृत्यं चं मे श्रृद्धा चं मे जगंच मे धनं च मे वशंश्च मे त्विषिश्च मे त्रीडा चं मे मोदंश्च मे जातं चं मे जिन्ष्यमाणं च मे सूक्तं चं मे सुकृतं चं मे वित्तं चं मे वेद्यं च मे भूतं चं मे भविष्यचं मे सुगं चं मे सुपथं च म ऋद्धं चं मृ ऋद्धिश्च मे कृतं चं मे कृतिंश्च मे मृतिश्चं मे सुमृतिश्चं मे॥२॥

शं चं में मयंश्च में प्रियं चं मेऽनुकामश्चं में कामंश्च में सौमनसश्चं में भुद्रं चं में श्रेयंश्च में वस्यंश्च में यशंश्च में भगंश्च में द्रविणं च में युन्ता चं में धुर्ता चं में क्षेमंश्च में धृतिश्च मे विश्वं च मे महंश्च मे संविचं मे जात्रं च मे सूर्श्च मे प्रसूर्श्च मे सीरं च मे लयश्चं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच मे जीवातंश्च मे दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृतं च मेऽभंयं च मे सुगं चं मे शयंनं च मे सूषा चं मे सुदिनं च मे॥३॥

ऊर्क मे सूनृतां च मे पर्यक्ष मे रसंश्व मे घृतं चं मे मधुं च मे सिग्धिश्व मे सपीतिश्व मे कृषिश्वं मे वृष्टिश्व मे जैत्रं च म औद्धिंद्यं च मे रियश्वं मे रायश्व मे पृष्टं चं मे पृष्टिश्व मे विभु चं मे प्रभु चं मे बहु चं मे भूयश्व मे पूर्णं चं मे पूर्णतंरं च मेऽक्षितिश्व मे कूर्यवाश्व मेऽन्नं च मेऽक्षुंच मे ब्रीह्यश्व मे यवाश्व मे माषाश्व मे तिलाश्व मे मुद्राश्वं मे खुल्वाश्व मे गोधूमाश्व मे मुसुराश्व मे प्रियङ्गंवश्व मेऽणंवश्व मे श्यामाकाश्व मे नीवाराश्व मे॥४॥

अश्मां च में मृत्तिका च में गि्रयंश्व में पर्वताश्च में सिकंताश्च में वनस्पतियश्च में हिरंण्यं च मेऽग्नेश्च में सीसं च में त्रपृश्च में श्यामं च में लोहं च मेऽग्निश्च में आपश्च में वीरुधंश्च म ओषंधयश्च में कृष्टपच्यं च मेऽकृष्टपच्यं च में ग्राम्याश्च में प्शवं आर्ण्याश्च युज्ञेन कल्पन्तां वित्तं च में वित्तिश्च में भूतं च में भूतिश्च में वसुं च में वस्तिश्च में कर्म च में शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमंश्च म इतिश्च में गितिश्च

मे॥५॥

अग्निश्चं म् इन्द्रंश्च मे सोमंश्च म् इन्द्रंश्च मे सिवता चं म् इन्द्रंश्च मे सरंस्वती च म् इन्द्रंश्च मे पूषा चं म् इन्द्रंश्च मे बृह्स्पतिश्च म् इन्द्रंश्च मे मित्रश्चं म् इन्द्रंश्च मे वर्रुणश्च म् इन्द्रंश्च मे त्वष्टां च म् इन्द्रंश्च मे धाता चं म् इन्द्रंश्च मे विष्णुंश्च म् इन्द्रंश्च मेऽिश्वनौं च म् इन्द्रंश्च मे म्रुतंश्च म् इन्द्रंश्च मे विश्वं च मे देवा इन्द्रंश्च मे पृथिवी चं म् इन्द्रंश्च मेऽन्तिरक्षं च म् इन्द्रंश्च मे द्याश्चं म् इन्द्रंश्च मे दिशंश्च म् इन्द्रंश्च मे मूर्धा चं म् इन्द्रंश्च मे प्रजापितिश्च म् इन्द्रंश्च मे॥६॥

अ्शुश्चं मे र्शिमश्च मेऽदाँभ्यश्च मेऽधिंपतिश्च म उपार्शुश्चं मेऽन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं मे मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्चं मे मृन्थी चं म आग्रयणश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे ध्रुवश्चं मे वैश्वान्रश्चं म ऋतुग्रहाश्चं मेऽतिग्राह्यांश्च म ऐन्द्राग्नश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे मरुत्वृतीयांश्च मे माहेन्द्रश्चं म आदित्यश्चं मे सावित्रश्चं मे सारस्वतश्चं मे पौष्णश्चं मे पात्रीवृतश्चं मे हारियोजनश्चं मे॥७॥

इध्मश्चं मे बहिश्चं मे वेदिश्च मे धिष्णियाश्च मे स्रुचंश्च मे चमुसाश्चं मे ग्रावाणश्च मे स्वरंवश्च म उपर्वाश्चं मेऽधिषवंणे च मे द्रोणकलुशश्चं मे वाय्व्यांनि च मे पूत्भृचं म आधवनीयश्च म आग्नींग्नं च मे हिव्धांनं च मे गृहाश्चं मे सदंश्च मे पुरोडाशाँश्च मे पचताश्चं मेऽवभृथश्चं मे स्वगाकारश्चं मे॥८॥

अग्निश्चं मे घर्मश्चं मेऽर्कश्चं मे सूर्यंश्च मे प्राणश्चं मेऽश्वमेधश्चं मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्चं मे शक्वंरीरङ्गुलंयो दिशंश्च मे यज्ञेनं कल्पन्तामृक्चं मे सामं च मे स्तोमंश्च मे यज्ञंश्च मे दीक्षा चं मे तपश्च म ऋतुश्चं मे वृतं चं मेऽहोरात्रयौर्वृष्ट्या बृंहद्रथन्तरे चं मे यज्ञेनं कल्पेताम्॥९॥

गर्भाश्च मे वृथ्साश्चं मे त्र्यविश्च मे त्र्यवी चं मे दित्यवाचं मे दित्यौही चं मे पश्चाविश्च मे पश्चावी चं मे त्रिवृथ्सश्चं मे त्रिवृथ्सश्चं मे त्रिवृथ्सा चं मे तुर्यवाचं मे तुर्योही चं मे पष्टवाचं मे पष्टौही चं म उक्षा चं मे वृशा चं म ऋष्मश्चं मे वेहचं मेऽनुङ्वां चं मे धेनुश्चं म आयंर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतामपानो यज्ञेन कल्पतां व्यानो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां श्रोतं यज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पतामाश्०॥

एकां च मे तिस्रश्चं मे पश्चं च मे स्प्त चं में नवं च म एकांदश च मे त्रयोंदश च मे पश्चंदश च मे स्प्तदंश च मे नवंदश च म एकंविश्शतिश्च मे त्रयोंविश्शतिश्च मे पश्चंविश्शतिश्च मे स्प्तिविश्शितिश्च मे नवंविश्शतिश्च म एकंत्रिश्शच मे त्रयंस्त्रिश्च मे चतंस्रश्च मेऽष्टो चं मे द्वादंश च मे षोडंश च मे विश्वातिश्चं मे चतुंविश्शतिश्च मेऽष्टाविश्शितिश्च मे द्वात्रिश्चं मे षद्गिर्श्शच मे चत्वारिर्शचं मे चतुंश्वत्वारिर्शच मेऽष्टाचंत्वारिर्शच मे वाजंश्व प्रस्वश्चांपिजश्च ऋतुंश्च सुवंश्व मूर्धा च व्यश्जिंयश्चाऽऽन्त्यायनश्चान्त्यंश्च भौवनश्च भुवंनश्चाधिपतिश्च॥११॥

इडां देवहूर्मनुंर्यज्ञनीर्बृह्स्पतिंरुक्थाम्दानिं शश्सिष्द्विश्वेंदेवाः सूँक्तवाचः पृथिवि मात्मां मां हिश्सीर्मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं विद्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वाचंमुद्यासश् शुश्रूषेण्यां मनुष्येंभ्यस्तं मां देवा अवन्तु शोभायै पितरोऽनुंमदन्तु॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ पुरुषसूक्तम्॥

सहस्रंशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ पुरुष प्वेद सर्वम्। यद्भूतं यच् भव्यम्। उतामृत्त्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहंति॥ एतार्वानस्य महिमा। अतो ज्यायाईश्च पूर्रुषः। पादौँऽस्य विश्वां भूतानि। त्रिपादंस्यामृतं दिवि॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादौं उस्येहा ऽऽभंवात्पुनंः। ततो विश्वङ्कां ऋामत्। साशनानुशने अभि॥ तस्माँद्विराडंजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अर्त्यरिच्यत। पृश्चाद्भूमिमथों पुरः॥ यत्पुरुषेण हिवषां। देवा युज्ञमतंन्वत। वुसुन्तो अस्याऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शुरद्धविः॥ सप्तास्यांऽऽसन् परि्धयः। त्रिः सप्त समिर्धः कृताः। देवा यद्यज्ञं तंन्वानाः। अबंध्रन् पुरुषं पृशुम्॥ तं युज्ञं बुर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा अयंजन्त। साध्या ऋषंयश्च ये॥ तस्मौद्यज्ञाथ्सवृहुतः। सम्भृतं पृषद्यज्यम्। पृशू इस्ता इश्चेके वायव्यान्। आरुण्यान्ग्राम्याश्च ये॥ तस्मौद्यज्ञाथ्संर्वहुतः। ऋचः सामानि जिज्ञरे। छन्दा रेसि जिज्ञरे तस्मौत्। यजुस्तस्मांदजायत॥ तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चोभ्यादंतः। गावो ह जिज्ञे तस्मात्। तस्माज्ञाता अंजावयः॥ यत्पुरुषं व्यंदधः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुख्ं किमंस्य कौ बाहू। कावूरू पादांवुच्येते॥ ब्राह्मणौंऽस्य

मुखंमासीत्। बाह् रांजुन्यः कृतः। ऊरू तदंस्य यद्वैश्यः। पुन्धा । शूद्रो अंजायत॥ चुन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रेश्चाग्निश्चं। प्राणाद्वायुरंजायत॥ नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समंवर्तत। पद्भां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथां लोका अंकल्पयन्॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंर्णं तमंसस्तु पारे॥ सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरं। नामांनि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥ धाता पुरस्ताद्यमुंदाजहारं। शुकः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतंस्रः। तमेवं विद्वानुमृतं इहं भंवति। नान्यः पन्था अयंनाय विद्यते॥ युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्। ते ह नार्कं महिमानंः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ अद्धः सम्भूतः पृथिव्यै रसाँच। विश्वकंर्मणः समंवर्तताधि। तस्य त्वष्टां विदधंद्रूपमेति। तत्पुरुषस्य विश्वमाजांनमग्रे॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्थां विद्यतेऽयंनाय॥ प्रजापंतिश्वरति गर्भे अन्तः। अजायंमानो बहुधा विजायते। तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम्। मरीचीनां पदिमच्छन्ति वेधसंः॥ यो देवेभ्य आतंपति। यो देवानां पुरोहिंतः। पूर्वी यो देवेभ्यों जातः। नमों रुचाय ब्राह्मये॥ रुचं ब्राह्मं जनयंन्तः। देवा अग्रे तदंबुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्। तस्यं देवा असन् वशें॥ हीश्चं ते लक्ष्मीश्च पत्र्यौं। अहोरात्रे पार्श्वे। नक्षंत्राणि रूपम्। अश्विनौ व्यात्तम्। इष्टं मेनिषाण। अमुं मेनिषाण। सर्वं मनिषाण॥
॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ नारायणसूक्तम्॥

(तैत्तिरीयारण्यकम्/प्रपाठकः – १०/अनुवाकः – १३)

सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशंम्भवम्। विश्वं नारायणं देवमृक्षरं पर्मं पदम्। विश्वतः परमान्नित्यं विश्वं नारायणः हरिम्। विश्वंमेवेदं पुरुष्ट्यतिष्ठश्वमुपंजीवित। पितं विश्वंस्याऽऽत्मेश्वंरः शाश्वंतः शिवमंच्युतम्। नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं प्रायणम्। नारायणपरो ज्योतिरात्मा नारायणः परः। नारायण परं ब्रह्म तत्त्वं नारायणः परः। नारायण परः। नारायणः परः। यर्चं किश्चित्रंगथ्यम्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा॥

अन्तेर्बृहिश्चं तथ्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः। अनेन्त्मव्ययं कृवि॰ संमुद्रेऽन्तं विश्वशंम्भुवम्। पद्मकोश प्रतीकाश्र् हृदयं चाप्यधोमुंखम्। अधो निष्ठ्या वितस्त्यान्ते नाभ्यामुपिर तिष्ठति। ज्वालुमालाकुलं भाती विश्वस्याऽऽयत्नं महत्। सन्तंत॰ शिलाभिंस्तु-लम्बत्याकोश्रसन्निभम्। तस्यान्ते सुष्रिर॰ सूक्ष्मं तस्मिन्थ्सर्वं प्रतिष्ठितम्। तस्य मध्ये महानंग्निर्विश्वाचिंर्विश्वतोमुखः।

सोऽग्रंभुग्विभंजिन्त्षृन्नाहारमज्रः कृविः। तिर्युगूर्ध्वमंधः शायी रश्मयंस्तस्य सन्तंता। सन्तापयंति स्वं देहमापादतल्मस्तंक तस्य मध्ये विह्नंशिखा अणीयौर्ध्वा व्यवस्थितः। नीलतोयदं-मध्यस्थाद्विद्युष्ठंखेव भास्वरा। नीवारशूकंवत्तन्वी पीता भास्वत्यणूपंमा। तस्याः शिखाया मध्ये प्रमात्मा व्यवस्थितः। स ब्रह्म स शिवः स हिरः सेन्द्रः सोऽक्षंरः पर्मः स्वराट्॥ ऋतः सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गंलम्। ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय व नमो नमः।

नारायणायं विद्यहें वासुदेवायं धीमहि। तन्नों विष्णुः प्रचोदयात्।

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवीचं यः पार्थिवानि विम्मे रजार्रस् यो अस्कंभायदुत्तंरर स्थस्थं विचक्रमाणस्रोधोरुंगायो विष्णोर्राटंमस् विष्णोः पृष्ठमंसि विष्णोः श्रभ्रेंस्थो विष्णोः स्यूरंसि विष्णोर्भुवमंसि वैष्णवमंसि विष्णांवे त्वा॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ विष्णुसूक्तम्॥

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विमुमे रजार्रसि यो अस्केभायदुत्तर्र स्थस्थं विचक्रमाणस्रेधोर्रुगायः॥ तदंस्य प्रियम्भिपाथों अश्याम्। नरो यत्रं देवयवो मदंन्ति। उरुक्रमस्य स हि बन्धुंरित्था। विष्णोः पदे पर्मे मध्व उथ्सं। प्र तिद्वष्णुः स्तवते वीर्याय। मृगो न भीमः कुंचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषुं त्रिषु विक्रमंणेषु। अधिक्षियन्ति भुवंनानि विश्वाः। परो मात्रंया तनुवां वृधान। न ते महित्वमन्वंश्रञ्जवन्ति॥

उभे ते विद्य रजंसी पृथिव्या विष्णों देवत्वम्। प्रमस्यं विथ्से। विचंक्रमे पृथिवीमेष एताम्। क्षेत्रांय विष्णुर्मनुषे दशस्यन्। ध्रुवासों अस्य कीरयो जनांसः। उरुक्षिति स्पुजनिमाचकार। त्रिर्देवः पृथिवीमेष एताम्। विचंक्रमे शृतर्चसं महित्वा। प्र विष्णुंरस्तु त्वस्स्तवीयान्। त्वेष इह्यंस्य स्थिवंरस्य नामं॥

॥भूसूक्तम्॥

(तैत्तिरीय संहिता काण्डम् – १/प्रपाठकः – ५/अनुवाकः – ३)

भूमिर्भूमा द्यौर्वरिणाऽन्तिरेक्षं महित्वा। उपस्थे ते देव्यदितेऽग्निमंन्नादम्नाद्यायाऽऽदेधे। आऽयङ्गौः पृश्चिरक्रमीदसंनन्मातरं पुनेः। पितरं च प्रयन्थ्सुवेः। त्रिश्शद्धाम् वि राजित् वाक्पंतुङ्गायं शिश्रिये। प्रत्यंस्य वह् द्युभिः। अस्य प्राणादंपानृत्यंन्तश्चरित रोचना। व्यंख्यन् महिषः सुवेः॥

यत्त्वां कुद्धः पंरोवपं मृन्युना यदवंर्त्या। सुकल्पंमग्ने

तत्तव पुनस्त्वोद्दीपयामिस। यत्ते मृन्युपंरोप्तस्य पृथिवीमनुं दध्वसे। आदित्या विश्वे तद्देवा वसंबश्च समाभरन्। मनो ज्योतिर्जुषतामाज्यं विच्छिन्नं यज्ञ समिमं दंधातु। बृह्स्पतिंस्तनुतामिमं नो विश्वे देवा इह मादयन्ताम्। सप्त ते अग्ने समिधंः सप्त जिह्वाः सप्तर्षयः सप्त धामं प्रियाणि। सप्त होन्नाः सप्तधा त्वां यजन्ति सप्त योनीरापृणस्वा घृतेनं। पुनंस्क्रां नि वर्तस्व पुनंरग्न इषाऽऽयुंषा। पुनंनः पाहि विश्वतः। सह रय्या नि वर्तस्वाग्ने पिन्वंस्व धारया। विश्वपिस्नंया विश्वत्स्परिं। लेकः सलेकः सुलेक्सते नं आदित्या आज्यं जुषाणा वियन्तु केतः सकेतः सुकेत्स्ते नं आदित्या आज्यं जुषाणा वियन्तु विवंस्वाः अदितिर्देवंज्तिस्ते नं आदित्या आज्यं जुषाणा वियन्तु विवंस्वाः अदितर्देवंज्तिस्ते नं आदित्या आज्यं जुषाणा वियन्तु विवंस्वाः अदितर्देवंज्तिस्ते नं आदित्या आज्यं जुषाणा वियन्तु विवंस्वाः अदितर्देवंज्तिस्ते नं आदित्या आज्यं जुषाणा वियन्तु।

॥दुर्गा सूक्तम्॥

(तैत्तिरीयारण्यकम्/प्रपाठकः – १०/अनुवाकः – २)

जातवेदसे सुनवाम् सोमं मरातीयतो निदंहाति वेदः। स नः पर्षदितं दुर्गाणि विश्वां नावेव सिन्धंं दुरिताऽत्यग्निः॥१॥

तामुग्निवंणां तपंसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं केर्मफुलेषु जुष्टाम्। दुर्गां देवी १ शरंणमहं प्रपंद्ये सुतरंसि तरसे नमंः॥२॥

अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान्थ्स्वस्तिभिरतिं दुर्गाणि विश्वां। पूर्श्व पृथ्वी बंहुला नं उुर्वी भवां तोकाय तनयाय शं योः॥३॥

विश्वांनि नो दुर्गहां जातवेदः सिन्धुं न नावा दुंरिताऽतिंपर्षि। अग्नें अत्रिवन्मनंसा गृणानौंऽस्माकं बोध्यविता तुनूनांम्॥४॥

पृत्ना जित् सहंमानमुग्रम् ग्निश्हे हेवेम पर्माथ्स्थस्थांत्। स नंः पर्षदितं दुर्गाणि विश्वा क्षामंद्देवो अतिं दुरितात्यग्निः॥५॥

प्रत्नोषिं कुमीड्यों अध्वरेषुं सुनाच् होता नव्यंश्च सिथ्सि। स्वाश्चांग्ने तनुवंं पिप्रयंस्वास्मभ्यं च सौभंगमायंजस्व॥६॥

गोभिर्जुष्टमयुजो निषिक्तं तवेन्द्र विष्णोरनुसश्चरिम। नाकस्य पृष्ठमभि संवसानो वैष्णवीं लोक इह मादयन्ताम्॥७॥

कात्यायनायं विदाहं कन्यकुमारिं धीमहि। तन्नों दुर्गिः प्रचोदयांत्॥

॥श्रीसूक्तम्॥

हिरंण्यवर्णां हरिंणीं सुवर्णरंजतस्त्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मंयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म् आवंह॥१॥

तां म् आवंह् जातंवेदो लुक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरंण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानुहम्॥२॥

अश्वपूर्वां रंथम्ध्यां हस्तिनांदप्रबोधिनीम्। श्रियंं देवीमुपंह्वये श्रीर्मादेवीर्जुषताम्॥३॥

कां सोऽस्मितां हिरंण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलंन्तीं तृप्तां तुर्पयंन्तीम्। पुद्मे स्थितां पुद्मवंणां तामिहोपंह्वये श्रियम्॥४॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलंन्तीं श्रियं लोके देवजुंष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं शर्रणमहं प्रपंद्येऽलक्ष्मीमें नश्यतां त्वां वृणे॥५॥

आदित्यवंर्णे तप्सोऽधिजातो वनस्पतिस्तवं वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुंदन्तु मायान्तरायाश्चं बाह्या अलक्ष्मीः॥६॥

उपैतु मां देवस्खः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥७॥ क्षुत्पिपासामेलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नांशयाम्यहम्। अभूति-मसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥८॥

गुन्धद्वारां दुंराधर्षां नित्यपृंष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥९॥

मनंसः काम्माकूतिं वाचः स्त्यमंशीमहि। पृश्नां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥१०॥

कुर्दमेन प्रजाभूता मृथि सम्भेव कुर्दम। श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥११॥

आपंः सृजन्तुं स्निग्धानि चिक्कीत वंस मे गृहे। नि चं देवीं मातर्ं श्रियंं वासयं मे कुले॥१२॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मेयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म् आवंह॥१३॥

आर्द्रां यः करिणीं यृष्टिं पिङ्गुलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातेवेदो म् आवेह॥१४॥

तां म् आवंह् जातंवेदो लुक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावों दास्योऽश्वांन् विन्देयं पुरुषानहम्॥१५॥ महादेखे चं विद्यहें विष्णपत्ये चं धीमहि। तन्नों लक्ष्मीः

मृहादेव्यै चं विद्महें विष्णुपृत्यै चं धीमहि। तन्नों लक्ष्मीः प्रचोदयात्॥१६॥

॥ मेधासूक्तम्॥

(तैत्तिरीयारण्यकम्/प्रपाठकः – १०/अनुवाकः – ४१-४४)

मेधादेवी जुषमाणा न आगाँद्विश्वाची भुद्रा सुमन्स्यमाना। त्वया जुष्टां नुदमाना दुरुक्तांन् बृहद्वंदेम विदथें सुवीराः। त्वया जुष्टं ऋषिभंवति देवि त्वया ब्रह्मांऽऽगतश्रीरुत त्वयां। त्वया जुष्टंश्चित्रं विंन्दते वस् सानों जुषस्व द्रविंणो न मेधे॥ मेधां म इन्द्रों ददातु मेधां देवी सर्रस्वती। मेधां में अश्विनांवुभावार्धत्तां पुष्कंरस्रजा। अफ्सरासुं च या मेधा गंन्धर्वेषुं च यन्मनंः। दैवीं मेधा सरस्वती सा मां मेधा सुरभिर्जुषता इ स्वाहाँ॥ आ मां मेधा सुरभिर्विश्वरूपा हिरंण्यवर्णा जगंती जगुम्या। ऊर्जस्वती पर्यसा पिन्वंमाना सा मां मेधा सुप्रतींका जुषन्ताम्। मियं मेधां मियं प्रजां मय्यग्निस्तेजों दधातु मियं मेधां मियं प्रजां मयीन्द्रं इन्द्रियं दंधातु मियं मेधां मियं प्रजां मिय सूर्यो भ्राजों दधातु।

॥ रुद्रसूक्तम्॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डम् - ४ / प्रपाठकः - ५ / अनुवाकः - १० / पश्चादयः – २४)

परि णो रुद्रस्यं हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्यं दुर्मतिरंघायोः। अवं स्थिरा मुघवंद्र्यस्तनुष्व मीढ्वंस्तोकाय तनयाय मृडय।

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डम् - ४ / प्रपाठकः - ५ / अनुवाकः - १० / पश्चादयः – २३–२४)

स्तुहि श्रुतं गेर्त्सदं युवनिं मृगं न भीमम्पह्लुमुग्रम्। मृडा जीर्त्रे रुद्र स्तर्वानी अन्यं ते अस्मन्नि वेपन्तु सेनाः।

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डम् - ४ / प्रपाठकः - ५ / अनुवाकः - १० / पश्चादयः – २४–२५)

मीढुंष्टम् शिवंतम शिवो नंः सुमनां भव। प्रमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान् आ चेर् पिनांकं बिभ्रदा गंहि।

(तैत्तिरीयारण्यके प्रपाठकः - ४ / अनुवाकः - ५ / पश्चादयः - १८)

अर्हंन्बिभर्षि सायंकानि धन्वं। अर्हं निष्कं यंजतं विश्वरूपम्। अर्हं निदन्दंयसे विश्वमन्भंवम्। न वा ओजीयो रुद्र त्वदंस्ति।

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डम् - १ / प्रपाठकः - ३ / अनुवाकः - १४ / पश्चादयः – २४)

त्वमंग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस्त्व शर्धो मार्रुतं पृक्ष ईशिषे। त्वं वातैररुणैर्यासि शङ्गयस्त्वं पूषा विधृतः पांसि नु त्मनां॥ आ वो राजानमध्वरस्यं रुद्र होतांर सत्ययज्ञ र रोदंस्योः। अग्निं पुरा तनिय्वोर्चित्ताद्धिरंण्यरूप्मवंसे कृणुध्वम्॥

॥ वरुणसूक्तम्॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डम् - १ / प्रपाठकः - ५ / अनुवाकः - ११ / पश्चादयः – ४९-५०)

उदुंत्तमं वेरुण् पार्शमस्मदवाधमं वि मध्यमः श्रेथाय। अर्था वयमादित्यव्रते तवानांगसो अदितये स्याम॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डम् - १ / प्रपाठकः - २ / अनुवाकः - ८ / पश्चादयः – १५)

अस्तंभ्राद्यामृष्भो अन्तरिक्षमिमीत वरिमाणं पृथिव्या। आसीद्द्विश्वा भुवनानि सम्राड्विश्वेत्तानि वर्रुणस्य व्रतानि।

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डम् - ३ / प्रपाठकः - ४ / अनुवाकः - ११ / पश्चादयः – ४६)

यत्किं चेदं वंरुण दैव्ये जनेंऽभिद्रोहं मंनुष्यांश्वरांमसि। अचित्ती यत्तव धर्मा ययोपिम मा नस्तस्मादेनंसो देव रीरिषः। कित्वासो यद्विरिपुर्न दीवि यद्वां घा सृत्यमुत यन्न विद्य। सर्वा ता वि ष्यं शिथिरेवं देवाथां ते स्याम वरुण प्रियासंः॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डम् - १ / प्रपाठकः - ५ / अनुवाकः - ११ / पश्चादयः – ४९-५०)

अवं ते हेडों वरुण नमोभिरवं यज्ञेभिरीमहे ह्विर्भिः। क्षयंत्रुस्मभ्यंमसुर प्रचेतो राज्नन्नेनार्श्स शिश्रथः कृतानि॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डम् - २ / प्रपाठकः - १ / अनुवाकः - ११ / पश्चादयः – ६५)

तत्त्वां यामि ब्रह्मणा वन्दंमान्स्तदाऽऽशांस्ते यजंमानो ह्विर्भिः। अहेंडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुंशश्स् मा न् आयुः प्रमोषीः॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ ब्रह्मसूक्तम्॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकम् - २ / प्रपाठकः - ८ / अनुवाकः - ८ / पश्चादयः - ६६–६९)

ब्रह्मं जज्ञानं प्रंथमं पुरस्तात्। वि सीमृतः सुरुचों वेन आंवः। स बुध्नियां उप मा अंस्य विष्ठाः॥६६॥

स्तश्च योनिमसंतश्च विवंः। पिता विराजांमृष्भो रंयीणाम्। अन्तरिक्षं विश्वरूप् आविवेश। तमकैर्भ्यंचिन्त वृथ्सम्। ब्रह्म सन्तं ब्रह्मणा वर्धयन्तः। ब्रह्मं देवानंजनयत्। ब्रह्म विश्वमिदं जगत्। ब्रह्मणः क्षत्रं निर्मितम्। ब्रह्मं ब्राह्मण आत्मना। अन्तर्रस्मित्रिमे लोकाः॥६७॥

अन्तर्विश्वमिदं जगंत्। ब्रह्मैव भूतानां ज्येष्ठम्। तेन कोऽर्हित स्पर्धितुम्। ब्रह्मेन्देवास्त्रयंस्त्रि॰शत्। ब्रह्मेन्द्रप्रजापती। ब्रह्मेन् हु विश्वां भूतानिं। नावीवान्तः समाहिता। चतंस्र आशाः प्रचरन्त्वग्नयः। इमं नो यज्ञं नयतु प्रजानन्। घृतं पिन्वंन्नजरं सुवीरम्॥६८॥

ब्रह्मं समिद्धंवत्याहुंतीनाम्।

॥भाग्यसूक्तम्॥

(तैत्तिरीय ब्राह्मणम् अष्टकम् – ३/प्रश्नः – ८/अनुवाकम् – ९)

प्रातर्भिं प्रातिरन्द्र हवामहे प्रातिम्त्रा वर्रुणा प्रातर्श्विनौ। प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्र हुवेम॥१॥

प्रातर्जितं भगंमुग्र ह्वेम वयं पुत्रमदितेयी विंधर्ता। आर्प्रश्चिद्यं मन्यंमानस्तुरश्चिद्राजां चिद्यं भगं भक्षीत्याहं॥२॥ भग प्रणेतर्भग सत्यंराधो भगेमां धियमुदंव ददंन्नः। भग प्र णो जनय गोभिरश्वेर्भग प्र नृभिनृवन्तः स्याम॥३॥ उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्। उतोदिता मघवन्थ्सूर्यस्य वयं देवाना र सुमतौ स्याम॥४॥ भर्ग एव भर्गवा । अस्तु देवास्तेनं वयं भर्गवन्तः स्याम। तं त्वां भग सर्व इज्जोहवीमि स नो भग पुर एता भेवेह॥५॥ समध्वरायोषसोऽनमन्त दधिक्रावेव श्चंये पदायं। अर्वाचीनं वंसुविदं भगंं नो रथंमिवाश्वांवाजिन आवंहन्तु॥६॥ अश्वांवतीर्गोमंतीर्न उषासों वीरवंतीः सदंमुच्छन्तु भुद्राः। घृतं दुर्हाना विश्वतः प्रपीना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥७॥

यो माँ ऽग्ने भागिन १ सन्तमथां भागं चिकींर्षति। अभागमंग्ने तं कुंरु मामंग्ने भागिनं कुरु॥८॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकम् - १ / प्रपाठकः - ४ / अनुवाकः - ८)

॥ पवमानसूक्तम्॥

ॐ तच्छुं योरावृंणीमहे। गातुं यज्ञायं। गातुं यज्ञपंतये। दैवीं स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नों अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

द्धिकाव्णों अकारिषम्। जिष्णोरश्वंस्य वाजिनंः। सुर्भिनो मुखांकरत्। प्रण आयूर्ंषि तारिषत्।

आपो हि ष्ठा मंयो भुवस्ता नं ऊर्जे दंधातन। महेरणांय चक्षंसे। यो वंः शिवतंमो रसस्तस्यं भाजयतेह नंः। उशतीरिव मातरंः। तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। आपो जनयंथा च नः॥

हिरंण्यवर्णाः शुचंयः पावका यासुं जातः कृश्यपो यास्विन्द्रंः। अग्निं या गर्भं दिधेरे विरूपास्ता न आपः शङ् स्योना भवन्तु॥

यासार् राजा वर्रणो याति मध्ये सत्यानृते अंवपश्यं जनानाम्। मधुश्चतः शुचयो याः पावकास्ता न आपः शङ् स्योना भवन्तु॥

यासाँ देवा दिवि कृण्वन्ति भृक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति। याः पृथिवीं पर्यसोन्दन्ति शुक्रास्ता न आपः शङ् स्योना भवन्तु॥

शिवेन मा चक्षुंषा पश्यताऽऽपः शिवयां तनुवोपं स्पृशत त्वचं मे। सर्वारं अग्नीर रंफ्सुषदों हुवे वो मिय वर्चो बलुमोजो नि धंत्त॥

पवंमानः सुवर्जनः। प्वित्रंण विचंर्षणिः। यः पोता स

पुंनातु मा। पुनन्तुं मा देवजुनाः। पुनन्तु मनवो धिया। पुनन्तु विश्वं आयवंः। जातंवेदः प्वित्रंवत्। प्वित्रंण पुनाहि मा। शुक्रेणं देवदीद्यंत्। अग्ने कत्वा कतूर् रन्। यत्ते पवित्रमर्चिषि। अग्ने वितंतमन्तरा। ब्रह्म तेनं पुनीमहे। उभाभ्यां देवसवितः। पवित्रंण सवेनं च। इदं ब्रह्मं पुनीमहे। वैश्वदेवी पुनती देव्यागात। यस्यै बह्वीस्तुनुवो वीतपृष्ठाः। तया मदंन्तः सधमाद्येषु। वयः स्यांम पतंयो रयीणाम्। वैश्वानरो रश्मिर्भिर्मा पुनातु। वार्तः प्राणेनेषिरो मंयो भूः। द्यावापृथिवी पर्यसा पर्योभिः। ऋतावरी यज्ञिये मा पुनीताम्। बृहद्भिः सवितस्तृभिः। वर्षिष्ठैर्देवमन्मंभिः। अग्ने दक्षैः पुनाहि मा। येनं देवा अपुनत। येनाऽऽपो दिव्यं कर्शः। तेनं दिव्येन ब्रह्मणा। इदं ब्रह्मं पुनीमहे। यः पांवमानीरध्येतिं। ऋषिभिः सम्भृत् रसम्। सर्वर् स पूतमंश्ञाति। स्वदितं मांतरिश्वंना। पावमानीयों अध्येतिं। ऋषिंभिः सम्भृति । रसम्। तस्मै सरस्वती दुहै। क्षीर सर्पिर्मधूंदकम्॥ पावमानीः स्वस्त्ययंनीः। सुदुघाहि पयंस्वतीः। ऋषिभिः सम्भृतो रसंः। ब्राह्मणेष्वमृत १ हितम्। पावमानीर्दिशन्तु नः। इमं लोकमथो अमुम्। कामान्थ्समंधयन्तु नः। देवीर्देवैः समार्भृताः। पावमानीः स्वस्त्ययंनीः। सुदुघाहि घृतश्चर्तः। ऋषिभिः सम्भृतो रसः। ब्राह्मणेष्वमृत रे हितम्। येन देवाः पवित्रेण। आत्मानं पुनते सदाँ। तेनं सहस्रंधारेण।

पावमान्यः पुंनन्तु मा। प्राजापत्यं प्वित्रम्। श्रतोद्यांम श्र हिर्ण्मयम्। तेनं ब्रह्म विदों व्यम्। पूतं ब्रह्मं पुनीमहे। इन्द्रंः सुनीती सह मां पुनातु। सोमः स्वस्त्या वर्रुणः सुमीच्या। यमो राजां प्रमृणाभिः पुनातु मा। जातवेदा मोर्जयंन्त्या पुनातु। भूर्भवः सुवेः।

ॐ तच्छुं योरावृंणीमहे। गातुं युज्ञायं। गातुं युज्ञपंतये। दैवीं स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ आयुष्यसूक्तम्॥

यो ब्रह्मा ब्रह्मण उंज्ञहार प्राणैः शिरः कृत्तिवासाः पिनाकी। ईशानो देवः स न आयुर्दधातु तस्मै जुहोमि हिवषां घृतेन॥१॥

विभ्राजमानः सरिरस्य मध्याद्रोचमानो घर्मरुचिर्य आगात्। स मृत्युपाशानपनुंद्य घोरानिहायुषेणो घृतमंत्तु देवः॥२॥

ब्रह्मज्योतिर्ब्रह्मपत्नींषु गुर्भं युमाद्धात् पुरुरूपं जयन्तम्। सुवर्णरम्भग्रहमंकमुर्च्यं तुमायुषे वर्धयामो घृतेन॥३॥

श्रियं लक्ष्मीमौबलामंम्बिकां गां षष्ठीं च यामिन्द्रसेनेंत्युदाहुः। तां विद्यां ब्रह्मयोनिर्ं सरूपामिहायुषे तर्पयामों घृतेन॥४॥ दाक्षायण्यः सर्वयोन्यः स योन्यः सहस्रशो विश्वरूपां विरूपाः। ससूनवः सपतयः सयूथ्या आयुषेणो घृतमिदं जुषन्ताम्॥५॥

दिव्या गणा बहुरूपाँः पुराणा आयुश्छिदो नः प्रमध्नंन्तु वीरान्। तेभ्यो जुहोमि बहुधां घृतेन मा नः प्रजा॰ रीरिषो मौत वीरान्॥६॥

एकः पुरस्ताद्य इदं बभूव यतो बभूव भुवनंस्य गोपाः। यमप्येति भुवनः साम्पराये स नो हविर्घृतमिहायुषेत्त देवः॥७॥

वसून् रुद्रांनादित्यान् मरुतों ऽथ साध्यान् ऋंभून् यक्षान् गन्धर्वा इश्च पितृ ईश्च विश्वान्। भृगून् सर्पा इश्चाङ्गिरसों ऽथ सर्वान् घृत् हुत्वा स्वायुष्या महयांम शृश्वत्॥८॥

विष्णो त्वं नो अन्तेमः शर्म यच्छ सहन्त्य। प्रतेधारां मधुश्चत उथ्सं दुहते अक्षितम्॥९॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



आयुंष्टे विश्वतों दधद्यम्ग्निवंरैंण्यः। पुनंस्ते प्राण आयंति परा यक्ष्मर्रं सुवामि ते। आयुर्दा अंग्ने ह्विषों जुषाणो घृतप्रंतीको घृतयोनिरेधि। घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पितेवं पुत्रम्भिरंक्षतादिमम्।

॥ नवग्रहसूक्तम्॥

आ स्त्येन रजंसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिर्ण्ययेन सविता रथेनाऽदेवो यांति भुवंना विपश्यन्। अग्निं दूतं वृंणीमहे होतांरं विश्ववंदसम्। अस्य यज्ञस्यं सुऋतुम्॥ येषामीशे पशुपतिः पशूनां चतुंष्पदामुत चं द्विपदांम्। निष्क्रींतोऽयं यज्ञियं भागमेतु रायस्पोषा यजंमानस्य सन्तु॥ अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सहिताय आदित्याय नमः॥१॥

अग्निर्मूर्धा दिवः क्कुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार रेतारंसि जिन्वति। स्योना पृथिवि भवांऽनृक्षरा निवेशंनी। यच्छांनः शर्म सप्रथाः। क्षेत्रंस्य पतिना वयर हिते नेव जयामसि। गामर्श्वं पोषिय्वा स नो मृडाती्दशे॥ अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सहिताय अङ्गारकाय नमः॥२॥

प्र वंः शुक्रायं भानवं भरध्व ह्व्यं मृतिं चाग्नये सुपूतम्॥ यो दैव्यांनि मानुषा जनू इष्यन्तर्विश्वांनि विद्यना जिगांति॥ इन्द्राणीमासु नारिषु सुपत्नीमहमंश्रवम्। न ह्यंस्या अप्रं चन जरसा मरंते पतिः॥ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवांमहे जनेंभ्यः। अस्माकंमस्तु केवंलः॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय शुक्राय नमः॥३॥

आप्यांयस्व समेतु ते विश्वतः सोम् वृष्णियम्। भवा वार्जस्य सङ्गथे॥ अपसु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वांनि भेषजा। अग्निं चं विश्वशंम्भुवमापश्च विश्वभंषजीः। गौरी मिमाय सिल्लानि तक्षंती। एकंपदी द्विपदी सा चतुंष्पदी। अष्टापंदी नवंपदी बभूवुषीं। सहस्राक्षरा पर्मे व्योमन्। अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सिहताय सोमाय नमः॥४॥

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृह्येनिष्टापूर्ते स॰ सृंजेथाम्यं चं। पुनंः कृण्व॰ स्त्वां पितर् युवांनम्न्वाता॰ सीत्विय तन्तुंमेतम्॥ इदं विष्णुर्विचंक्रमे त्रेधा निदंधे पदम्। समूंढमस्यपा॰ सुरे॥ विष्णों र्राटंमिस् विष्णोंः पृष्ठमंसि विष्णोः श्रत्रेंस्थो विष्णोः स्यूरंसि विष्णों ध्रुवमंसि वैष्णवमंसि विष्णवे त्वा। अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सहिताय बुधाय नमः॥५॥

बृहंस्पते अतियद्यों अहींद्विमद्विभाति ऋतुंम् अनेषु। यद्दीदयच्छवंसर्तप्रजात तद्स्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ इन्द्रंमरुत्व इह पांहि सोमं यथां शार्याते अपिंबः सुतस्यं। तव प्रणीती तवं शूर्शम्त्राविंवासन्ति क्वयः सुयज्ञाः॥ ब्रह्मंजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसींमृतः सुरुचों वेन आंवः। सबुधियां उपमा अस्य विष्ठाः सृतश्च योनिमसंतश्च विवंः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय बृहस्पतये नमः॥६॥

शं नों देवीरिभिष्टंय आपों भवन्तु पीतयें। शंयोरिभस्रंवन्तु नः॥ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वां जातानि परिता बंभूव। यत्कांमास्ते जुहुमस्तन्नों अस्तु व्यक्ष स्याम् पत्यो रयीणाम्। इमं यंमप्रस्त्रमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः। आत्वा मन्नाः कविश्कास्ता वहन्त्वेना राजन् हविषां मादयस्व॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय शनैश्चराय नमः॥७॥

कयां नश्चित्र आभुंवदूती स्दावृंधः सखाँ। कया शचिष्ठया वृता। आऽयङ्गोः पृश्लिरक्रमीदसंनन्मातरं पुनः। पितरं च प्रयन्थ्सुवंः। यत्ते देवी निर्ऋतिराब्बन्ध दामं ग्रीवास्वंविचर्त्यम्। इदं ते तद्विष्याम्यायुंषो न मध्यादथांजीवः पितुमंद्धि प्रमुंक्तः॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय राहवे नमः॥८॥

केतुं कृण्वन्नेकेतवे पेशों मर्या अपेशसें। समुषद्भिरजायथाः॥ ब्रह्मा देवानां पद्वीः कंवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणांम्। श्येनो गृध्राणा् स्विधितिर्वनानाः सोमः प्वित्रमत्येति रेभन्। (ऋक्) सचित्र चित्रं चितयन् तमस्मे चित्रंक्षत्र चित्रतमं वयोधाम्। चन्द्रं र्यिं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्रंचन्द्राभिर्गृण्ते युंवस्व॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय केतवे नमः॥९॥ ॥ॐ आदित्यादि नवग्रहदेवंताभ्यो नमो नर्मः॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ नक्षत्रसूक्तम् ॥

(तैत्तिरीय ब्राह्मणे अष्टकम् - ३/प्रश्नः - १)

अग्निर्नः पातु कृत्तिंकाः। नक्षत्रं देविमिन्द्रियम्। इदमासां विचक्षणम्। ह्विरासं जुंहोतन। यस्य भान्ति रश्मयो यस्यं कृतविः। यस्येमा विश्वा भुवनानि सर्वाः। स कृत्तिंकाभि-रभिसंवसानः। अग्निर्नो देवः सुंविते देधातु॥१॥

प्रजापंते रोहिणी वेतु पत्नीं। विश्वरूपा बृह्ती चित्रभांनुः। सा नों यज्ञस्यं सुविते दंधातु। यथा जीवेम श्ररदः सवीराः। रोहिणी देव्युदंगात्पुरस्तात्। विश्वां रूपाणिं प्रतिमोदंमाना। प्रजापंति हिवषां वर्धयंन्ती। प्रिया देवानामुपंयातु यज्ञम्॥२॥

सोमो राजां मृगशीर्षेण आगन्। शिवं नक्षेत्रं प्रियमंस्य धामं। आप्यायमानो बहुधा जनेषु। रेतः प्रजां यजमाने दधातु। यत्ते नक्षेत्रं मृगशीर्षमस्ति। प्रिय॰ राजन् प्रियतमं प्रियाणाम्। तस्मै ते सोम ह्विषां विधेम। शं नं एधि द्विपदे शं चतुष्पदे॥३॥

आर्द्रयां रुद्रः प्रथंमा न एति। श्रेष्ठों देवानां पतिंरघ्नियानांम्। नक्षंत्रमस्य ह्विषां विधेम। मा नः प्रजा॰ रीरिष्नमोत वीरान्। हेती रुद्रस्य परिं णो वृणक्तु। आर्द्रा नक्षंत्रं जुषता॰ ह्विर्नः। प्रमुश्रमांनौ दुरितानि विश्वां। अपाघश थ

सन्नुदतामरांतिम्॥४॥

पुनर्नो देव्यदितिः स्पृणोतु। पुनर्वसू नः पुन्रतौ यज्ञम्। पुनर्नो देवा अभियन्तु सर्वै। पुनः पुनर्वो ह्विषां यजामः। एवा न देव्यदितिरन्वा। विश्वस्य भूत्री जगतः प्रतिष्ठा। पुनर्वसू ह्विषां वर्धयन्ती। प्रियं देवानामप्येतु पार्थः॥५॥

बृह्स्पतिः प्रथमं जायंमानः। तिष्यं नक्षंत्रम्भि सम्बंभूव। श्रेष्ठां देवानां पृतंनासु जिष्णुः। दिशोऽनु सर्वा अभयं नो अस्तु। तिष्यः पुरस्तांदुत मध्यतो नः। बृह्स्पतिर्नः परि पातु पश्चात्। बाधेतां द्वेषो अभयं कृणुताम्। सुवीर्यस्य पत्यः स्याम॥६॥

इद सर्पेभ्यों ह्विरंस्तु जुष्टम्ं। आश्रेषा येषांमनुयन्ति चेतः। ये अन्तरिक्षं पृथिवीं क्षियन्ति। ते नः सूर्पासो हवमागंमिष्ठाः। ये रोंचने सूर्यस्यापिं सूर्पाः। ये दिवंं देवीमनुं स्अरंन्ति। येषांमाश्रेषा अनुयन्ति कामम्ं। तेभ्यः सूर्पेभ्यो मधुंमज्जहोमि॥७॥

उपहूताः पितरो ये मघासुं। मनोजवसः सुकृतः सुकृत्याः। ते नो नक्षेत्रे हवमागंमिष्ठाः। स्वधाभिर्यज्ञं प्रयंतं जुषन्ताम्। ये अग्निद्ग्धा येऽनंग्निदग्धाः। येऽमुं लोकं पितरः क्षियन्ति। याङ्श्चं विद्म यार उं च न प्रविद्म। मघासुं युज्ञर सुकृतं जुषन्ताम्॥८॥ गवां पितः फल्गुंनीनामिस् त्वम्। तदेर्यमन्वरुणिमत्र् चारुं। तं त्वां वय र संनितार रे सनीनाम्। जीवा जीवंन्तमुप् संविशेम। येनेमा विश्वा भुवंनािन सिक्षता। यस्यं देवा अनु सं यन्ति चेतंः। अर्यमा राजाऽजर्स्तुविष्मान्। फल्गुंनीनामृषभो रोरवीति॥९॥

श्रेष्ठों देवानां भगवो भगासि। तत्त्वां विदुः फल्गुंनीस्तस्यं वित्तात्। अस्मभ्यं क्षुत्रमृजर्रं सुवीर्यम्। गोमृदर्श्ववृदुप् सन्नुंदेह। भगों ह दाता भग इत्प्रंदाता। भगों देवीः फल्गुंनीरा विवेश। भगस्येत्तं प्रंस्वं गंमेम। यत्रं देवैः संधमादं मदेम॥१०॥

आयांतु देवः संवितोपंयातु। हिर्ण्ययंन सुवृता रथेन। वह्न् हस्तर् सुभगं विद्यनापंसम्। प्रयच्छंन्तं पपुंरिं पुण्यमच्छं। हस्तः प्रयंच्छत्वमृतं वसीयः। दक्षिणेन् प्रतिगृभ्णीम एनत्। दातारंमुद्य संविता विदेय। यो नो हस्तांय प्रसुवातिं युज्ञम्॥११॥

त्वष्टा नक्षंत्रम्भ्यंति चित्राम्। सुभः संसं युव्तिः रोचंमानाम्। निवेशयंत्रमृतान्मर्त्याः श्रीः रूपाणि पिःशन् भुवंनानि विश्वाः। तत्रस्त्वष्टा तदुं चित्रा विचंष्टाम्। तत्रक्षंत्रं भूरिदा अंस्तु मह्मम्। तत्रः प्रजां वीरवंतीः सनोतु। गोभिनीं अश्वैः समंनक्त युज्ञम्॥१२॥ वायुर्नक्षंत्रम्भ्यंति निष्ठ्याम्। तिग्मश्रंङ्गो वृष्भो रोरुवाणः। समीरयन् भवना मात्रिश्वां। अप द्वेषा रेसि नुदतामरातीः। तन्नो वायुस्तदु निष्ठ्यां शृणोतु। तन्नक्षंत्रं भूरिदा अस्तु मह्मम्। तन्नो देवासो अनुजानन्तु कामम्। यथा तरेम दुरितानि विश्वां॥१३॥

दूरम्समच्छत्रंवो यन्तु भीताः। तदिन्द्राग्नी कृणुतां तद्विशांखे। तन्नों देवा अनुंमदन्तु यज्ञम्। पृश्चात् पुरस्तादभंयं नो अस्तु। नक्षंत्राणामधिपत्नी विशांखे। श्रेष्ठांविन्द्राग्नी भुवंनस्य गोपौ। विष्चः शत्रूंनप् बाधंमानौ। अप क्षुधं नुदतामरांतिम्॥१४॥

पूर्णा पृश्चादुत पूर्णा पुरस्तांत्। उन्मध्यतः पौर्णमासी जिंगाय। तस्यां देवा अधि संवसंन्तः। उत्तमे नाकं इह मादयन्ताम्। पृथ्वी सुवर्चा युवतिः सजोषाः। पौर्णमास्यदंगाच्छोभंमाना। आप्याययंन्ती दुरितानि विश्वां। उरुं दुहां यजमानाय युज्ञम्॥१५॥

ऋष्ट्यास्मं हुव्यैर्नमंसोपसद्यं। मित्रं देवं मित्रधेयं नो अस्तु। अनूराधान् ह्विषां वर्धयंन्तः। शृतं जीवेम श्ररदः सवीराः। चित्रं नक्षत्रमुदंगात्पुरस्तात्। अनूराधास् इति यद्वदंन्ति। तन्मित्र एति पृथिभिर्देवयानैः। हिरुण्ययैर्वितंतैरुन्तिरक्षे॥१६॥

इन्द्रौ ज्येष्ठामन् नक्षंत्रमेति। यस्मिन्वृत्रं वृंत्रतूर्ये तुतारं।

तस्मिन्वयम्मृतं दुहांनाः। क्षुधं तरेम् दुरितिं दुरिष्टिम्। पुर्न्दरायं वृष्भायं धृष्णवें। अषांढाय सहंमानाय मीढुषें। इन्द्राय ज्येष्ठा मधुमृदुहांना। उरुं कृणोतु यजंमानाय लोकम्॥१७॥

मूलं प्रजां वीरवंतीं विदेय। पराँच्येतु निर्ऋतिः पराचा। गोभिर्नक्षंत्रं पृशुभिः समंक्तम्। अहंभूयाद्यजमानाय मह्यम्। अहंनी अद्य सुंविते दंधातु। मूलं नक्षंत्रमिति यद्वदंन्ति। परांचीं वाचा निर्ऋतिं नुदामि। शिवं प्रजाये शिवमंस्तु मह्यम्॥१८॥

या दिव्या आपः पर्यसा सम्बभूवः। या अन्तरिक्ष उत पार्थिवीर्याः। यासांमषाढा अनुयन्ति कामम्। ता न आपः शङ् स्योना भंवन्तु। याश्च कूप्या याश्चं नाद्याः समुद्रियाः। याश्चं वैशन्तीरुत प्रांस्चीर्याः। यासांमषाढा मधुं भृक्षयंन्ति। ता न आपः शङ् स्योना भंवन्तु॥१९॥

तन्नो विश्वे उपं शृण्वन्तु देवाः। तदंषाढा अभिसंयंन्तु यज्ञम्। तन्नक्षंत्रं प्रथतां पृशुभ्यः। कृषिर्वृष्टिर्यजंमानाय कल्पताम्। शुभ्राः कृन्यां युवृतयः सुपेशंसः। कृर्मकृतः सुकृतों वीर्यावतीः। विश्वान देवान् ह्विषां वर्धयंन्तीः। अषाढाः काममुपं यान्तु यज्ञम्॥२०॥

यस्मिन् ब्रह्माऽभ्यजंयथ्सर्वमेतत्। अमुं चं लोकमिदमूं च सर्वम्। तन्नो नक्षंत्रमभिजिद्विजित्यं। श्रियं दधात्वहंणीय- मानम्। उभौ लोकौ ब्रह्मणा सञ्जितेमौ। तन्नो नक्षत्रमभिजिद्विचेष्टाम्। तस्मिन्वयं पृतेनाः सञ्जयेम। तन्नो देवासो अनुजानन्तु कामम्॥२१॥

शृण्वन्तिं श्रोणाम्मृतंस्य गोपाम्। पुण्यांमस्या उपंश्वणोमि वाचम्। मृहीं देवीं विष्णुपत्नीमजूर्याम्। प्रतीचींमेनाः ह्विषां यजामः। त्रेधा विष्णुंरुरुगायो विचंक्रमे। मृहीं दिवं पृथिवीम्न्तिरक्षिम्। तच्छ्रोणैति श्रवं इच्छमाना। पुण्यः श्लोकं यजमानाय कृण्वती॥२२॥

अष्टौ देवा वसंवः सोम्यासंः। चतंस्रो देवीर्जराः श्रविष्ठाः। ते यज्ञं पान्तु रजंसः प्रस्तात्। संवथ्सरीणममृत हं स्वस्ति। यज्ञं नंः पान्तु वसंवः पुरस्तात्। दक्षिणतोऽभियंन्तु श्रविष्ठाः। पुण्यं नक्षंत्रम्भि संविशाम। मा नो अर्रातिरघश १ साऽगन्॥ २३॥

क्षत्रस्य राजा वर्रणोऽधिराजः। नक्षत्राणाः शतिभेष्वविसेष्ठः। तौ देवेभ्यः कृणतो दीर्घमायुः। शतः सहस्रां भेषजानिं धत्तः। यज्ञं नो राजा वर्रण उपयातु। तन्नो विश्वं अभि संयन्तु देवाः। तन्नो नक्षत्रः शतिभेषग्जुषाणम्। दीर्घमायुः प्रतिरद्धेषजानिं॥२४॥

अज एकंपादुदंगात्पुरस्तांत्। विश्वां भूतानिं प्रति मोदंमानः। तस्यं देवाः प्रंस्वं यंन्ति सर्वे। प्रोष्ठपदासो अमृतंस्य गोपाः। विभाजंमानः समिधान उग्रः। आऽन्तरिक्षमरुहृदगुन्द्याम्। तर सूर्यं देवम्जमेकंपादम्। प्रोष्ठपदासो अनुंयन्ति सर्वे॥२५॥

अहिं बुंध्रियः प्रथंमान एति। श्रेष्ठों देवानांमुत मानुंषाणाम्। तं ब्राँह्मणाः सोम्पाः सोम्यासंः। प्रोष्ठपदासों अभि रंक्षन्ति सर्वे। चत्वार एकंम्भि कर्म देवाः। प्रोष्ठपदास् इति यान् वदंन्ति। ते बुंध्रियं परिषद्य एकंम्नि सतुवन्तः। अहिर् रक्षन्ति नमंसोपसद्यं॥२६॥

पूषा रेवत्यन्वेति पन्थांम्। पुष्टिपतीं पशुपा वाजंबस्त्यौ। इमानि ह्व्या प्रयंता जुषाणा। सुगैर्नो यानैरुपंयातां यज्ञम्। क्षुद्रान् पशून् रक्षतु रेवतीं नः। गावों नो अश्वार् अन्वेतु पूषा। अत्रर् रक्षंन्तौ बहुधा विरूपम्। वाजर् सनुतां यजंमानाय यज्ञम्॥२७॥

तद्श्विनांवश्वयुजोपंयाताम्। शुभुङ्गमिष्ठौ सुयमेभिरश्वैः। स्वं नक्षंत्रः हृविषा यजन्तौ। मध्वा सम्पृक्तौ यजुंषा समक्तौ। यौ देवानां भिषजौ हव्यवाहौ। विश्वंस्य दूताव्मृतंस्य गोपौ। तौ नक्षंत्रं जुजुषाणोपंयाताम्। नमोऽश्विभ्यां कृणुमोऽश्वयुग्भ्यांम्॥२८॥

अपं पाप्मानं भरंणीर्भरन्तु। तद्यमो राजा भगंवान् विचेष्टाम्। लोकस्य राजां महतो महान् हि। सुगं नः पन्थामभेयं कृणोतु। यस्मिन्नक्षंत्रे यम एति राजां। यस्मिन्नेनम्भ्यिषिश्चन्त देवाः। तदस्य चित्र ह्विषां यजाम। अपं पाप्मानं भरंणीर्भरन्तु॥२९॥

निवेशनी सङ्गर्मनी वसूनां विश्वां रूपाणि वसून्यावेशयन्ती।
सहस्रपोष १ सुभगा रराणा सा न आगन्वर्चसा संविदाना॥
यत्ते देवा अद्धर्भाग्धेयममांवास्ये संवसन्तो महित्वा। सा
नो यज्ञं पिंपृहि विश्ववारे र्यिं नो धेहि सुभगे सुवीरम्॥३०॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



॥ गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत्॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामं देवाः। भद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजंत्राः। स्थिरेरङ्गैं स्तुष्टुवा १ संस्तुनूभिः। व्यशेम देविहेतं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववंदाः। स्वस्ति न्स्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृह्स्पतिंदिधातु॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वंमिस। त्वमेव केवलं कर्तांऽसि। त्वमेव केवलं धर्तांऽसि। त्वमेव केवलं हर्तांऽसि। त्वमेव सर्वं खिल्वदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मांऽसि नित्यम्॥१॥ ऋतं विचा। संत्यं विचा। २॥

अवं त्वं माम्। अवं वृक्तारम्ं। अवं श्रोतारम्ं। अवं दातारम्। अवं धातारम्। अवानूचानमंव शिष्यम्। अवं पश्चात्तात्। अवं पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अवं दक्षिणात्तात्। अवं चोर्ध्वात्तात्। अवाध्रात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहिं समन्तात्॥३॥

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सचिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मांसि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानंमयोऽसि॥४॥

सर्वं जगदिदं त्वत्त्वो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्त्वेस्तिष्ठ्रिति। सर्वं जगदिदं त्विय लयंमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वियं प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नुभः। त्वं चत्वारि वाक्परिमित्तां पदानि॥५॥

त्वं गुणत्रंयातीतः। त्वम् अवस्थात्रंयातीतः। त्वं देहत्रंयातीतः। त्वं कालत्रंयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रंयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायंन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः सुव्रोम्॥६॥

गुणादीं पूर्वमुचार्य वर्णादीं तद्नन्तरम्। अनुस्वारः पंरतुरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेण ऋद्धम्। एतत्तव मन्स्वरूपम्। गकारः पूँर्वरूपम्। अकारो मध्यंमरूपम्। अनुस्वारश्चाँन्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तंररूपम्। नादंः सन्धानम्। सर्हिता सन्धाः। सेषा गणेशिवव्द्या। गणंक ऋषिः। निचृद्गायंत्रीच्छुन्दः। श्रीमहागणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नमः॥७॥

पुकदन्तायं विद्यहें वऋतुण्डायं धीमहि।
तन्नों दन्ती प्रचोदयाँत्॥८॥
पुकदन्तं चंतुर्ह्स्तं पाशमंङ्कश्रधारिणम्।
रदं च वरंदं हुस्तैर्बिभ्राणं मूंषक्ष्वजम्॥
रक्तं लम्बोदंरं शूर्पकर्णकं रंक्तवाससम्।
रक्तंगन्धानंलिप्ताङ्गं रक्तपुष्यैः सुपूजितम्॥
भक्तांनुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युंतम्।
आविर्भूतं चं सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुंरुषात्परम्।
एवं ध्यायतिं यो नित्यं स योगी योगिनां वरंः॥९॥

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्ते अस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः॥१०॥

एतदथर्वशीर्षं योऽधीते। स ब्रह्मभूयायं कल्पते। स सर्वविष्नेर्नं बाध्यते। स सर्वतः सुर्खंमेधते। स पश्चमहापापात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाश्चयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाश्यति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भ्वति। सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति। धर्मार्थकाममोक्षं चं विन्द्ति। इदमथर्वशीर्षमशिष्यायं न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भ्वति। सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेनं साधयेत्॥११॥

अनेन गणपितमिभिषिश्चिति स वाग्मीं भवति। चतुर्थ्यामनश्नन् जपित स विद्यांवान् भवति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्यावरणं विद्यान्न बिभेति कदांचनेति॥१२॥

यो दूर्वाङ्कुरैर्यजिति स वैश्रवणोपंमो भ्वति। यो लाजैर्यजिति स यशोवान् भ्वति स मेधावान् भ्वति। यो मोदकसहस्रेण यजिति स वाञ्छितफलमंवाप्रोति। यः साज्यसमिद्धिर्यजिति स सर्वं लभते स सर्वं लभते॥१३॥

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्रांहयित्वा। सूर्यवर्चस्वीं भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जत्वा सिद्धमन्त्रों भवति। महाविद्यात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। महाप्रत्यवायात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति स सर्वविद्भवति। य एवं वेद। इत्युंपनिषंत्॥१४॥

सह नांववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनाऽवधीतमस्तु मा विद्विषावहैं॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ मृत्युञ्जयहोम-मन्त्राः॥

अपैतु मृत्युर्मृतंं न आगंन्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु। पूर्णं वनस्पतेरिवाभिनंः शीयता र र्यिः सर्चतां नः शचीपतिः॥१॥ परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते स्व इतरो देवयानात। चक्षुंष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजा रीरिषो मोत वीरान्॥२॥

वार्तं प्राणं मनसाऽन्वा रंभामहे प्रजापंतिं यो भुवंनस्य गोपाः। स नो मृत्योस्रायतां पात्वश्हंसो ज्योग्जीवा जुरामंशीमहि॥३॥

अमुत्र भ्यादध् यद्यमस्य बृहंस्पते अभिशंस्तेरम्ंश्रः। प्रत्यौहताम्श्विनां मृत्युमंस्माद्देवानांमग्ने भिषजा शचींभिः॥४॥ हरिष् हर्रन्तमन्यन्ति देवा विश्वस्येशानं वृष्भं मंतीनाम्। ब्रह्म सरूपमनुमेदमागादयनं मा विवंधीर्विक्रंमस्व॥५॥

शल्कैर्ग्निमिन्धान उभौ लोकौ संनेम्हम्। उभयौर्लोकयोर्-ऋध्वाऽति मृत्युं तराम्यहम्॥६॥

मा छिदो मृत्यो मा वेधीर्मा मे बलं विवृंहो मा प्रमोषीः। प्रजां मा में रीरिष आयुंरुग्र नृचक्षेसं त्वा ह्विषां विधेम॥७॥ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षेन्तमुत मा ने उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिषः॥८॥

मा नंस्तोके तनंये मा न आयंषि मा नो गोषु मा नो

अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितो वंधीर्ह्विष्मंन्तो नर्मसा विधेम ते॥९॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वां जातानि परिता बंभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयङ् स्याम् पर्तयो रयीणाम्॥१०॥

यतं इन्द्र भयांमहे ततों नो अभयं कृधि। मर्घवन्छुग्धि तव तन्नं ऊतये विद्विषो विमृधों जिह॥११॥

स्वस्तिदा विशस्पतिर्वृत्रहा विमृधों वृशी। वृषेन्द्रः पुर एंतु नः स्वस्तिदा अभयङ्करः॥१२॥

त्र्यंम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्॥१३॥

अपंमृत्युमपृक्षुधम्। अपेतः शुपर्थं जिहि। अधां नो अग्र आर्वह। रायस्पोषर्ं सहस्रिणम्॥१४॥

ये ते सहस्रंम्युतं पाशाः। मृत्यो मर्त्याय हन्तेवे। तान् यज्ञस्यं माययाः। सर्वानवयजामहे॥१५॥

जातवेदसे सुनवाम् सोमं मरातीयतो निदंहाति वेदः। स नः पर्षदितं दुर्गाणि विश्वां नावेव सिन्धुं दुरिताऽत्यग्निः॥१६॥

भूर्भुवः स्वः। ओजो बलम्। ब्रह्मं क्षुत्रम्। यशों महत्। सत्यं तपो नामं। रूपममृतम्। चक्षुः श्रोत्रम्। मन् आर्युः। विश्वं यशों महः। समं तपो हरो भाः। जातवेदा यदि वा पावकोऽसिं। वैश्वानरो यदि वा वैद्युतोऽसिं। शं प्रजाभ्यो यजंमानाय लोकम्। ऊर्जं पुष्टिं ददंद्भ्यावंवृथ्स्व॥१७॥
मृत्युर्नेश्यत्वायुंर्वर्धतां भूः॥१८॥
मृत्युर्नेश्यत्वायुंर्वर्धतां भुवंः॥१९॥
मृत्युर्नेश्यत्वायुंर्वर्धताः सुवंः॥२०॥
मृत्युर्नेश्यत्वायुंर्वर्धताः भूर्भुवः सुवंः॥२१॥ मृत्युर्नेश्यत्वायुंर्वर्धताम्॥
॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



(तैत्तिरीयारण्यकम् – ४/प्रपाठकः – ३/अनुवाकः – १५)

हिर् हर्रन्तमनुंयन्ति देवाः। विश्वस्येशांनं वृष्भं मंतीनाम्। ब्रह्म सर्रूपमनुंमेदमागांत्। अयंनुं मा विवधीर्विक्रंमस्व। मा छिदो मृत्यो मा वधीः। मा मे बलं विवृंहो मा प्रमोषीः। प्रजां मा में रीरिष आयुंरुग्र। नृचक्षंसं त्वा ह्विषां विधेम। सद्यश्चंकमानायं। प्रवेपानायं मृत्यवे॥१॥

प्रास्मा आशां अशृण्वन्। कामेनाजनयन्पुनः। कामेन मे काम् आगाँत्। हृदंयाद्भृदंयं मृत्योः। यदमीषांमदः प्रियम्। तदैतूपमाम्भि। परं मृत्यो अनु परेहि पन्थाँम्। यस्ते स्व इतंरो देवयानाँत्। चक्षुंष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि। मा नः प्रजाः रीरिषो मोत वीरान्। प्र पूर्वं मनसा वन्दंमानः। नाधंमानो वृष्मं चंर्षणीनाम्। यः प्रजानांमेक्राण्मानुंषीणाम्। मृत्यं यंजे प्रथम्जामृतस्यं॥२॥

॥ महान्यासः॥

॥पश्चाङ्गरद्रन्यासः रावणोक्ता पश्चाङ्गप्रार्थना-सहितम्॥
ओङ्कारमन्त्रसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं तस्मै नकाराय नमो नमः॥१॥
नमंस्ते रुद्र मृन्यवं उतो तु इषंवे नमः। नमंस्ते अस्तु
धन्वंने बाहुभ्यांमुत ते नमः॥ या तु इषुः शिवतंमा शिवं
बभूवं ते धनुः। शिवा शंर्व्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥

(EAST)

कं खं गं घं ङं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवर्ते रुद्राय। पूर्वाङ्गरुद्राय नमः।

महादेवं महात्मानं महापातकनाशनम्।
महापापहरं वन्दे मकाराय नमो नमः॥२॥
अपैतु मृत्युर्मृतंं न आगंन्वैवस्वतो नो अभंयं कृणोतु। पुर्णं वनस्पतेरिवाभिनः शीयता रियः स च तान्नः शचीपतिः।

(SOUTH)

चं छं जं झं ञं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। दक्षिणाङ्गरुद्राय नमः।

शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारणम्। शिवमेकं परं वन्दे शिकाराय नमो नमः॥३॥ ॐ। निधंनपतये नमः। निधंनपतान्तिकाय नमः। ऊर्ध्वाय नमः। ऊर्ध्वलिङ्गाय नमः। हिरण्याय नमः। हिरण्यलिङ्गाय नमः। सुवर्णाय नमः। सुवर्णलिङ्गाय नमः। दिव्याय नमः। दिव्यितिङ्गाय नमः। भवाय नमः। भवितिङ्गाय नमः। शर्वाय नमः। शर्वितिङ्गाय नमः। शिवाय नमः। शिवितिङ्गाय नमः। ज्वलिङ्गाय नमः। ज्वलिङ्गाय नमः। आत्माय नमः। आत्माय नमः। आत्मितिङ्गाय नमः। अर्थिङ्गाय नमः। परमितिङ्गाय नमः। एतथ्सोमस्यं सूर्यस्य सर्वितिङ्गः स्थाप्यिति पाणिमः पवित्रम्।

(WEST)

टं ठं डं ढं णं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवर्ते रुद्राय। पश्चिमाङ्गरुद्राय नमः।

वाहनं वृषभो यस्य वासुिकः कण्ठभूषणम्। वामे शक्तिधरं वन्दे वकाराय नमो नमः॥४॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अपसु य ओषंधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥

(NORTH)

तं थं दं धं नं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। उत्तराङ्गरुद्राय नमः।

यत्र कुत्र स्थितं देवं सर्वव्यापिनमीश्वरम्। यिष्ठङ्गं पूजयेन्नित्यं यकाराय नमो नमः॥५॥ प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनांप्यायस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंर्मे पाहि।

(UPWARDS)

पं फं बं भं मं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। ऊर्ध्वाङ्गरुद्राय नमः।



॥पश्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पश्चमुखप्रार्थना-सहितम्॥
तत्पुर्रुषाय विद्महे महादेवायं धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयाँत्॥
संवर्ताग्नि-तटित्प्रदीप्त-कनक-प्रस्पर्धि-तेजोरुणम्
गम्भीरध्वनि-सामवेदजनकं ताम्राधरं सुन्दरम्।
अर्धेन्दुद्युति-लोल-पिङ्गल-जटाभार-प्रबोद्धोदकम्
वन्दे सिद्धसुरासुरेन्द्रनमितं पूर्वं मुखं शूलिनः॥
ॐ नमो भगवते रुद्राय। पूर्वाङ्गमुखाय नमः। (EAST)

अघोरैंभ्योऽथ् घोरैभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ कालाभ्रभ्रमराञ्जन-द्युतिनिभं व्यावृत्तपिङ्गक्षणम् कर्णोद्धासित-भोगिमस्तकमणि-प्रोद्धिन्नदंष्ट्राङ्कुरम्। सर्पप्रोतकपाल-शुक्तिशकल-व्याकीर्णताशेखरम् वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य वदनं चाथर्वनादोदयम्॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। दक्षिणाङ्गमुखाय नमः। (SOUTH)

सुद्योजातं प्रपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भुवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भुवोद्भवाय नर्मः॥ प्रालेयाचलिमन्दुकुन्द-धवलं गोक्षीरफेनप्रभम् भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेहदहन-ज्वालावली-लोचनम् । विष्णु-ब्रह्म-मरुद्गणार्चितपदं ऋग्वेदनादोदयम् वन्देऽहं सकलं कलङ्करिहतं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम्॥ ॐ नमो भगवतें रुद्राय। पश्चिमाङ्गमुखाय नमः। (WEST)

वामदेवाय नमीं ज्येष्ठाय नमीः श्रेष्ठाय नमी रुद्राय नमः कालाय

नमः कलंबिकरणाय नमो बलंबिकरणाय नमो बलाय नमो बलंप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मृनोन्मनाय नमः॥

गौरं कुङ्कुमपङ्कितं सुतिलकं व्यापाण्डुमण्डस्थलम् भूविक्षेप-कटाक्षवीक्षण-लसत्-संसक्तकर्णोत्पलम्। स्निग्धं बिम्बफलाधरं प्रहसितं नीलालकालङ्कृतम् वन्दे याजुषवेदघोषजनकं वक्रं हरस्योत्तरम्॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। उत्तराङ्गमुखाय नमः। (NORTH)

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ व्यक्ताव्यक्तनिरूपितं च परमं षिट्नंशतत्त्वाधिकम् तस्मादुत्तर-तत्त्वमक्षरिमिति ध्येयं सदा योगिभिः। ओङ्कारादि समस्तमन्त्रजनकं सूक्ष्मातिसूक्ष्मं परम् वन्दे पश्चममीश्वरस्य वदनं खव्यापि तेजोमयम्॥ ॐ नमो भगवतें रुद्राय। ऊर्ध्वाङ्गमुखाय नमः। (UPWARDS)

॥केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः॥

या ते रुद्र शिवा तुनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तुनुवा शन्तंमया गिरिशन्ताभिचांकशीहि॥ शिखाये नमः॥ (TUFT)

अस्मिन् मंहृत्यंर्ण्वं ऽन्तरिक्षे भ्वा अधि। तेषा १ सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ शिरसे नमः॥ (TOP OF HEAD)

स्हस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याँम्। तेषा १ सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥ ललाटाय नमः॥ (FOREHEAD)

हुर्सः श्रुंचिषद्वसुंरन्तिरक्ष्यसद्धोतां वेदिषदितिथिर्दुरोण्सत्। नृषद्वरसदंत्सद्योम्सद्जा गोजा ऋत्जा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥

भ्रुवोर्मध्याय नमः॥ (MIDDLE OF EYEBROWS)

त्र्यंम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पुंष्ट्रिवर्धनम्। उर्वारुकमिवं बन्धंनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतांत्॥ नेत्राभ्यां नमः॥ (EYES)

नमः स्रुत्यांय च पथ्यांय च नमः काट्यांय च नीप्यांय च नमः सूद्यांय च सर्स्यांय च नमो नाद्यायं च वैशन्तायं च।

कर्णाभ्यां नमः॥ (EARS)

मा नंस्तोके तनंये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।

वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवंधीर्ह्विष्मंन्तो नमंसा विधेम

नासिकायै 1 नमः॥ $_{\text{(NOSE)}}$

अवृतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतेषुधे॥

निशीर्यं शुल्यानां मुखां शिवो नः सुमनां भव।

मुखाय नमः॥ (FACE)

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शूर्वा अधः, क्षंमाचराः। तेषार्थं सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥

कण्ठाय नमः॥ (NECK)

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर् रुद्रा उपंश्रिताः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ उपकण्ठाय नमः॥ (LOWER NECK)

नर्मस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवें। उभाभ्यांमुत ते नमों बाहुभ्यां तव धन्वंने॥

 $^{^{1}}$ नासिकाभ्यां

बाहुभ्यां नमः॥ (SHOULDERS)

या तें हेतिर्मीं ढुष्टम् हस्तें बुभूवं ते धर्नुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमेयक्ष्मया परिन्धुज॥ उपबाहुभ्यां नमः॥ (ELBOW TO WRIST)

परि णो रुद्रस्यं हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्यं दुर्मतिरेघायोः। अवं स्थिरा मुघवंद्र्यस्तनुष्व मीढ्वंस्तोकाय तनयाय मृडय॥ मणिबन्धाभ्यां नमः॥ (WRISTS)

ये तीर्थानि प्रचरेन्ति सृकावंन्तो निष्क्षिणंः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ हस्ताभ्यां नमः॥ (HANDS)

सुद्योजातं प्रपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ (ROLL RING FINGERS ON THUMBS)

वामदेवाय नमों ज्येष्ठाय नमेः श्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालाय नमः कलंविकरणाय नमो बलंविकरणाय नमो बलाय नमो बलंप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमेः॥

तर्जनीभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON INDEX FINGERS)

अघोरैंभ्योऽथ घोरैंभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वृशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ मध्यमाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON MIDDLE FINGERS) तत्पुरुंषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयात्॥

अनामिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON RING FINGERS)

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिब्रह्मणो-ऽधिपतिब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥

कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON LITTLE FINGERS)

नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतयेऽम्बिकापतय उमापतये पशुपतये नमो नमः॥ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥(RUB PALMS OVER ONE ANOTHER, FRONT

AND BACK)

नमों वः किरिकेभ्यों देवाना ५ हृदंयेभ्यः॥

हृदयाय नमः॥ (HEART)

नमों गणेभ्यों गणपंतिभ्यश्च वो नमंः॥

पृष्ठाय नमः॥ (BACK)

नम्स्तक्षंभ्यो रथकारेभ्यंश्च वो नर्मः॥

कक्षाभ्यां नमः॥ (ARMPIT TO WAIST)

नमो हिरंण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतंये नमः॥

पार्श्वाभ्यां नमः॥ (TRUNK)

विज्यं धर्नुः कप्रदिनो विशंल्यो बार्णवा । उत। अनेशत्रस्येषंव आभुरंस्य निष्क्षथिः॥

जठराय नमः॥ (STOMACH)

हिर्ण्यगर्भः समंवर्तताग्रे भूतस्यं जातः पितरेकं आसीत्।

सदांधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवायं ह्विषां विधेम॥ नाभ्यै नमः॥ (NAVEL)

मीढुंष्टम् शिवंतम शिवो नंः सुमनां भव। प्रमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान् आ चर् पिनांकं बिभ्रदा गंहि॥

कट्ये नमः॥ (WAIST)

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपूर्दिनः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

गुह्माय नमः॥ (UPPER REPRODUCTIVE ORGANS)

ये अन्नेषु विविध्यंन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥

अण्डाभ्यां नमः॥ (LOWER REPRODUCTIVE ORGANS)

स शिरा जातवेदा अक्षरं पर्मं प्दम्। वेदाना श्रिरंसि माता आयुष्मन्तं करोतु माम्॥ अपानाय नमः॥ (ANUS)

मा नो महान्तंमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षंन्तमुत मा नं उक्षितम्।

मा नो वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिषः॥

ऊरुभ्यां नमः॥ (THIGHS)

एष ते रुद्रभागस्तं जुंषस्व तेनांवसेनं परो मूजंवतोऽती-

ह्यवंततधन्वा पिनांकहस्तः कृत्तिंवासाः॥ जानुभ्यां नमः॥ (KNEES)

स् सृष्ट् जिथ्सो मृपा बांहु शृध्यू ध्वधंन्वा प्रतिहिताभि रस्ता। बहु स्पते परिदीया रथेन रक्षोहा ऽिमत्रा अपुबाधंमानः॥ जङ्घाभ्यां नमः॥ (KNEE TO ANKLES)

विश्वं भूतं भुवंनं चित्रं बंहुधा जातं जायंमानं च यत्। सर्वो ह्यंष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥ गुल्फाभ्यां नमः॥ (ANKLES)

ये पथां पंथिरक्षंय ऐलबृदा यृव्युधंः। तेषा र्रं सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥ पादाभ्यां नमः॥ (FEET)

अध्यं वोचदिधवृक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अही ईश्च सर्वां अम्भय-न्थ्सर्वाश्च यातुधान्यः॥ कवचाय हुम्॥ (CROSS HANDS ACROSS CHEST WITH TIPS OF FINGERS

TOUCHING SHOULDERS)

नमों बिल्मिनें च कव्चिनें च नमः श्रुतायं च श्रुतस्नायं च॥

उपकवचाय हुम्॥ (REPEAT THE ABOVE AT ELBOW LEVEL)
नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषेँ।
अथो ये अस्य सत्वांनोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥
नेत्रत्रयाय वौषट्॥ (TOUCH INDEX, MIDDLE, RING FINGERS ACROSS THE

THREE EYES)

प्र मुंश्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्लियोर्ज्याम्। याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप॥ अस्त्राय फट्॥ (SLAP INDEX AND MIDDLE FINGERS OF RIGHT HAND ON

LEFT PALM)

य पुतावंन्तश्च भूया रंसश्च दिशों रुद्रा विंतस्थिरे। तेषा रं सहस्रयोजने ऽवधन्वांनि तन्मसि॥ इति दिग्बन्धः॥ (SNAP MIDDLE AND THUMB WITH CLICKING SOUNDS AROUND SELF)

॥ मूर्घादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः॥

ॐ मूर्भे नमः। नं नासिकाय² नमः। मों ललाटाय नमः। भं मुखाय नमः। गं कण्ठाय नमः। वं हृदयाय नमः। तें दक्षिणहस्ताय नमः। रुं वामहस्ताय नमः। द्रां नाभ्यै नमः। यं पादाभ्यां नमः।

॥पादादिमूर्घान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः॥

सुद्योजातं प्रंपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥ पादाभ्यां नमः॥

वामदेवाय नमों ज्येष्ठाय नमेः श्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालाय नमः कलंविकरणाय नमो बलंविकरणाय नमो

²नासिकाभ्यां

बलांय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमों मुनोन्मनाय नमेः॥

ऊरुभ्यां नमः॥

अघोरैंभ्योऽथ घोरैंभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः।

सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

हृदयाय नमः॥

तत्पुरुषाय विदाहे महादेवायं धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ मुखाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो-ऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ हंस हंस मूर्प्रे नमः॥



॥ हंसगायत्री ॥

अस्य श्री-हंसगायत्री महामन्नस्य। अव्यक्त परब्रह्म ऋषिः। अव्यक्त गायत्री छन्दः। परमहंसो देवता॥ हंसां बीजम्। हंसीं शक्तिः। हंसूं कीलकम्॥ परमहंस-प्रसाद-सिद्धार्थे जपे विनियोगः॥

हंसां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। हंसीं तर्जनीभ्यां नमः। हंसूं मध्यमाभ्यां नमः। हंसैं अनामिकाभ्यां नमः। हंसीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। हंसः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। हंसां

(एवं त्रिः)

हृदयाय नमः। हंसीं शिरसे स्वाहा। हंसूं शिखायै वषट्। हंसैं कवचाय हुम्। हंसौं नेत्रत्रयाय वौषट्। हंसः अस्त्राय फट्। भूर्भुवस्सुवरोम् इति दिग्बन्धः॥

॥ध्यानम्॥

गमागमस्थं गमनादिशून्यं चिद्रूपदीपं तिमिरापहारम्। पश्यामि ते सर्वजनान्तरस्थं नमामि हंसं परमात्मरूपम्॥ हंसहंसात् परमहंसः सोऽहं हंसः॥

हुंस् हुंसायं विद्महें परमहुंसायं धीमहि।

तन्नों हंसः प्रचोदयाँत॥ हंस हंसेति यो ब्रूयाद्धंसो नाम सदाशिवः। एवं न्यासविधिं कृत्वा ततः सम्पुटमारभेत्॥

॥दिक् सम्पुटन्यासः॥

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।

[ॐ] लं। त्रातार्मिन्द्रमिवितार्मिन्द्रक् हर्वेहवे सुहव्क् शूरमिन्द्रम्।

हुवे नु शृक्रं पुंरुहूतिमिन्द्रई स्वस्ति नो मघवां धात्विन्द्रंः॥ [ॐ] लं भूर्भुवः सुवंः। इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतय ऐरावतवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

पूर्वदिग्भागे ललाटस्थाने लं इन्द्राय नमः। इन्द्रः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [इन्द्रः संरक्षतु॥]॥१॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[नं] रं। त्वन्नों अग्ने वर्रणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽवं यासिसीष्ठाः।

यजिंष्ठो वहिंतमः शोशंचानो विश्वा द्वेषा रेसि प्रमंमुग्ध्यस्मत्॥ [नं] रं भूर्भुवः सुवंः। अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतये-ऽजवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

आग्नेयदिग्भागे नेत्रयोः स्थाने रं अग्नये नमः। अग्निः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [अग्निः संरक्षतु॥]॥२॥

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।

[मों] हं। सुगं नः पन्थामभेयं कृणोतु। यस्मिन्नक्षेत्रे यम एति राजां।

यस्मिन्नेनम्भ्यिषेश्चन्त देवाः। तदंस्य चित्र ह्विषां यजाम॥ [मों] हं भूर्भुवः सुवंः। यमाय दण्डहस्ताय धर्माधिपतये महिषवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

दक्षिणदिग्भागे कर्णयोः स्थाने हं यमाय नमः। यमः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [यमः संरक्षतु॥] ॥३॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[भं] षं। असुन्वन्तमयंजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यां तस्करस्यान्वेषि।

अन्यम्स्मिदिच्छु सा तं इत्या नमों देवि निर्ऋते तुभ्यंमस्तु॥

[भं] षं भूर्भृवः सुवंः। निर्ऋतये खङ्गहस्ताय रक्षोधिपतये नरवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कार-भूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

निर्ऋतिदिग्भागे मुखस्थाने षं निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [निर्ऋतिः संरक्षतु॥] ॥४॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[गं] वं। तत्त्वां यामि ब्रह्मणा वन्दंमान्स्तदा शांस्ते यजंमानो हिविभिः।

अहेंडमानो वरुणेह बोध्युरुंश रस् मा न् आयुः प्रमोषीः॥ [गं] वं भूर्भुवः सुवंः। वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

पश्चिमदिग्भागे बाह्वोः स्थाने वं वरुणाय नमः। वरुणः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [वरुणः संरक्षतु॥]॥५॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[वं] यं। आ नों नियुद्धिः शतिनींभिरध्वरम्। सहस्रिणींभिरुपं-याहि यज्ञम्।

वायों अस्मिन् ह्विषिं मादयस्व। यूयं पांत स्वस्तिभिः सदां

[वं] यं भूर्भुवः सुवंः। वायवे साङ्कुशध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये मृगवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। वायव्यदिग्भागे नासिकास्थाने³ यं वायवे नमः। वायुः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [वायुः संरक्षतु॥]॥६॥

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।

[तें] सं। वय १ सोम ब्रुते तर्व। मर्नस्तुनूषु बिभ्रेतः। प्रजार्वन्तो अशीमहि॥

[तें] सं भूर्भुवः सुवंः। सोमाय अमृतकलशहस्ताय नक्षत्राधिपतये अश्ववाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वर-पार्षदाय नमः।

उत्तरदिग्भागे हृदयस्थाने सं सोमाय नमः। सोमः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [सोमः संरक्षतु॥]॥७॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[रुं] शं। (ऋक्) तमीशाँनं जगंतस्त्रस्थुष्स्पतिम्। धियं जिन्वमवंसे हमहे वयम्।

पूषा नो यथा वेदंसामसंद्वृधे रेक्षिता पायुरदंब्धः स्वस्तये॥ [रुं] शं भूर्भुवः सुवंः। ईशानाय त्रिशूलहस्ताय भूताधिपतये वृषभवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

ईशानदिग्भागे नाभिस्थाने शं ईशानाय नमः। ईशानः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [ईशानः संरक्षतु॥] ॥८॥

³नासिकयोः स्थाने

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[द्रां] खं। (ऋक्) अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भर्रहतौ सजोषाः।

यः शंसंते स्तुवते धायि पुज्र इन्द्रंज्येष्ठा अस्माँ अवन्तु देवाः॥

[द्रां] खं भूर्भृवः सुवंः। ब्रह्मणे पद्महस्ताय विद्याधिपतये हंसवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

ऊर्ध्वदिग्भागे मूर्प्निस्थाने खं ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मा सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [ब्रह्मा संरक्षतु॥]॥९॥

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।

[यं] ह्रीं। स्योना पृथिवि भवांऽनृक्ष्रा निवेशंनी।

यच्छांनः शर्म सप्रथाः॥

[यं] हीं भूर्भुवः सुवंः। विष्णवे चऋहस्ताय नागाधिपतये गरुडवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

अधोदिग्भागे पादयोः स्थाने हीं विष्णवे नमः। विष्णुः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [विष्णुः संरक्षतु॥] ॥१०॥

॥ षोडशाङ्गरौद्रीकरणम्॥

ॐ भूर्भृवः स्वंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ ॐ अं। विभूरंसि प्रवाहंणो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ अं [ॐ] भूर्भृवः सुवरोम्। शिखास्थाने रुद्राय नमः॥१॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥
ॐ आं। वहिंरिस हव्यवाहंनो रौद्रेणानींकेन पाहि मांऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ आं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। शिरस्थाने रुद्राय नमः॥२॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥
ॐ इं। श्वात्रोंऽसि प्रचेता रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मा हि॰सीः॥ इं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। मूर्प्निस्थाने रुद्राय नमः॥३॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥
ॐ ईं। तुथोऽसि विश्ववेदा रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ईं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। ललाटस्थाने रुद्राय नमः॥४॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥
ॐ उं। उशिगंसि कवी रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि
मा मा मां हि॰सीः॥ उं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। नेत्रयोः⁴
स्थाने रुद्राय नमः॥५॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥
ॐ ऊं। अङ्घारिरसि बम्भारी रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ ऊं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। कर्णयोः स्थाने रुद्राय नमः॥६॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥
ॐ ऋं। अवस्युरंसि दुवंस्वान् रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ऋं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। मुखस्थाने रुद्राय नमः॥७॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥
ॐ ऋं। शुन्ध्यूरंसि मार्जालीयो रौद्रेणानीकेन पाहि मांऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ ऋं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। कण्ठस्थाने रुद्राय नमः॥८॥

⁴भू

ॐ भूर्भृवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥
ॐ लं। सम्राडंसि कृशानू रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि
मा मा मां हि॰सीः॥ लं [ॐ] भूर्भृवः सुवरोम्। बाह्वोः स्थाने रुद्राय नमः॥९॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥
ॐ ॡं। परिषद्योऽसि पर्वमानो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ ॡं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। हृदयस्थाने रुद्राय नमः॥१०॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥
ॐ एं। प्रतक्वांऽसि नभंस्वान् रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मा हि॰सीः॥ एं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। नाभिस्थाने रुद्राय नमः॥११॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥
ॐ ऐं। असंम्मृष्टोऽसि हव्यसूदो रौद्रेणानींकेन पाहि मांऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ऐं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। कटिस्थाने रुद्राय नमः॥१२॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥
ॐ ॐ। ऋतथांमाऽसि सुवंज्यीती रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ॐ [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। ऊरुस्थाने रुद्राय नमः॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥
ॐ औं। ब्रह्मंज्योतिरिस् सुवंधीमा रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ औं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। जानुस्थाने रुद्राय नमः॥१४॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥
ॐ अं। अजौंऽस्येकंपाद्रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि
मा मा मां हि॰सीः॥ अं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। जङ्घास्थाने
रुद्राय नमः॥१५॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥
ॐ अः। अहिंरिस बुिध्रयो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ अः [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। पादयोः स्थाने रुद्राय नमः॥१६॥

त्वगस्थिगतैः सर्वपापैः प्रमुच्यते। सर्वभूतेष्वपराजितो भवति।

ततो भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-यक्ष-यमदूत-शािकनी-डािकनी-सर्प-श्वापद-वृश्चिक-तस्कराद्युपद्रवाद्युपघाताः। सर्वे ज्वलन्तं पश्यन्तु। मां रक्षन्तु। यजमानं रक्षन्तु। सर्वान् महाजनान् रक्षन्तु॥



॥ गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थो) न्यासः॥

मनो ज्योतिंर्जुषतामाज्यं विच्छिन्नं यज्ञ सिम्मं देधातु। या इष्टा उषसो निम्नुचेश्च ताः सन्देधामि ह्विषां घृतेनं॥ गुह्याय नमः॥१॥

अबौध्यग्निः समिधा जनांनां प्रति धेनुमिंवाऽऽयतीमुषासम्। यह्वा इंव प्रवयामुज्जिहांनाः प्रभानवंः सिस्रते नाकमच्छं॥ नाभ्यै नमः॥२॥

अग्निर्मूर्धा दिवः कुकुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार रेतार्रसि जिन्वति॥ हृदयाय नमः॥३॥

मूर्धानं दिवो अंरतिं पृथिव्या वैश्वान्रमृतायं जातम्ग्निम्। क्वि॰ सम्राज्मितिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ कण्ठाय नमः॥४॥

मर्माणि ते वर्मभिश्छादयामि सोमंस्त्वा राजाऽमृतेनाभि-वंस्ताम्। उरोर्वरीयो वरिवस्ते अस्तु जर्यन्तं त्वामन् मदन्तु देवाः॥ मुखाय नमः॥५॥

जातवेदा यदि वा पावकोऽसि। वैश्वानरो यदि वा वैद्युतोऽसि। शं प्रजाभ्यो यजमानाय लोकम्। ऊर्जं पुष्टिं ददंदभ्यावेवृथ्स्व॥ शिरसे नमः॥६॥

॥ आत्मरक्षा॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - २/प्रश्नः - ३/अनुवाकः - ११)

ब्रह्मौत्म्नवदंसृजत। तदंकामयत। समात्मनां पद्येयेतिं। आत्मुन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मैं दश्म १ हूतः प्रत्यंशृणोत्। स दशंहूतोऽभवत्। दशंहूतो हु वै नामैषः। तं वा एतं दशंहूत १ सन्तम्। दशंहोतेत्याचंक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्में सप्तमः हूतः प्रत्यंश्वणोत्। स सप्तहूंतोऽभवत्। सप्तहूंतो हु वै नामैषः। तं वा पुतः सप्तहूंतः सन्तम्। सप्तहोतेत्याचंक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मनित्यामेन्त्रयत। तस्मै षष्ठ १ हूतः प्रत्येश्वणोत्। स षड्ढूंतोऽभवत्। षड्ढूंतो हु वै नामैषः। तं वा एत १ षड्ढूंत १ सन्तम्। षड्ढोतेत्याचंक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥ आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्में पश्चमः हूतः प्रत्यंश्वणोत्। स पश्चंहूतोऽभवत्। पश्चंहूतो हु वै नामैषः। तं वा पृतं पश्चंहूतः सन्तम्। पश्चंहोतेत्याचंक्षते प्रोक्षंण। परोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मैं चतुर्थ हूतः प्रत्यंश्वणोत्। स चतुंर्हूतोऽभवत्। चतुंर्हूतो हृ वै नामैषः। तं वा पृतं चतुंर्हूत् सन्तम्। चतुंर्हीतेत्याचंक्षते परोक्षंण। परोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

तमंब्रवीत्। त्वं वे मे नेदिष्ठ हूतः प्रत्यंश्रौषीः। त्वयैनानाख्यातार् इति। तस्मान्नु हैना ध्रुश्चतुंर्होतार् इत्याचंक्षते। तस्मांच्छुश्रूषः पुत्राणा हृ हृद्यंतमः। नेदिष्ठो हृद्यंतमः। नेदिष्ठो हृद्यंतमः। नेदिष्ठो अत्मने नमः॥

॥ शिवसङ्कल्पः॥

येनं यूज्ञस्त्रायते स्प्तहोता तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१॥
येन यज्ञस्त्रायते स्प्तहोता तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१॥
येन कर्माणि प्रचरेन्ति धीरा यतो वाचा मनसा चारु
यन्ति। यथ्सम्मित्मनुंस्यन्ति प्राणिनस्तन्मे मनः
शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२॥
येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदर्थेषु धीराः।

यदंपूर्वं यक्षम्नतः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३॥ यत्प्रज्ञानंमुत चेतो धृतिश्च यञ्च्योतिरन्तर्मृतं प्रजासं। यस्मान्न ऋते किं च न कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥४॥ सुषार्थिरश्वांनिव यन्मंनुष्यांन्नेनीयतेऽभीशंभिर्वाजिनं इव। हत्प्रतिष्ठं यदंजिरं जिवेष्ठं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥५॥

्त्रातष्ठ् यदाजर् जापष्ठ् तन्तु मनः ार्वपसङ्कल्पमस्तु॥५ यस्मिनृचः साम् यजूर्श्षेष यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिईश्चित्तर सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥६॥

यदत्रं षष्ठं त्रिशत रे सुवीरं यज्ञस्यं गुह्यं नवनावमाय्यम्। दशं पश्च त्रिर्शतं यत्परं च तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥७॥

यञ्जाग्रंतो दूरमुदैति दैवं तदं सुप्तस्य तथैवैतिं। दूर्ङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमंस्तु॥८॥ येनेदं विश्वं जगतो बभूव ये देवापि मह्तो जातवेदाः। तदेवाग्निस्तमंसो ज्योतिरेकं तन्मे मनः

शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥९॥

येन द्यौः पृथिवी चान्तिरक्षां च ये पर्वताः प्रदिशो दिश्रश्च। येनेदं जग्द्याप्तं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१०॥ ये मनो हृदयं ये चं देवा ये दिव्या आपो ये सूर्यर्शिमः। ते श्रोत्रे चक्षुंषी स्श्चरंन्तं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥११॥ अचिन्त्यं चाप्रमियं च व्यक्ताव्यक्तंपरं च यत्।
सूक्ष्मांथ्सूक्ष्मतंरं ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१२॥
एकां च दश शतं चं सहस्रं चायुतं च
नियुतं च प्रयुतं चार्बुदं च न्यंबुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तंश्च
परार्धश्च तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१३॥
ये पंश्च पश्चादश शत सहस्रम्युतं न्यंबुदं च। ते
अग्निचित्येष्टंकास्त शरीरं तन्मे मनः
शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१४॥
वेदाहमेतं प्रमुषं महान्तंमादित्यवंर्णं तमंसः प्रस्तात। यस्य

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवंणं तमंसः परंस्तात्। यस्य योनिं परिपश्यंन्ति धीरास्तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१५॥ यस्येदं धीराः पुनन्तिं क्वयौ ब्रह्माणंमेतं त्वां वृणत् इन्दुंम्। स्थावरं जङ्गमं द्यौरांकाशं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१६॥

परौत्परतंरं चैव यत्पराँचैव यत्परम्। यत्परौत्परंतो ज्ञेयं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१७॥

परौत्परतंरो ब्रह्मा तृत्परौत्पर्तो हंरिः। तृत्परोत्परंतोऽधीशुस्तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१८॥

या वेंदादिषुं गायत्री सर्वव्यांपी महेश्वंरी। ऋग्यजुंः सामांथर्वैश्च तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१९॥ यो वै देवं महादेवं प्रणवं पर्मेश्वरम्। यः सर्वे सर्ववेदेश्च तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२०॥

प्रयंतः प्रणंवोङ्कारं प्रणवं पुरुषोत्तंमम्। ओङ्कारं प्रणंवात्मानं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२१॥

योऽसौं सर्वेषुं वेदेषु पठ्यतें ह्यज् इश्वंरः। अकायों निर्गुणो ह्यात्मा तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२२॥

गोभिर्जुष्टं धर्नेन् ह्यायुंषा च बर्लेन च। प्रजयां पृशुभिः पुष्कराक्षं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥२३॥

कैलांस्शिखंरे रम्ये शङ्करंस्य शिवालंये।
देवतांस्तत्रं मोदन्ते तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२४॥
विश्वतंश्वक्षुरुत विश्वतांमुखो विश्वतांहस्त उत विश्वतंस्पात्।
सं बाहुभ्यां नमंति सम्पतंत्रैद्यावांपृथिवी जनयंन्देव
एकस्तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२५॥
त्र्यम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पृष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्तन्मे मनः
शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२६॥

चतुरों वेदानंधीयीत सर्वशांस्त्रम्यं विंदुः। इतिहासपुराणानां तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२७॥ मा नो महान्तंमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षंन्तमुत मा नं

उक्षितम्। मा नों वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तन्वों रुद्र रीरिषस्तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२८॥ मा नस्तोके तनये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेष् रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवंधीर्हविष्मंन्तो नमंसा विधेम ते तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२९॥ ऋत र सत्यं पेरं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम्। ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमस्तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३०॥ कदुद्राय प्रचेतसे मीदुष्टंमाय तव्यंसे। वो चेम शन्तम हदे। सर्वो होष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३१॥ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आंवः। सबुध्नियां उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च विवस्तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३२॥ यः प्रांणतो निंमिषतो मंहित्वैक इद्राजा जगंतो बभूवं। य ईशें अस्य द्विपदश्चतुंष्पदः कस्मैं देवायं हविषां विधेम तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३३॥ य औत्मदा बंलदा यस्य विश्वं उपासंते प्रशिषं यस्यं देवाः। यस्यं छायाऽमृतं यस्यं मृत्युः कस्मैं देवायं हविषां विधेम तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३४॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अफ्सु य ओषंधीषु यो रुद्रो विश्वा

भुवंनाऽऽविवेश तस्मैं रुद्राय नमों अस्तु तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३५॥

गुन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणींम्। ईश्वरी ई

सर्वभूतानां

तामिहोपंह्वये श्रियं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३६॥ य इदः शिवंसङ्कल्पः सदा ध्यायंन्ति ब्राह्मणाः। ते परं मोक्षं गमिष्यन्ति तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥ हृदयाय नमः॥

॥ पुरुषसूक्तम्॥

ॐ सहस्रंशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ पुरुष पुवेद सर्वम्। यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृत्त्वस्येशांनः। यदन्नेनातिरोहंति॥ पुतावांनस्य महिमा। अतो ज्याया ईश्च पूरुषः।

पादौँऽस्य विश्वां भूतानि। त्रिपादंस्यामृतं दिवि॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुंषः। पादौँऽस्येहाऽऽभंवात्पुनः। ततो विश्वङ्कांक्रामत्। साशनानशने अभि॥ तस्माँद्विराडंजायत। विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यंरिच्यत। पृश्चाद्भृमिमथो पुरः॥

यत्पुरुंषेण हुविषां। देवा यज्ञमतंन्वता वृसन्तो अस्यासीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शुरद्धविः॥ सप्तास्यांऽऽ- सन्परिधर्यः। त्रिः सप्त समिधेः कृताः। देवा यद्यज्ञं तेन्वानाः। अबंध्रन्पुरुषं पृशुम्॥ तं युज्ञं बुर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमंग्रतः।

तेनं देवा अयंजन्त। साध्या ऋषंयश्च ये॥ तस्माँ द्यज्ञार्थ्यार्व-हुतंः। सम्भृतं पृषदाज्यम्। पृशू श्रस्ता श्रश्चेके वायव्यान्। आरुण्यान्ग्राम्याश्च ये॥ तस्माँ द्यज्ञार्थ्यार्व्हुतंः। ऋचः सामानि जिज्ञेरे। छन्दा श्रेसि जिज्ञिरे तस्मात्।

यजुस्तस्मांदजायत॥ तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चोभ्यादंतः। गावों ह जिज्ञेरे तस्मांत्। तस्मांज्ञाता अंजावयः॥ यत्पुरुषं व्यंदधुः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुखं किमंस्य कौ बाहू। कावूरू पादांवुच्येते॥ ब्राह्मणौंऽस्य मुखंमासीत्। बाहू रांजन्यः कृतः।

ऊरू तर्दस्य यद्वैश्यः। पुद्धाः शूद्रो अंजायत॥ चुन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रेश्चाग्निश्चं। प्राणाद्वायुरंजायत॥ नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्। शीष्णों द्योः समेवर्तत। पुद्धां भूमिदिशः श्रोत्रात्। तथां लोकाः अंकल्पयन्॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंणं तमंस्स्तु पारे॥ सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरंः। नामांनि कृत्वाऽभिवद्न् यदास्ते॥ धाता पुरस्ताद्यमुंदाज्हारं। श्रुकः प्रविद्वान्प्रदिश्श्चतंस्रः। तमेवं विद्वान्मृतं इह भवति।

नान्यः पन्था अयंनाय विद्यते॥ युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्। ते हु नाकं महिमानंः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ शिरसे स्वाहा॥



॥ उत्तरनारायणम्॥

अद्भः सम्भूतः पृथिव्यै रसाँच। विश्वकंर्मणः समवर्तताधि। तस्य त्वष्टां विदधंद्रूपमेति। तत्पुरुंषस्य विश्वमाजांनमग्रे॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंणं तमसः परस्तात्। तमेवं विद्वानुमृतं इह भवति। नान्यः पन्थां विद्यतेयंऽनाय॥ प्रजापंतिश्वरति गर्भे अन्तः। अजायंमानो बहुधा विजायते। तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम्। मरीचीनां पदमिंच्छन्ति वेधसंः॥ यो देवेभ्य आतंपति। यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यों जातः। नमों रुचाय ब्राह्मये॥ रुचंं ब्राह्मं जनयंन्तः। देवा अग्रे तदंबुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्। तस्यं देवा असन् वशैं॥ ह्रीश्चं ते लक्ष्मीश्च पत्र्यौं। अहोरात्रे पार्श्वे। नक्षंत्राणि रूपम्। अश्विनौ व्यात्तम्। इष्टं मनिषाण। असं मंनिषाण। सर्वं मनिषाण॥ शिखायै वषट्॥

॥ अप्रतिरथम्॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः – ४/प्रश्नः – ६/अनुवाकः – ४)

आशुः शिशांनो वृष्मो न युध्मो घंनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। सङ्कन्दंनोऽनिमिष एंकवीरः श्तरः सेनां अजयत् साकिमिन्द्रंः। सङ्कन्दंनेनानिमिषेणं जिष्णुनां युत्कारेणं दुश्चवनेनं धृष्णुनां। तदिन्द्रंण जयत् तथ्संहध्वं युधो नर् इषुंहस्तेन वृष्णां। स इषुंहस्तैः सिनेषङ्गिभिर्वशी सङ्स्रंष्टा स युध् इन्द्रों गुणेनं। स्रस्रृष्ट्जिथ्सोम्पा बांहशध्यूर्ध्वधंन्वा प्रतिहिताभिरस्तां।

बृहंस्पते परि दीया रथेन रक्षोहाऽमित्रा अपबाधंमानः। प्रमुश्जन्थसेनाः प्रमुणो युधा जयंत्रस्माकंमेध्यविता रथांनाम्। गोत्रिभदं गोविदं वर्ज्ञंबाहुं जयंन्तमज्मं प्रमृणन्तमोजंसा। इम संजाता अनुं वीरयध्वमिन्द्र सखायोऽनु स रंभध्वम्। बलुविज्ञायः स्थविंदः प्रवींदः सहंस्वान् वाजी सहंमान उग्रः। अभिवींरो अभिसंत्त्वा सहोजा जैत्रंमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित्। अभि गोत्राणि सहंसा गाहंमानोऽदायो वीरः श्तमंन्युरिन्द्रंः।

दुश्चवनः पृंतनाषाडंयुध्यों ऽस्माक् १ सेनां अवतु प्र युथ्सु। इन्द्रं आसां नेता बृह्स्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनानांमभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मुरुतो यन्त्वग्रें। इन्द्रंस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञं आदित्यानां मुरुता १ शर्धं उग्रम्। महामंनसां भुवनच्यवानां घोषों देवानां जयंतामुदंस्थात्। अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषंवस्ता जंयन्तु। अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्मानुं देवा अवता हवेषु। उद्धंर्षय मघवन्नायुंधान्युत् सत्त्वंनां मामकानां महा रसि। उद्घंत्रहन् वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयंतामेतु घोषंः। उप्रेत् जयंता नरः स्थिरा वंः सन्तु बाहवंः। इन्द्रों वः शर्मयच्छत्त्वनाधृष्या यथाऽसंथ। अवंसृष्टा परां पत् शरंव्ये ब्रह्मंसर्शिता।

गच्छामित्रान् प्रविश् मैषां कं चनोच्छिषः। मर्माणि ते वर्मभिश्छादयामि सोमस्त्वा राजाऽमृतेनाभिवस्ताम्। उरोवरीयो वरिवस्ते अस्तु जयन्तं त्वामन् मदन्तु देवाः। यत्रं बाणाः सम्पतिन्त कुमारा विशिखा इंव। इन्द्रों नस्तत्रं वृत्रहा विश्वाहा शर्म यच्छतु॥ कवचाय हुम्॥

॥ प्रतिपूरुषम् (सं०)॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः – १/प्रश्नः – ८/अनुवाकः – ६)

प्रतिपूरुषमेकंकपालान्निर्वपत्येकमितिरिक्तं यावन्तो गृह्याः स्मस्तेभ्यः कमंकरं पश्नाः शर्मासि शर्म यजंमानस्य शर्म मे युच्छैकं एव रुद्रो न द्वितीयांय तस्थ आखुस्ते रुद्र पृशुस्तं जुंषस्वैष ते रुद्र भागः सह स्वस्नाऽम्बिकया तं जुंषस्व भेष्जं गवेऽश्वांय पुरुषाय भेष्जमथीं अस्मभ्यं भेष्ज स्मुभेषजं यथाऽसंति। सुगं मेषायं मेष्यां अवांम्ब रुद्रमंदिम्ह्यवं देवं त्र्यंम्बकम्। यथां नः श्रेयंसः कर्द्यथां नो वस्यंसः कर्द्यथां नः पशुमतः कर्द्यथां नो व्यवसाययात। त्र्यंम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव बन्धनानमृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। एष ते रुद्रभागस्तं जुंषस्व तेनांवसेनं परो मूर्जवतोऽती्ह्यवंततधन्वा पिनांकहस्तः कृत्तिंवासाः॥

॥ प्रतिपूरुषम् (ब्रा०)॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - १/प्रश्नः - ६/अनुवाकः - १०)

प्रतिपूरुषमेकंकपालां त्रिवंपित। जाता एव प्रजा रुद्रान्त्रिरवंदयते। एकंमितंरिक्तम्। जिन्छ्यमाणा एव प्रजा रुद्रान्त्रिरवंदयते। एकंकपाला भवन्ति। एक्धैव रुद्रं निरवंदयते। नाभिघांरयित। यदंभिघारयेत्। अन्तर्वचारिण र् रुद्रं कुर्यात्। एकोल्मुकेनं यन्ति। तिद्ध रुद्रस्यं भाग्धेयम्। इमां दिशं यन्ति। एषा व रुद्रस्य दिक्। स्वायांमेव दिशि रुद्रं निरवंदयते। रुद्रो वा अपृशुकांया आहुंत्ये नातिष्ठत। असौ ते पृशुरिति निर्दिशेद्यं द्विष्यात्। यमेव द्वेष्टिं। तमंस्मे पृशुं निर्दिशित। यदि न द्विष्यात्। आखुस्ते पृशुरितिं ब्रूयात्। न ग्राम्यान् पृशून् हिनस्तिं। नार्ण्यान्। चतुष्पथे

जुंहोति। एष वा अंग्नीनां पड्ढीशो नामं। अग्निवत्येव जुंहोति। मध्यमेनं पर्णेनं जुहोति। सुग्धंषा। अथो खलुं। अन्तमेनैव होतव्यम्। अन्तत एव रुद्रं निरवंदयते। एष तें रुद्र भागः सह स्वस्नाऽम्बिकयेत्याह। शरद्वा अस्याम्बिका स्वसां। तया वा एष हिनस्ति। ये हिनस्ति। तयैवैन र सह शंमयति। भेषजं गव इत्याह। यावन्त एव ग्राम्याः पुशर्वः। तेभ्यो भेषुजं करोति। अवाम्ब रुद्रमंदिमहीत्याह। -आशिषंमेवैतामाशाँस्ते। त्र्यंम्बकं यजामह इत्यांह। मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतादिति वावैतदाह। उत्किरन्ति। भगंस्य लीफ्सन्ते। मूर्ते कृत्वाऽऽसंजन्ति। यथा जनं यतेऽवसं क्रोतिं। ताहगुव तत्। एष ते रुद्र भाग इत्यांह निरवंत्यै। अप्रंतीक्षमायंन्ति। अपः परिंषिश्चति। रुद्रस्यान्तर्हित्यै। प्र वा एतें स्माल्लोकाच्यंवन्ते। ये त्र्यंम्बकैश्चरंन्ति। आदित्यं चरुं पुनरेत्य निर्वपिति। इयं वा अदितिः। अस्यामेव प्रतितिष्ठन्ति।

नेत्रत्रयाय वौषट्॥



॥ शतरुद्रीयम् (सं०)॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः – १/प्रश्नः – ३/अनुवाकः – १४)

त्वमंग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस्त्व शर्धो मार्रुतं पृक्ष ईशिषे। त्वं वातैररुणैर्यासि शङ्गयस्त्वं पूषा विधृतः पासि नु त्मनां। आ वो राजांनमध्वरस्यं रुद्र होतांर सत्ययज् र रोदंस्योः। अग्निं पुरा तंनिय्लोर्चित्ताद्धिरंण्यरूपमवंसे कृणुध्वम्। अग्निर्होता नि षंसादा यजीयानुपस्थे मातुः सुर्भावं लोके। युवां कृविः पुरुनिष्ठ ऋतावां धृतां कृष्टीनामृत मध्यं इद्धः।

साध्वीमंकर्देववीतिं नो अद्य यज्ञस्यं जिह्वामंविदाम् गृह्याम्। स आयुराऽगाँथ्सुर्भिवसानो भृद्रामंकर्देवहूंतिं नो अद्य। अर्ऋन्दद्गिः स्तनयंत्रिव द्यौः क्षामा रेरिहद्वीरुधंः सम्अत्र। सुद्यो जंज्ञानो वि हीमिद्धो अख्यदा रोदंसी भानुनां भात्यन्तः। त्वे वसूनि पुर्वणीक होतर्दोषा वस्तोरेरिरे यज्ञियांसः।

क्षामेव विश्वा भुवनानि यस्मिन्थ्स सौभंगानि दिधिरे पांवके। तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम् विश्वाः सुक्षितयः पृथंक्। अग्ने कामाय येमिरे। अश्याम् तं काममग्ने तवोत्यंश्यामं रिये रियेवः सुवीरम्। अश्याम् वाजंमिभ वाजयंन्तोऽश्यामं द्युम्रमंजराऽजरंन्ते। श्रेष्ठं यविष्ठ भारताऽग्ने द्युमन्तुमा भंर।

वसो पुरुस्पृह १ र्यिम्। स श्वितानस्तंन्यतू रोचन्स्था अजरेभिनानदद्भिर्यविष्ठः। यः पावकः पुरुतमेः पुरूणि पृथ्न्यग्निरंनुयाति भवन्नं। आयुष्टे विश्वतो दधद्यम्ग्निवरेण्यः। पुनस्ते प्राण आयेति परा यक्ष्म १ सुवामि ते। आयुर्दा अंग्ने ह्विषो जुषाणो घृतप्रतीको घृतयोनिरेधि। घृतं पीत्वा मधु

चारु गर्व्यं पितेवं पुत्रम्भिरंक्षतादिमम्।

तस्मै ते प्रतिहर्यते जातंवदो विचंर्षणे। अग्ने जनांमि सुष्टुतिम्। दिवस्परि प्रथमं जंज्ञे अग्निर्स्मद्वितीयं परि जातवेदाः। तृतीयंमप्सु नृमणा अजंस्रमिन्धांन एनं जरते स्वाधीः। शुचिः पावक वन्द्योऽग्ने बृहद्विरोचसे। त्वं घृतेभिराहृतः। दृशानो रुका उर्व्या व्यंद्यौदुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः। अग्निर्मृतों अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजंनयथ्सुरेताः।

आ यदिषे नृपतिं तेज आन्द्भृचि रेतो निषिक्तं द्यौर्भीकैं। अग्निः शर्धमनवद्यं युवानः स्वाधियं जनयथ्सूदयंच। स तेजीयसा मनसा त्वोतं उत शिक्ष स्वपत्यस्यं शिक्षोः। अग्ने रायो नृतंमस्य प्रभूतौ भूयामं ते सुष्टुतयंश्च वस्वंः। अग्ने सहन्तमा भेर द्युम्नस्यं प्रासहां र्यिम्।

विश्वा यश्चर्षणीर्भ्यांसा वाजेषु सासहंत्। तमंग्ने पृतना सहर्र र्यिर संहस्व आ भंर। त्वर हि सत्यो अद्भंतो दाता वाजंस्य गोमंतः। उक्षान्नांय वृशान्नांय सोमंपृष्ठाय वेधसें। स्तोमैंविंधेमाग्नयें। वृद्या हि सूनो अस्यंद्यसद्वां चृक्ते अग्निर्जनुषाऽज्माऽन्नम्ं। स त्वं नं ऊर्जसन् ऊर्जं धा राजेव जेरवृके क्षेंष्यन्तः।

अग्र आयू १ षि पवस् आ सुवोर्ज्ञिम षं च नः। आरे बांधस्व दुच्छुनाम्। अग्ने पर्वस्व स्वपां अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधत्पोष रे र्यिं मियं। अग्ने पावक रोचिषां मृन्द्रयां देव जिह्नयां। आ देवान् वंक्षि यिक्षं च। स नः पावक दीदिवोऽग्नें देवा र इहाऽऽवंह। उपं यज्ञ र ह्विश्चं नः। अग्निः शुचिं व्रततमः शुचिर्विप्रः शुचिः क्विः। शुचीं रोचत् आहुंतः। उदंग्ने शुचयस्तवं शुका भ्राजंन्त ईरते। तव ज्योती र्ष्ट्यर्चयंः॥

॥ शतरुद्रीयम् (ब्रा०)॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे काठके प्रश्नः - २/अनुवाकः - २)

त्वमंग्ने रुद्रो असुरो महो दिवः। त्व शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे। त्वं वातैररुणैर्यासि शङ्गयः। त्वं पूषा विधृतः पांसि नु त्मनां। देवां देवेषुं श्रयध्वम्। प्रथंमा द्वितीयेषु श्रयध्वम्। द्वितीयास्तृतीयेषु श्रयध्वम्। तृतीयाश्चतुर्थेषुं श्रयध्वम्। चतुर्थाः पेश्चमेषुं श्रयध्वम्। पश्चमाः षष्ठेषुं श्रयध्वम्॥ षष्ठाः संप्तमेषुं श्रयध्वम्। सप्तमा अष्टमेषुं श्रयध्वम्। अष्टमा नंवमेषुं श्रयध्वम्। नुवमा दंशमेषुं श्रयध्वम्। दशमा एंकादशेषुं श्रयध्वम्। एकादशा द्वांदशेषुं श्रयध्वम्। द्वादशास्त्रंयोदशेषुं श्रयध्वम्। त्रयोदशाश्चंतुर्दशेषुं श्रयध्वम्। चतुर्दशाः पंश्रदशेषुं श्रयध्वम्। पश्चदशाः षोंडशेषुं श्रयध्वम्॥ षोडशाः संप्तदशेषुं श्रयध्वम्। सप्तदशा अंष्टादशेषुं श्रयध्वम्। अष्टादशा एंकान्नवि शेषुं श्रयध्वम्। एकान्नवि शा वि शेषुं श्रयध्वम्। वि शा एंकवि १ शेषुं श्रयध्वम्। एकवि १ शा द्वांवि १ शेषुं श्रयध्वम्।

द्वाविश्शास्त्रंयोविश्शेषु श्रयध्वम्। त्रयोविश्शाश्चंतुर्विश्शेषुं श्रयध्वम्। चतुर्विश्शाः पंश्वविश्शेषुं श्रयध्वम्। पश्चविश्शाः षंड्विश्शेषुं श्रयध्वम्। पश्चविश्शाः षंड्विश्शेषुं श्रयध्वम्। पञ्चविश्शेषुं श्रयध्वम्। सप्तविश्शेषुं श्रयध्वम्। अष्टाविश्शोषुं श्रयध्वम्। अष्टाविश्शोषुं श्रयध्वम्। पृकान्नत्रिश्शोषुं श्रयध्वम्। एकान्नत्रिश्शोषुं श्रयध्वम्। एकित्रिश्शोषुं श्रयध्वम्। एकित्रिश्शोषुं श्रयध्वम्। एकित्रिश्शोषुं श्रयध्वम्। द्वान्तिश्शोषुं श्रयध्वम्। देवौस्त्रिरेकादशास्त्रिस्त्रंयस्त्रिश्शाः। उत्तरे भवतः। उत्तरवर्त्मान् उत्तरसत्वानः। यत्कांम इदं जुहोमिं। तन्मे समृध्यताम्। वयः स्यांम पत्तयो रयोणाम्। भूर्भुवः स्वः स्वाहा॥ अश्राय फट्॥ भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः॥ अस्त्राय फट्॥

॥पश्चाङ्गम्॥

ह्रसः शुंचिषद्वसुंरन्तिरिक्ष्मद्धोतां वेदिषदितिथिर्दुरोण्सत्। नृषद्वरसदेत्सद्योम्सद्जा गोजा ऋत्जा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥

प्रतिद्वर्ण्णः स्तवते वीर्याय। मृगो न भीमः कुंचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुष् त्रिषु विक्रमणेषु। अधिक्षियन्ति भवनानि विश्वा॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमेव बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्॥ तथ्सवितुर्वृणीमहे। व्यं देवस्य भोजनम्। श्रेष्ठ सर्वधातमम्। तुर् भगस्य धीमहि॥ विष्णुर्योनिं कल्पयतु। त्वष्टां रूपाणिं पि॰शतु। आसिंश्चतु प्रजापंतिः। धाता गर्भं दधातु ते॥

॥ अष्टाङ्ग-नमस्काराः॥

हिर्ण्यगर्भः समंवर्तताग्रे भूतस्यं जातः पितरेकं आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवायं हिवर्षा विधेम॥ [उरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥१॥

यः प्राणितो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बुभूवी य ईशे अस्य द्विपद्श्वतुष्पदः कस्मै देवायं ह्विषां विधेम॥ [शिरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥२॥

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुची वेन आवः। सबुध्रिया उपमा अस्य विष्ठाः सृतश्च योनिमस्तश्च विवेः॥१॥ [दृष्ट्या] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥३॥

मृही द्यौः पृथिवी चं न इमं युज्ञं मिंमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः॥

[मनसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥४॥

उपश्वासय पृथिवीमुत द्यां पुंरुत्रा ते मनुतां विष्ठितं जगेत्। स दुन्दुभे सजूरिन्द्रेण देवैर्दूराद्दवीयो अपसेध शत्रून्॥ [वचसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥५॥

अग्ने नयं सुपथां राये अस्मान् विश्वांनि देव वयुनांनि

विद्वान्। युयोध्यंस्मज्जंहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमं उक्तिं विधेम॥
[पद्माम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥६॥
या ते अग्रे रुद्रिया तुनूस्तयां नः पाहि तस्यांस्ते स्वाहाँ॥
[कराभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥७॥
इमं यंमप्रस्तरमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः।
आत्वा मन्नाः कविश्नस्ता वंहन्त्वेना राजन् ह्विषां मादयस्व॥
[कर्णाभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥८॥

॥लघुन्यासे श्री-रुद्रध्यानम्॥

अथाऽऽत्मानं शिवात्मानं श्री-रुद्र रूपं ध्यायेत्॥
शुद्धस्फटिकसङ्काशं त्रिनेत्रं पश्चवऋकम्।
गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम्॥
नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नागयज्ञोपवीतिनम्।
व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम्॥
कमण्डल्वक्षसूत्राणां धारिणं शूलपाणिनम्।
ज्वलन्तं पिङ्गलजटाशिखामुद्योतधारिणम्॥
वृषस्कन्धसमारूढम् उमादेहार्धधारिणम्।
अमृते नाष्ठुतं शान्तं दिव्यभोगसमन्वितम्॥
दिग्देवता समायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम्।
नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम्॥
सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम्।

एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत्॥

अथातो रुद्र स्नानार्चनाभिषेकविधिं व्याख्यास्यामः। आदित एव तीर्थे स्नात्वा उदेत्य शुचिः प्रयतो ब्रह्मचारी शुक्कवासा ईशानस्य प्रतिकृतिं कृत्वा तस्य दक्षिणप्रत्यग्देशे देवाभिमुखः स्थित्वा आत्मनि देवताः स्थापयेत्॥

॥लघुन्यासे देवता-स्थापनम्॥

प्रजनने ब्रह्मा तिष्ठतु। पादयोर्विष्णुस्तिष्ठतु। हस्तयोर्हरस्तिष्ठतु। बाह्वोरिन्द्रस्तिष्ठतु। जठरे अग्निस्तिष्ठतु। हृदये शिवस्तिष्ठतु। कण्ठे वसवस्तिष्ठन्तु। वक्रे सरस्वती तिष्ठतु। नासिकयोर्-वायुस्तिष्ठतु। नयनयोश्चन्द्रादित्यौ तिष्ठेताम्। कर्णयोरिश्वनौ तिष्ठेताम्। ललाटे रुद्रास्तिष्ठन्तु। मूर्ध्यादित्यास्तिष्ठन्तु। शिरासे महादेवस्तिष्ठतु। शिखायां वामदेवस्तिष्ठतु। शिवाशङ्करौ तिष्ठताम्। प्रतः शूली तिष्ठतु। पार्श्वयोः शिवाशङ्करौ तिष्ठेताम्। सर्वतो वायुस्तिष्ठतु। ततो बहिः सर्वतोऽग्निज्वीलामाला-परिवृतस्तिष्ठतु। सर्वेष्वङ्गेषु सर्वा देवता यथास्थानं तिष्ठन्तु। मां रक्षन्तु। [सर्वान् महाजनान् सकुटुम्बं रक्षन्तु॥]

अग्निर्मे वाचि श्रितः। वाग्घृदंये। हृदंयं मियं। अहम्मृते। अमृतं ब्रह्मणि। (जिह्वा)

वायुर्में प्राणे श्रितः। प्राणो हृदये। हृदयं मिये। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (नासिका) सूर्यो मे चक्षुंषि श्रितः। चक्षुर्हदेये। हृदंयं मियं। अहमुमृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (नेत्रे)

चन्द्रमां में मनंसि श्रितः। मनो हृदये। हृदयं मियं। अहमुमृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (वक्षः)

दिशों में श्रोत्रें श्रिताः। श्रोत्र हदंये। हदंयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (श्रोत्रे)

आपो मे रेतंसि श्रिताः। रेतो हृदंये। हृदंयं मियं। अहममृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (गुह्मम्)

पृथिवी मे शरीरे श्रिता। शरीर्॰ हृदये। हृदयं मिये। अहममृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (शरीरम्)

अोष्धिवनस्पतयों मे लोमंसु श्रिताः। लोमांनि हृदंये। हृदंयं मिये। अहमुमृते। अमृतं ब्रह्मणि। (लोमानि)

इन्द्रों में बलैं श्रितः। बल् १ हदये। हदयं मिये। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (बाह्)

पुर्जन्यों मे मूर्फ़ि श्रितः। मूर्धा हृदंये। हृदंयं मियं। अहममृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (शिरः)

ईशांनो मे मुन्यौ श्रितः। मुन्युर्ह्दये। हृदयं मियं। अहमुमृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (हृदयम्)

अगुत्मा मं आत्मिनि श्रितः। आत्मा हृदये। हृदयं मिये। अहमुमृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (हृदयम्)

पुनर्म आत्मा पुन्रायुरागौत्। पुनः प्राणः पुन्राकूत्मागौत्।

वैश्वानरो र्श्मिभिर्वावृधानः। अन्तस्तिष्ठत्वमृतंस्य गोपाः॥ (सर्वाण्यङ्गानि संस्पृश्य स्थापनं कृत्वा मानसैराराधयेत्॥)

॥ आत्मपूजा ॥

आराधितो मनुष्यैस्त्वं सिद्धैर्देवासुरादिभिः। आराधयामि भक्त्या त्वाऽनुग्रहाण महेश्वर॥ ॥कलशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम्॥

ध्यायेन्निरामयं वस्तुं सर्गस्थितिलयादिकम्। निर्गुणं निष्कलं नित्यं मनोवाचामगोचरम्॥१॥

गङ्गाधरं शशिधरं जटामकुटशोभितम्। श्वेतभूतित्रिपुण्ड्रेण विराजितललाटकम्॥२॥ लोचनत्रयसम्पन्नं स्वर्णकुण्डलशोभितम्। स्मेराननं चतुर्बाहुं मुक्ताहारोपशोभितम्॥३॥

अक्षमालां सुधाकुम्भं चिन्मयीं मुद्रिकामपि। पुस्तकं च भुजैर्दिव्यैर्दधानं पार्वतीपतिम्॥४॥

श्वेताम्बरधरं श्वेतं रत्नसिंहासनस्थितम्। सर्वाभीष्टप्रदातारं वटमूलनिवासिनम्॥५॥ वामाङ्कसंस्थितां गौरीं बालार्कायुतसन्निभाम्। जपाकुसुमसाहस्रसमानश्रियमीश्वरीम् ।

सुवर्णरत्नखचितमकुटेन विराजिताम्॥६॥

ललाटपट्टसंराजत्संलग्नतिलकाश्चिताम् । राजीवायतनेत्रान्तां नीलोत्पलदलेक्षणाम्॥७॥ सन्तप्तहेमखचित-ताटङ्काभरणान्विताम्। ताम्बूलचर्वणरतरक्तजिह्वाविराजिताम् ॥८॥ पताकाभरणोपेतां मुक्ताहारोपशोभिताम्। स्वर्णकङ्कणसंयुक्तेश्चतुर्भिर्बाहुभिर्युताम् ॥९॥ सुवर्णरत्नखचित-काश्चीदामविराजिताम् कदलीललितस्तम्भ-सन्निभोरुयुगान्विताम्॥१०॥ श्रिया विराजितपदां भक्तत्राणपरायणाम्। अन्योन्याश्लिष्टहृद्वाह् गौरीशङ्करसंज्ञकम्॥११॥ सनातनं परं ब्रह्म परमात्मानमव्ययम्। आवाहयामि जगतामीश्वरं परमेश्वरम्॥१२॥ मङ्गलायतनं देवं युवानमति सुन्दरम्। ध्यायेत्कल्पतरोर्मूले सुखासीनं सहोमया॥१३॥ आगच्छाऽऽगच्छ भगवन् देवेश परमेश्वर। सिचदानन्द भूतेश पार्वतीश नमोऽस्तु ते॥१४॥

॥ षोडशोपचार पूजा॥

नमंस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त इषंवे नमंः। नमंस्ते अस्तु धन्वंने बाहुभ्यांमुत ते नमंः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। सुद्योजातं प्रंपद्यामि।

या त इषुंः शिवतंमा शिवं बभूवं ते धनुंः। शिवा शंर्व्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। सुद्योजाताय वै नमो नमंः। आसनं समर्पयामि॥२॥

या ते रुद्र शिवा तुनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तुनुवा शन्तंमया गिरिशन्ताभिचांकशीहि॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। भुवे भंवे नातिं भवे भवस्व माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभुष्यस्तेवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिर्सीः पुरुषं जगत्॥ ॐ हीं नुमः शिवाये। भुवोद्भेवाय नर्मः॥ अर्घ्यं समर्पयामि॥४॥

शिवेन वर्चसा त्वा गिरिशाच्छांवदामिस। यथां नः सर्विमिञ्जगंदयक्ष्म र सुमना असंत्॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। वामदेवाय नर्मः। आचमनीयं समर्पयामि॥५॥

अध्यंवोचदिधवृक्ता प्रंथमो दैव्यों भिषक्। अही ईश्च सर्वां अम्भय-स्थावां श्च यातुधान्यः॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। ज्येष्ठाय नर्मः। मधुपर्कं समर्पयामि॥६॥

असौ यस्ताम्रो अंरुण उत बुभुः सुंमुङ्गलंः। ये चेमा॰ रुद्रा अभितों दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषा॰ हेर्ड ईमहे॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। श्रेष्ठाय नर्मः। स्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥

असौ योऽवसपंति नीलंग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अंदश्त्रदंशन्नुदहार्यः। उतैनं विश्वां भूतानि स दृष्टो मृंडयाति नः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। रुद्राय नमः। वस्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषें। अथो ये अस्य सत्वांनोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। कालांय नमः। यज्ञोपवीताभरणानि समर्पयामि॥९॥

प्र मृंश्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्ह्नियोर्ज्याम्। याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप॥ ॐ हीं नमः शिवायं। कलंविकरणाय नमंः। दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥१०॥

अवतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमनां भव॥ ॐ हीं नुमः शिवाये। बलंविकरणाय नमः। पुष्पैः पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः। ॐ रहाय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः। ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ भहते देवाय नमः॥ ॐ भवस्य देवस्य पत्ये नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्ये नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्ये नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्ये नमः। ॐ ईशानस्य देवस्य पत्ये नमः। ॐ रहस्य देवस्य पत्ये नमः। ॐ रहस्य देवस्य पत्ये नमः। ॐ रहस्य देवस्य पत्ये नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्ये नमः। ॐ भीमस्य देवस्य पत्ये नमः। ॐ महतो देवस्य पत्ये नमः॥

विज्यं धर्नुः कपुर्दिनो विशंल्यो बाणवा । उत। अनेशन्न-

स्येषंव आभुरंस्य निष्क्षिथिः॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। बलाय नर्मः। धूपमाघ्रापयामि॥१२॥

या तें हेतिर्मीं ढुष्टम् हस्तें बुभूवं ते धर्नुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिब्युज॥ ॐ हीं नमः शिवाये। बलप्रमथनाय नमः। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ। नर्मस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवेँ। उभाभ्यांमुत ते नमों बाहुभ्यां तव धन्वंने॥ ॐ हीं नमः शिवायं। सर्वभूतदमनाय नर्मः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परिं ते धन्वंनो हेतिरस्मान्वृंणक्तु विश्वतः। अथो य इंषुधिस्तवाऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। मनोन्मंनाय नमः। कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि॥१५॥

नमंस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्त्कायं त्रिकाग्निकालायं कालाग्निरुद्रायं नीलकण्ठायं मृत्युञ्जयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवाय् नमंः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

॥ रक्षा॥

बृहथ्सामं क्षत्रभृद्वृद्ध वृष्णियं त्रिष्टभौजंः शुभितमुग्रवीरम्।

इन्द्रस्तोमेन पश्चद्शेन मध्यमिदं वातेन सगरेण रक्ष॥ रक्षां धारयामि॥

॥श्रीरुद्रनाम त्रिशती॥

नमो हिरंण्यबाहवे नमंः। सेनान्यें नमंः। दिशां च पतंये नमंः। नमों वृक्षेभ्यो नमंः। हरिकेशेभ्यो नर्मः। पुशूनां पत्ये नर्मः। नमः सस्पिञ्जराय नमः। त्विषीमते नमः। पथीनां पर्तये नमंः। नमों बभ्रुशाय नमंः। विव्याधिने नर्मः। अन्नानां पर्तये नर्मः। नमो हरिकेशाय नमंः। उपवीतिने नमंः। पुष्टानां पत्तये नर्मः। नर्मो भवस्य हेत्यै नर्मः। जगंतां पतंये नमंः। नमों रुद्राय नमंः। आतुताविने नर्मः। क्षेत्राणां पत्तये नर्मः। नर्मः सूताय नर्मः। अहंन्त्याय नर्मः। वनानां पत्तंये नमः। नमो रोहिताय नमः। स्थपतेये नर्मः। वृक्षाणां पत्रये नर्मः। नमों मन्त्रिणे नमः। वाणिजाय नमः। कक्षाणां पतिये नर्मः। नर्मो भुवन्तये नर्मः। वारिवस्कृताय नर्मः। ओषंधीनां पतंये नर्मः। नमं उचैघींषाय नमंः। आऋन्दयंते नमंः।

पत्तीनां पतिये नर्मः। नर्मः कृथ्स्रवीताय नर्मः। धावते नर्मः। सत्त्वनां पतिये नर्मः॥

नमः सहमानाय नमः। निव्याधिने नमः। आव्याधिनीनां पत्तंये नर्मः। नर्मः ककुभाय नर्मः। निषङ्गिणे नर्मः। स्तेनानां पतंये नर्मः। नमो निषङ्गिणे नमः। इषुधिमते नमः। तस्कराणां पत्ये नर्मः। नमो वश्चेते नर्मः। परिवर्श्वते नर्मः। स्तायूनां पत्तेये नर्मः। नमों निचेरवे नमंः। परिचराय नमंः। अरंण्यानां पतंये नर्मः। नर्मः सुकाविभ्यो नर्मः। जिघा रसद्यो नर्मः। मुष्णतां पत्तेये नर्मः। नमोऽसिमद्भो नर्मः। नक्तं चरद्भो नर्मः। प्रकृन्तानां पतंये नर्मः। नर्म उष्णीषिने नर्मः। गिरिचराय नर्मः। कुलुश्चानां पर्तये नर्मः। नम इषुमद्भो नमः। धन्वाविभ्यंश्च नमः। वो नमः। नमें आतन्वानेभ्यो नमें। प्रतिदर्धानेभ्यश्च नमें। वो नमें। नमं आयच्छं द्यो नमंः। विसृजद्यंश्च नमंः। वो नमंः। नमोऽस्यंद्र्यो नर्मः। विध्यंद्र्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नम आसीनेभ्यो नर्मः। शयानेभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नर्मः स्वपद्धो नर्मः। जाग्रंद्धश्च नर्मः। वो नर्मः। नमुस्तिष्ठं स्यो नर्मः। धावं स्यश्च नर्मः। वो नर्मः।

नर्मः सुभाभ्यो नर्मः। सुभापंतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमो अर्श्वभयो नर्मः। अर्श्वपतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः॥

नमं आव्याधिनींभ्यो नमंः। विविध्यंन्तीभ्यश्च नमंः। वो नर्मः। नम् उगंणाभ्यो नमंः। तुर्हतीभ्यंश्च नमंः। वो नमंः। नमों गृथ्सेभ्यो नमंः। गृथ्सपंतिभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नमो ब्रातेभ्यो नमंः। ब्रातंपतिभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नमों गणेभ्यो नमंः। गणपंतिभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नमो विरूपेभ्यो नर्मः। विश्वरूपेभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमों महन्द्यो नमः। क्षुष्ठकेभ्यश्च नमः। वो नमः। नमों रथिभ्यो नमंः। अरथेभ्यंश्च नमंः। वो नमंः। नमो रथेंभ्यो नमंः। रथंपतिभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नमः सेनाभ्यो नमः। सेनानिभ्यंश्च नमः। वो नमः। नमः क्षुत्तृभ्यो नमः। सङ्ग्रहीतृभ्यंश्च नमः। वो नमः। नमस्तक्षेभ्यो नर्मः। रथकारेभ्यंश्च नर्मः। वो नर्मः। नमः कुलालेभ्यो नर्मः। कर्मारैभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नर्मः पुञ्जिष्टेंभ्यो नर्मः। निषादेभ्यंश्च नर्मः। वो नर्मः। नमं इषुकृज्यो नमः। धन्वकृज्यंश्च नमः। वो नमः। नमों मृगयुभ्यो नमंः। श्वनिभ्यंश्च नमंः। वो नमंः। नमः श्वभ्यो नर्मः। श्वपंतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः॥

नमों भवायं च नमंः। रुद्रायं च नमंः। नमः शर्वायं च नमः। पशुपतंये च नमः। नमो नीलंग्रीवाय च नमंः। शितिकण्ठांय च नमंः। नर्मः कपर्दिने च नर्मः। व्युप्तकेशाय च नर्मः। नर्मः सहस्राक्षायं च नर्मः। शतधंन्वने च नर्मः। नमों गिरिशायं च नमंः। शिपिविष्टायं च नमंः। नमों मीढुष्टंमाय च नमंः। इषुंमते च नमंः। नमौं हस्वायं च नमंः। वामनायं च नमंः। नमों बृहते च नमंः। वर्षीयसे च नमंः। नमों वृद्धार्यं च नमंः। संवृध्वंने च नमंः। नमो अग्नियाय च नमंः। प्रथमाय च नमंः। नमं आशवें च नमंः। अजिरायं च नमंः। नमः शीघ्रियाय च नमः। शीभ्याय च नमः। नमं ऊर्म्याय च नमंः। अवस्वन्याय च नमंः। नमः स्रोतस्याय च नमः। द्वीप्याय च नमः॥

नमों ज्येष्ठायं च नमंः। कृतिष्ठायं च नमंः। नमंः पूर्वजायं च नमंः। अपुरजायं च नमंः। नमों मध्यमायं च नमंः। अपुर्गुल्भायं च नमंः। नमों जघन्याय च नमंः। बुध्नियाय च नमंः। नमंः सोभ्याय च नमंः। प्रतिसूर्याय च नमंः। नमो याम्याय च नमंः। क्षेम्याय च नमंः।
नमं उर्वर्याय च नमंः। खल्याय च नमंः।
नमः श्लोक्याय च नमंः। अवसान्याय च नमंः।
नमो वन्याय च नमंः। कक्ष्याय च नमंः।
नमंः श्र्वायं च नमंः। प्रतिश्र्वायं च नमंः।
नमं आशुर्षणाय च नमंः। आशुरंथाय च नमंः।
नमः शूराय च नमंः। अवभिन्दते च नमंः।
नमो वर्मिणे च नमंः। क्विभिने च नमंः।
नमो बिल्मिने च नमंः। क्विचिने च नमंः।
नमो श्रुतायं च नमंः। श्रुतसेनायं च नमंः।

नमों दुन्दुभ्यांय च नमंः। आहुन्न्यांय च नमंः। नमों धृष्णवें च नमंः। प्रमृशायं च नमंः। नमों दूतायं च नमंः। प्रहिताय च नमंः। नमों निष्किणे च नमंः। इषुधिमतें च नमंः। नमंस्तीक्ष्णेषंवे च नमंः। आयुधिनें च नमंः। नमंः स्वायुधायं च नमंः। सुधन्वंने च नमंः। नमः सुत्याय च नमंः। पथ्यांय च नमंः। नमः काट्यांय च नमंः। नीप्यांय च नमंः। नमः सूद्यांय च नमंः। स्रस्यांय च नमंः। नमः सूद्यांय च नमंः। वैश्वन्तायं च नमंः। नमः कूप्याय च नमः। अवट्याय च नमः। नमो वर्ष्याय च नमः। अवर्ष्यायं च नमः। नमो मेघ्याय च नमः। विद्युत्याय च नमः। नमं ई्रियाय च नमः। आत्प्याय च नमः। नमो वात्याय च नमः। रिष्मियाय च नमः। नमो वास्त्व्याय च नमः। वास्तुपायं च नमः॥

नमः सोमाय च नमः। रुद्रायं च नमः। नर्मस्ताम्रायं च नर्मः। अरुणायं च नर्मः। नमः शुङ्गायं च नमः। पृशुपतंये च नमः। नमं उग्रायं च नमंः। भीमायं च नमंः। नमों अग्रेवधायं च नमंः। दूरेवधायं च नमंः। नमों हन्ने च नमंः। हनीयसे च नमंः। नमों वृक्षेभ्यो नमंः। हरिकेशेभ्यो नमंः। नर्मस्ताराय नर्मः। नर्मः शम्भवे च नर्मः। मयोभवें च नर्मः। नर्मः शङ्करायं च नर्मः। मयस्करायं च नमंः। नमंः शिवायं च नमंः। शिवतंराय च नमंः। नमस्तीर्थ्याय च नमंः। कूल्याय च नर्मः। नर्मः पार्याय च नर्मः। अवार्याय च नर्मः। नर्मः प्रतरंणाय च नर्मः। उत्तरंणाय च नर्मः। नर्म आतार्याय च नर्मः।

आलाद्याय च नर्मः। नमः शष्य्याय च नर्मः। फेन्याय च नर्मः। नर्मः सिकत्याय च नर्मः। प्रवाह्याय च नर्मः॥

नमं इरिण्यांय च नमः। प्रपृथ्यांय च नमः। नमः कि शिलायं च नमः। क्षयंणाय च नमः। नमः कपर्दिने च नमः। पुलस्तये च नमः। नमो गोष्ठ्यांय च नमंः। गृह्यांय च नमंः। नमस्तल्प्याय च नर्मः। गेह्याय च नर्मः। नमः काट्याय च नमः। गह्वरेष्ठायं च नमः। नमौ ह्रदय्याय च नमंः। निवेष्याय च नमंः। नर्मः पारस्वयाय च नर्मः। रजस्याय च नर्मः। नमः शुष्क्याय च नमः। हरित्याय च नमः। नमो लोप्यांय च नमंः। उलप्यांय च नमंः। नमं ऊर्व्याय च नमंः। सूर्म्याय च नमंः। नमः पर्ण्याय च नमः। पर्णशद्याय च नमः। नमोऽपगुरमाणाय च नमः। अभिघ्नते च नमः। नमं आख्खिदते च नमंः। प्रख्खिदते च नमंः। नमों वो नर्मः। किरिकेभ्यो नर्मः। देवाना हदयेभ्यो नर्मः। नमो विक्षीणकेभ्यो नमंः। नमो विचिन्वत्केभ्यो नमंः।

नमं आनिर्हृतेभ्यो नमंः। नमं आमीवृत्केभ्यो नमंः।

॥ प्रदक्षिणम् ॥

द्रापे अन्धंसस्पते दरिंद्रज्ञीलंलोहित। एषां पुरुषाणामेषां पंशूनां मा भेमांऽरों मो एषां किं चनाऽऽममत्॥ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहंभेषजी। शिवा रुद्रस्यं भेषजी तयां नो मृड जीवसे॥ इमा रुद्रायं त्वसं कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभेरामहे मतिम्॥ यथां नः शमसंद्विपदे चतुंष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामें अस्मिन्ननांतुरम्॥ मृडा नों रुद्रोत नो मयंस्कृधि क्षयद्वीराय नर्मसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुरायजे पिता तदंश्याम् तवं रुद्र प्रणीतौ॥ मा नो महान्तंमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षंन्तमुत मा नं उक्षितम्। मा नों वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिषः॥ मा नंस्तोके तनंये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवंधीर्हविष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥ आरात्तं गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुम्नमस्मे ते अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव ब्रूह्यधां च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः॥ स्तुहि श्रुतं गंर्तुसदं युवानं मृगं न भीममुपह्लुमुग्रम्। मृडा जरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यन्ते अस्मन्निवंपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्यं हेतिर्वृणक्त परि त्वेषस्यं दुर्मतिरंघायोः। अवं स्थिरा मुघवंद्रयस्तनुष्व मीर्बस्तोकाय तनयाय मृडय॥ मीर्बुष्टम् शिवंतम शिवो नंः सुमनां भव। प्रमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान् आ चर् पिनांकं बिभ्रदा गंहि॥ विकिरिद् विलोहित् नमंस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्र हेतयोऽन्यम्स्मन्निवंपन्तु ताः॥ सहस्रांणि सहस्रधा बांहुवोस्तवं हेतयः। तासामीशांनो भगवः पराचीना मुखां कृधि॥ प्रदक्षिणं कृत्वा॥

॥ नमस्काराः ॥

सहस्रांणि सहस्रुशो ये रुद्रा अधि भूम्याँम्। तेषा १ सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥१॥

अस्मिन् मंहृत्यंर्ण्वें उन्तरिक्षे भवा अधि। तेषा १ सहस्रयोजने ऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥२॥

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शुर्वा अधः, क्षंमाचराः। तेषार् सहस्रयोज्नेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥३॥

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर् रुद्रा उपंश्रिताः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥४॥

ये वृक्षेषुं सस्पिञ्जरा नीलंग्रीवा विलोहिताः। तेषा ५

सहस्रयोज्नेऽव्धन्वांनि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥५॥

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥६॥

ये अन्नेषु विविध्यंन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥७॥

ये पृथां पंथिरक्षंय ऐलबृदा यृव्युर्धः। तेषार्रं सहस्रयोज्ने-ऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥८॥

ये तीर्थानि प्रचरेन्ति सृकावंन्तो निषक्षिणः। तेषार्थं सहस्रयोज्नेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥९॥

य पुतावंन्तश्च भूया १ सश्च दिशों रुद्रा विंतस्थिरे। तेषा १ सहस्रयोज्ने ऽव्धन्वांनि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥१०॥

नमीं रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषंवस्तेभ्यो दश् प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदींचीर्दशोध्वस्तिभ्यो नम्स्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥११॥

नमों रुद्रेभ्यो येंऽन्तरिक्षे येषां वात् इषंवस्तेभ्यो दश् प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदींचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमस्ते नों मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भें दधामि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥१२॥

नमों रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षिमषंवस्तेभ्यो दश् प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोध्वस्तिभ्यो नम्स्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥१३॥

नमस्कारान् कृत्वा॥



॥ चमकानुवाकैः प्रार्थना॥

अग्नांविष्णू स्जोषंसेमा वंधन्तु वां गिरं। द्युम्नैर्वाजेंभिरागंतम्॥ वार्जश्च मे प्रस्वश्चं मे प्रयंतिश्च मे प्रसिंतिश्च मे धीतिश्चं मे ऋतुंश्च मे स्वरंश्च मे श्लोकंश्च मे श्रावश्चं मे श्लातिश्च मे स्वंश्च मे प्राणश्चं मेऽपानश्चं मे व्यानश्च मेऽसुंश्च मे चित्तं चं म आधीतं च मे वार्क्च मे मनंश्च मे चश्चंश्च मे श्लोतं च मे दक्षंश्च मे बलं च म ओजंश्च मे सहंश्च म आयुंश्च मे ज्रा चं म आत्मा चं मे त्नूश्चं मे शर्मं च मे वर्म च मेऽङ्गांनि च मेऽस्थानिं च मे परूरंषि च मे शरीराणि च मे॥१॥

ज्यैष्ठ्यं च म् आधिपत्यं च मे मृन्युश्चं मे भामश्च मेऽमंश्च मेऽम्भंश्च मे जेमा चं मे महिमा चं मे विर्मा चं मे प्रथिमा चं मे वृष्मी चं मे द्राघुया चं मे वृद्धं चं मे वृद्धिंश्च मे सृत्यं चं मे श्रद्धा चं मे जगंच मे धनं च मे वशंश्व मे त्विषिश्व मे ऋीडा चं मे मोदंश्व मे जातं चं मे जिन्ष्यमाणं च मे सूक्तं चं मे सुकृतं चं मे वित्तं चं मे वेद्यं च मे भूतं चं मे भविष्यचं मे सुगं चं मे सुपथं च म ऋद्धं चं मृ ऋद्धिंश्व मे कृतं चं मे कृतिंश्व मे मतिश्वं मे सुमतिश्वं मे॥२॥

शं चं में मयंश्व में प्रियं चं मेऽनुकामश्चं में कामंश्व में सौमन्सश्चं में भूद्रं चं में श्रेयंश्व में वस्यंश्व में यशंश्व में भगंश्व में द्रविणं च में यन्ता चं में धूर्ता चं में क्षेमंश्व में धृतिश्व में विश्वं च में महंश्व में संविचं में ज्ञात्रं च में सूर्श्व में प्रसूश्चं में सीरं च में लयश्चं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच में जीवातृश्व में दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृतं च मेऽभयं च में सुगं चं में शयंनं च में सूषा चं में सुदिनं च मे॥३॥

ऊर्क मे स्नृतां च मे पर्यक्ष मे रसंश्व मे घृतं चं मे मधुं च मे सिथंश्व मे सपीतिश्व मे कृषिश्वं मे वृष्टिंश्व मे जैत्रं च म औद्धिंद्यं च मे रियश्वं मे रायंश्व मे पुष्टं चं मे पृष्टिंश्व मे विभु चं मे प्रभु चं मे बहु चं मे भूयंश्व मे पूर्णं चं मे पूर्णतंरं च मेऽक्षितिश्व मे कूयंवाश्व मेऽत्रं च मेऽक्षुंच मे व्रीहर्यश्च मे यवांश्व मे माषांश्व मे तिलांश्व मे मुद्राश्वं मे खुल्वांश्व मे गोधूमांश्व मे मुसुरांश्व मे प्रियङ्गंवश्व मेऽणंवश्व मे श्यामाकांश्व मे नीवारांश्व मे॥४॥ अश्मां च में मृतिंका च में गिरयंश्च में पर्वताश्च में सिकंताश्च में वनस्पतंयश्च में हिरंण्यं च मेऽयंश्च में सीसं च में त्रपृंश्च में श्यामं च में लोहं च मेऽग्निश्चं म आपंश्च में वीरुधंश्च म ओषंधयश्च में कृष्टपच्यं च मेऽकृष्टपच्यं च में ग्राम्याश्चं में प्शवं आर्ण्याश्चं यज्ञेनं कल्पन्तां वित्तं च में वित्तिंश्च में भूतं च में भूतिंश्च में वसुं च में वस्तिश्चं में कर्म च में शक्तिंश्च मेंऽर्थंश्च म एमंश्च म इतिंश्च में गितिश्च मे॥५॥

अग्निश्चं म् इन्द्रंश्च मे सोमंश्च म् इन्द्रंश्च मे सिवता चं म् इन्द्रंश्च मे सरंस्वती च म् इन्द्रंश्च मे पूषा चं म् इन्द्रंश्च मे बृह्स्पतिश्च म् इन्द्रंश्च मे मित्रश्चं म् इन्द्रंश्च मे वरुंणश्च म् इन्द्रंश्च मे त्वष्टां च म् इन्द्रंश्च मे धाता चं म् इन्द्रंश्च मे विष्णुंश्च म् इन्द्रंश्च मेऽिश्वनौं च म् इन्द्रंश्च मे म्रुतंश्च म् इन्द्रंश्च मे विश्वं च मे देवा इन्द्रंश्च मे पृथिवी चं म् इन्द्रंश्च मेऽिन्तरिक्षं च म् इन्द्रंश्च मे द्रोश्चं म् इन्द्रंश्च मे पूर्धा चं म् इन्द्रंश्च मे प्रजापतिश्च म् इन्द्रंश्च मे॥६॥

अर्शुश्चं मे र्शिमश्च मेऽदाँभ्यश्च मेऽधिंपतिश्च म उपार्शुश्चं मेऽन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं मे मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं मे प्रतिप्रस्थानंश्च मे शुक्तश्चं मे मृन्थी चं म आग्रयणश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे ध्रुवश्चं मे वैश्वान्रश्चं म ऋतुग्रहाश्चं मेऽतिग्राह्यांश्च म ऐन्द्राग्नश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे मरुत्वतीयाँश्च मे माहेन्द्रश्चं म आदित्यश्चं मे सावित्रश्चं मे सारस्वतश्चं मे पौष्णश्चं मे पात्नीवतश्चं मे हारियोजनश्चं मे॥७॥

इध्मश्चं मे बहिश्चं मे वेदिश्च मे धिष्णियाश्च मे सुचंश्च मे चम्साश्चं मे ग्रावाणश्च मे स्वरंवश्च म उपर्वाश्चं मेऽधिषवंणे च मे द्रोणकलुशश्चं मे वाय्व्यांनि च मे पूत्भृचं म आधवनीयंश्च म आग्नींग्नं च मे हिव्धांनं च मे गृहाश्चं मे सदंश्च मे पुरोडाशांश्च मे पच्ताश्चं मेऽवभृथश्चं मे स्वगाका्रश्चं मे॥८॥

अग्निश्चं मे घर्मश्चं मेऽर्कश्चं मे सूर्यंश्च मे प्राणश्चं मेऽश्वमेधश्चं मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्चं मे शक्वंरीर्ङ्गुलंयो दिशंश्च मे यज्ञेनं कल्पन्तामृक्चं मे सामं च मे स्तोमंश्च मे यज्ञंश्च मे दीक्षा चं मे तपंश्च म ऋतुश्चं मे वृतं चं मेऽहोरात्रयौर्वृष्ट्या बृंहद्रथन्तुरे चं मे यज्ञेनं कल्पेताम्॥९॥

गर्भाश्च मे वृथ्साश्चं मे त्र्यविश्च मे त्र्यवी चं मे दित्यवाचं मे दित्यौही चं मे पश्चाविश्च मे पश्चावी चं मे त्रिवृथ्सश्चं मे त्रिवृथ्सश्चं मे त्रिवृथ्सा चं मे तुर्यवाचं मे तुर्योही चं मे पष्टवाचं मे पष्टौही चं म उक्षा चं मे वृशा चं म ऋष्मश्चं मे वेहचं मेऽनुङ्वां चं मे धेनुश्चं म आयुंर्यज्ञेनं कल्पतां प्राणो यज्ञेनं कल्पतामपानो यज्ञेनं कल्पतां व्यानो यज्ञेनं कल्पतां चक्षुंर्यज्ञेनं कल्पतां श्रोत्रं यज्ञेनं कल्पतां मनो यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पतां यज्ञो यज्ञेनं कल्पतामाश्वा यज्ञेनं कल्पतां यज्ञो यज्ञेनं कल्पतामाश्वा

एकां च मे तिस्रश्चं मे पश्चं च मे स्प्त चं मे नवं च म एकांदश च मे त्रयोंदश च मे पश्चंदश च मे स्प्तदंश च मे नवंदश च म एकंविश्वातिश्च मे त्रयोंविश्वातिश्च मे पश्चंविश्वातिश्च मे स्प्तिविश्वातिश्च मे पश्चंविश्वातिश्च मे स्प्तिविश्वातिश्च मे नवंविश्वातिश्च मे एकंत्रिश्वाच मे त्रयंस्त्रिश्वाच मे चतंस्रश्च मे उष्टों चं मे द्वादंश च मे षोडंश च मे विश्वातिश्चं मे चतुंविश्वातिश्च मेऽष्टाविश्वातिश्च मे द्वात्रिश्च मे चतुंश्वत्वारिश्वाच मे पद्विश्वाचित्वारिश्वाच मे वार्जश्च प्रस्वश्चांपिजश्च कर्तुश्च सुवंश्च मूर्धा च व्यक्तियश्चाऽऽन्त्यायनश्चान्त्यंश्च भौवनश्च भुवंनश्चाधिपतिश्च॥११॥

महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥ इडां देवहूर्मनुंर्यज्ञनीर्बृह्स्पतिरुक्थाम्दानिं शश्सिषद्विश्वेंदेवाः सूँक्तवाचः पृथिवि मात्मां मां हिश्सीर्मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्याम् मधुं वदिष्याम् मधुंमतीं देवेभ्यो वाचंमुद्यासश् शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अवन्तु शोभाये पितरोऽनुंमदन्तु॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ तत्पुरुषाय विद्यहे महादेवायं धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयाँत्॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो-ऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ तत्पुरुंषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयाँत्॥ (दशवारं जपेत्।) महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥

॥ प्रार्थना ॥

॥श्रीरुद्रजपः॥

अस्य श्री-रुद्राध्याय-प्रश्न-महामन्नस्य। अघोर ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। सङ्कर्षणमूर्तिस्वरूपो योऽसावादित्यः परमपुरुषः स एष रुद्रो देवता॥ नमः शिवायेति बीजम्। शिवतरायेति शक्तिः। महादेवायेति कीलकम्। श्री-साम्बसदाशिवप्रसादसिद्धार्थे जपे विनियोगः॥

॥करन्यासः॥

ॐ अग्निहोत्रात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दर्शपूर्णमासात्मने तर्जनीभ्यां नमः। चातुर्मास्यात्मने मध्यमाभ्यां नमः। निरूढपशुबन्धात्मने अनामिकाभ्यां नमः। ज्योतिष्टोमात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सर्वऋत्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

॥अङ्गन्यासः॥

अग्निहोत्रात्मने हृदयाय नमः। दर्शपूर्णमासात्मने शिरसे स्वाहा। चातुर्मास्यात्मने शिखायै वषट्। निरूढपशुबन्धात्मने कवचाय हुं। ज्योतिष्टोमात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्। सर्वक्रत्वात्मने अस्त्राय फट्। भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः।

॥ध्यानम्॥

आपाताल-नभः-स्थलान्त-भुवन-ब्रह्माण्डमाविस्फुरत् ज्योतिः स्फाटिक-लिङ्ग-मौलि-विलसत्-पूर्णेन्दु-वान्तामृतैः। अस्तोकाप्नुतमेकमीशमनिशं रुद्रानुवाकान् जपन् ध्यायेदीप्सितसिद्धये ध्रुवपदं विप्रोऽभिषिश्चेच्छिवम्॥

ब्रह्माण्ड-व्याप्त-देहा भिसत-हिमरुचा भासमाना भुजङ्गेः कण्ठे कालाः कपर्दा-कलित-शिश-कलाश्चण्ड-कोदण्ड-हस्ताः। त्र्यक्षा रुद्राक्षमालाः प्रकटित-विभवाः शाम्भवा मूर्तिभेदाः रुद्राः श्रीरुद्रसूक्त-प्रकटित-विभवा नः प्रयच्छन्तु सौख्यम्॥

॥पश्चपूजा॥

लं पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि।

हं आकाशात्मने पूष्पैः पूजयामि।

यं वाय्वात्मने धूपमाघ्रापयामि।

रं अग्र्यात्मने दीपं दर्शयामि।

वं अमृतात्मने अमृतं महानैवेद्यं निवेदयामि।

सं सर्वात्मने सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति हवामहे कृविं केवीनामुंप-मश्रवस्तमम्।

ज्येष्ट्रराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नंः शृण्वन्नूतिभिंः सीद् सादेनम्॥

ॐ महागणपतये नमः॥

शं चं मे मयंश्व मे प्रियं चं मेऽनुकामश्चं मे कामंश्च मे सौमन्सश्चं मे भूद्रं चं मे श्रेयंश्च मे वस्यंश्च मे यशंश्च मे भगंश्च मे द्रविणं च मे यन्ता चं मे धूर्ता चं मे क्षेमंश्च मे धृतिंश्च मे विश्वं च मे महंश्च मे संविचं मे ज्ञात्रं च मे सूश्चं मे प्रसूश्चं मे सीरं च मे लयश्चं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च् मेऽनांमयच मे जीवातुंश्च मे दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृत्रं च मेऽभंयं च मे सुगं चं मे शयंनं च मे सूषा चं मे सुदिनं च मे॥३॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नमंस्ते रुद्र मृन्यवं उतो तु इषंवे नमंः। नमंस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नमः॥ या त इषुः शिवतंमा शिवं बभूवं ते धनुंः। शिवा शंख्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तनुवा शन्तंमया गिरिंशन्ताभिचांकशीहि॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तेवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिर्साः पुरुषं जगंत्॥ शिवेन वर्चसा त्वा गिरिशाच्छांवदामसि। यथां नः सर्वमिञ्जगंदयक्ष्म र सुमना असंत्॥ अध्यवोचदिधवक्ता प्रंथमो दैव्यों भिषक्। अही ईश्च सर्वां अम्भय-न्थ्सर्वांश्च यातुधान्यः॥ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभुः सुमङ्गलः। ये चेमा र रुद्रा अभितों दिक्षु श्रिताः संहस्रशोऽवैषा र हेर्ड ईमहे॥ असौ योंऽवसर्पति नीलंग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अंदशन्नदंशनुदहार्यः॥ उतैनं विश्वां भूतानि स दृष्टो मृंडयाति नः। नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषे॥ अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नर्मः। प्र मुश्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्नियोर्ज्याम्॥ याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप। अवतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष् शतेंषुधे॥ निशीर्यं शल्यानां मुखां शिवो नः सुमनां भव। विज्यं धनुः कपर्दिनो विशंल्यो बाणवा उत्। अनेशन्नस्येषंव आभुरंस्य निष्क्षिथिः। या ते हेतिर्मीं ढुष्टम् हस्ते बभूवं ते धनुः॥ तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमंयक्ष्मया परिन्धुज। नमंस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवे॥ उभाभ्यांमुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वंने। परि ते धन्वंनो हेतिर्स्मान्वृंणक्त विश्वतः॥ अथो य इंषुधिस्तवाऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥१॥

[नर्मस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्त्रकायं त्रिका[ला]ग्निकालायं कालाग्निरुद्रायं नीलकुण्ठायं मृत्युञ्जयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवाय नर्मः॥]

नमः सहंमानाय निव्याधिनं आव्याधिनीनां पतंये नमो

नमं आव्याधिनींभ्यो विविध्यंन्तीभ्यश्च वो नमो नम् उगंणाभ्यस्तृ ह्तीभ्यंश्च वो नमो नमो गृथ्सेभ्यो गृथ्सपंतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेंभ्यो व्रातंपतिभ्यश्च वो नमो नमो वर्क्षपेभ्यश्च वो नमो नमो विर्क्षपेभ्यश्च वो नमो नमो विर्क्षपेभ्यश्च वो नमो नमो पृथ्यें गृणपंतिभ्यश्च वो नमो नमो वर्ष्णभ्यश्च वो नमो नमो पृथ्यें उर्थभ्यंश्च वो नमो नमो रथेंभ्यो रथंपतिभ्यश्च वो नमो नमः सेनांभ्यः सेनानिभ्यंश्च वो नमो नमः, श्चत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यंश्च वो नमो नम्स्तक्षंभ्यो रथकारेभ्यंश्च वो नमो नमः कुलांलेभ्यः कुर्मारंभ्यश्च वो नमो नमः पुञ्जिष्टेंभ्यो नमः कुलांलेभ्यः कुर्मारंभ्यश्च वो नमो नमः पुञ्जिष्टेंभ्यो

निषादेभ्यंश्च वो नमो नमं इषुकृन्द्यो धन्वकृन्द्यंश्च वो नमो नमो मृग्युभ्यंः श्वनिभ्यंश्च वो नमो नमः श्वभ्यः श्वपंतिभ्यश्च वो नमः॥४॥

नमों भ्वायं च रुद्रायं च नमः श्वायं च पशुपतंये च नमो नीलंग्रीवाय च शितिकण्ठांय च नमः कप्रदिनं च व्यंप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षायं च श्तर्थन्वने च नमों गिरिशायं च शिपिविष्टायं च नमों मीद्धष्टंमाय चेषुंमते च नमों हुस्वायं च वामनायं च नमों बृह्ते च वर्षीयसे च नमों वृद्धायं च संवृध्वंने च नमो अग्नियाय च प्रथमायं च नमं आशवं चाजिरायं च नमः शीप्तियाय च शीभ्याय च नमं ऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमः स्रोतस्याय च द्वीप्याय च॥५॥

नमों ज्येष्ठायं च किन्छायं च नमें पूर्वजायं चापरजायं च नमों मध्यमायं चापगल्भायं च नमों जघन्यांय च बिग्नयांय च नमें सोभ्यांय च प्रतिस्यांय च नमो याम्यांय च क्षेम्यांय च नमें उर्व्यांय च खल्यांय च नमः श्लोक्यांय चावसान्यांय च नमो वन्यांय च कक्ष्यांय च नमः श्लवायं च प्रतिश्लवायं च नमें आशुषेणाय चाशुरंथाय च नमः शूरांय चावभिन्दते च नमों वर्मिणे च वर्ष्णिने च नमों बिल्मिने च कविने च नमेः श्रुतायं च श्रुतसेनायं च॥६॥

नमों दुन्दुभ्यांय चाऽऽहन्नयांय च नमों धृष्णवें च प्रमृशायं

च नमों दूतायं च प्रहिंताय च नमों निषक्षिणे चेषुधिमतें च नमंस्तीक्ष्णेषंवे चाऽऽयुधिनें च नमः स्वायुधायं च सुधन्वंने च नमः सुत्यांय च पथ्यांय च नमः काट्यांय च नीप्यांय च नमः सूद्यांय च सर्स्यांय च नमों नाद्यायं च वैश्वन्तायं च नमः कूप्यांय चावट्यांय च नमो वर्ष्यांय चावर्ष्यायं च नमों मेघ्यांय च विद्युत्यांय च नमं ईप्रियांय चाऽऽतप्यांय च नमो वात्यांय च रेष्मियाय च नमों वास्त्व्यांय च वास्तुपायं च॥७॥

नमः सोमांय च रुद्रायं च नमंस्ताम्रायं चारुणायं च नमंः शुङ्गायं च पशुपतंये च नमं उग्रायं च भीमायं च नमों अग्रेवधायं च दूरेवधायं च नमों हुन्ने च हनीयसे च नमों वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमंस्ताराय नमः शुम्भवें च मयोभवें च नमः शङ्करायं च मयस्करायं च नमः शिवायं च शिवतंराय च नम्स्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरंणाय चोत्तरंणाय च नमं आतार्याय चाऽऽलाद्यांय च नमः शष्यांय च फेन्यांय च नमः सिक्त्यांय च प्रवाह्यांय च नाः शष्यांय च फेन्यांय च नमः सिक्त्यांय च प्रवाह्यांय च नाः शष्यांय च फेन्यांय च नमः सिक्त्यांय च प्रवाह्यांय च नाः शष्यांय च फेन्यांय च नमः सिक्त्यांय च प्रवाह्यांय च नाः शष्यांय च फेन्यांय च नमः सिक्त्यांय च प्रवाह्यांय च नाः शष्यांय च फेन्यांय च नमः सिक्त्यांय च प्रवाह्यांय च नाः स्वाह्यांय च प्रवाह्यांय च नाः सिक्त्यांय च प्रवाह्यांय च नाः स्वाह्यांय च प्रवाह्यांय च प्रवाह्यांय च नाः सिक्त्यांय च प्रवाह्यांय च नाः स्वाह्यांय च प्रवाह्यांय च

नमं इरिण्यांय च प्रपृथ्यांय च नमः किश्शिलायं च क्षयंणाय च नमः कप्रदिनं च पुलस्तयं च नमो गोष्ठ्यांय च गृह्यांय च नम्स्तल्प्यांय च गेह्यांय च नमः काट्यांय च गह्वरेष्ठायं च नमों हृद्य्यांय च निवेष्प्यांय च नमः पा॰स्व्याय च रज्स्याय च नमः शुष्क्याय च हिर्त्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च नमे ऊर्व्याय च सूर्म्याय च नमः पूर्ण्याय च पर्णश्चाय च नमोऽपगुरमाणाय चाभिघृते च नमे आख्खिदते च प्रख्खिदते च नमो वः किरिकेभ्यो देवाना ह हृदयेभ्यो नमो विक्षीणकेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमं आनिरहतेभ्यो नमं आमीवत्केभ्यः॥९॥

द्रापे अन्धेसस्पते दरिंद्रज्ञीलंलोहित। एषां पुरुषाणामेषां पंशूनां मा भेर्माऽरो मो एंषां किं चनाऽऽमंमत्॥ या तें रुद्र शिवा तुनूः शिवा विश्वाहंभेषजी। शिवा रुद्रस्यं भेषजी तयां नो मृड जीवसे॥ इमा रद्रायं तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभेरामहे मृतिम्॥ यथां नः शमसंद्विपदे चतुंष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामें अस्मिन्ननांतुरम्॥ मृडा नों रुद्रोत नो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमंसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुरायजे पिता तदंश्याम तवं रुद्र प्रणीतौ॥ मा नों महान्तंमुत मा नों अर्भकं मा न उक्षंन्तमुत मा नं उक्षितम्। मा नों वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिषः॥ मा नंस्तोके तनये मा न् आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितो वंधीर्हविष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥ आरात्तं गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुम्नमस्मे ते अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव ब्रूह्यधां च नुः शर्म यच्छ द्विबर्हाः॥ स्तुहि श्रुतं गंर्तसदं युवानं मृगं न भीममुंपहलुमुग्रम्। मृडा जीरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यं ते अस्मन्नि वंपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्यं हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्यं दुर्मितरंघायोः। अवं स्थिरा मघवंद्र्यस्तनुष्व मीद्वंस्तोकाय तनयाय मृडय॥ मीद्वंष्टम् शिवंतम शिवो नः सुमनां भव। प्रमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान आचर् पिनांकं बिभ्रदा गंहि॥ विकिरिद् विलोहित नमंस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्र हेतयोऽन्यम्स्मन्नि वंपन्तु ताः॥ सहस्रांणि सहस्रधा बांहुवोस्तवं हेतयः। तासामीशांनो भगवः पराचीना मुखां कृधि॥१०॥

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषा ५ सहस्रयोजनेऽव धन्वांनि तन्मसि॥ अस्मिन् महत्यंर्णवें-ऽन्तरिक्षे भवा अधि॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः, क्षंमाचराः॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर्५ रुद्रा उपंश्रिताः॥ ये वृक्षेषुं सस्पिञ्जरा नीलंग्रीवा विलोहिताः॥ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः॥ ये अन्नेषु विविध्यंन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्॥ ये पथां पंथिरक्षंय ऐलबुदा युव्युधंः॥ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावंन्तो निषुङ्गिणंः॥ य पुतावंन्तश्च भूयार्सश्च दिशों रुद्रा विंतस्थिरे॥ तेषा १ सहस्रयोजनेऽव धन्वांनि तन्मसि॥ नमों रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येंऽन्तरिक्षे ये दिवि येषामन्नं वातों वर्षमिषंवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदींचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमस्ते नों मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भें दधामि॥११॥

[त्र्यंम्बकं यजामहे सुग्नियं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव् बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतांत्॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अपसु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥ तमृष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वंस्य क्षयंति भेषजस्यं।

(ऋक्) यक्ष्वांमहे सौंमन्सायं रुद्रं नमोंभिर्देवमसुंरं दुवस्य॥ अयं मे हस्तो भगवान्यं मे भगवत्तरः। अयं मैं विश्वभैंषजोऽयं शिवाभिंमर्शनः॥

ये ते सहस्रंम्युतं पाशा मृत्यो मर्त्याय हन्तंवे। तान् यज्ञस्यं मायया सर्वानवं यजामहे। मृत्यवे स्वाहां मृत्यवे स्वाहां॥ ओं नमो भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्युंर्मे पाहि। प्राणानां ग्रन्थिरिस रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनांप्यायस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंर्मे पाहि॥]

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



॥ चमकप्रश्नः॥

अग्नांविष्णू स्जोषंसेमा वंधन्तु वां गिरंः। द्युम्नैर्वाजंभिरा-गंतम्॥ वाजंश्व मे प्रस्वश्चं मे प्रयंतिश्च मे प्रसिंतिश्च मे धीतिश्चं मे ऋतुंश्च मे स्वरंश्च मे श्लोकंश्च मे श्रावश्चं मे श्रुतिंश्च मे ज्योतिंश्च मे सुवंश्च मे प्राणश्चं मेऽपानश्चं मे व्यानश्च मेऽस्ंश्च मे चित्तं चं म् आधीतं च मे वाक्रं मे मनंश्च मे चक्षुंश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षंश्च मे बलं च म् ओजंश्च मे सहंश्च म् आयंश्च मे ज्ञरा चं म आत्मा चं मे तुनूश्चं मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गांनि च मेऽस्थानिं च मे परूरंषि च मे शरीराणि च मे॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्।

नीराजनम्— यो देवानां प्रथमं पुरस्ताद्विश्वाधियों रुद्रो महर्षिः।

हिर्ण्यगर्भं पंश्यत् जायंमान् स नो देवः शुभया स्मृत्याः संयुनक्तु॥

अनेन प्रथम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>महादेवः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥

ज्यैष्ठ्यं च म् आधिपत्यं च मे मृन्युश्चं मे भामश्च मेऽमंश्च मेऽम्भंश्च मे जेमा चं मे मिह्मा चं मे विर्मा चं मे प्रिथमा चं मे वृष्मा चं मे द्राघुया चं मे वृद्धं चं मे वृद्धिश्च मे सृत्यं चं मे श्रृद्धा चं मे जगंच मे धनं च मे वशंश्च मे त्विषिश्च मे कीडा चं मे मोदंश्च मे जातं चं मे जिन्ष्यमाणं च मे सूक्तं चं मे सुकृतं चं मे वित्तं चं मे वेद्यं च मे भूतं चं मे भविष्यचं मे सुगं चं मे सुपथं च म ऋद्धं चं मृ ऋद्धिंश्च मे कृतं चं मे कृतिंश्च मे मृतिश्चं मे सुमृतिश्चं मे॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्।

नीराजनम्— यस्मात्परं नापंरमस्ति किश्चिद्यस्मान्नाणीयो न ज्यायोऽस्ति कश्चित्।

वृक्ष इंव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येक्स्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम्॥ अनेन द्वितीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः शिवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥२॥

शं चं में मयंश्व में प्रियं चं मेऽनुकामश्चं में कामंश्व में सौमन्सश्चं में भूद्रं चं में श्रेयंश्व में वस्यंश्व में यशंश्व में भगंश्व में द्रविणं च में यन्ता चं में धूर्ता चं में क्षेमंश्व में धृतिश्व में विश्वं च में महंश्व में संविचं में ज्ञात्रं च में सूश्वं में प्रसूश्चं में सीरं च में लयश्चं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच में जीवातृश्व में दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृत्रं च मेऽभंयं च में सुगं चं में शयंनं च में सूषा चं में सुदिनंं च मे॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। नीराजनम्— न कर्मणा न प्रजया धर्नेन त्यागेंनैके अमृत्त्वमांन्शुः।

परेण नाकं निहितं गुहांयां विभाजंदेतद्यतंयो विशन्तिं॥ अनेन तृतीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>श्री-रुद्रः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥३॥

ऊर्क मे सूनृतां च मे पर्यश्च मे रसंश्च मे घृतं चं मे मधुं च मे सिर्धिश्च मे सपींतिश्च मे कृषिश्चं मे वृष्टिश्च मे जैत्रं च म् औद्भिंद्यं च मे र्यिश्चं मे रायश्च मे पुष्टं चं मे पृष्टिश्च मे विभ चं मे प्रभ चं मे बहु चं मे भूयश्च मे पूर्णं चं मे पूर्णतंरं च मेऽक्षिंतिश्च मे कूयंवाश्च मेऽन्नं च मेऽक्षेच मे व्रीहर्यश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्राश्चं मे खुल्वाश्च मे गोधूमाश्च मे मसुराश्च मे प्रियङ्गंवश्च मेऽणंवश्च मे श्यामकाश्च मे नीवाराश्च मे॥

भूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्।

नीराजनम्— वेदान्त्विज्ञान्सुनिश्चितार्थाः सन्त्यांस योगाद्यतंयः शुद्धसत्त्वाः।

ते ब्रंह्मलोके तु पराँन्तकाले परांमृतात्परिंमुच्यन्ति सर्वे॥ अनेन चतुर्थ-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः शङ्करः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥४॥

अश्मां च में मृत्तिका च में गि्रयंश्व में पर्वताश्च में सिकंताश्च में वनस्पतियश्च में हिरंण्यं च मेऽयंश्च में सीसं च में त्रपृंश्च में श्यामं च में लोहं च मेऽग्निश्चं म् आपंश्च में वी्रधंश्च म् ओषंधयश्च में कृष्टपच्यं च मेऽकृष्टपच्यं च में ग्राम्यार्श्च में पृशवं आर्ण्यार्श्च युज्ञेनं कल्पन्तां वित्तं च में वित्तिश्च में भूतिश्च में वस्तिश्चं में कर्म च में शक्तिश्च में प्रतिश्च म् एमंश्च म् इतिश्च में गितिश्च में। धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। नीराजनम्— दहं विपापं प्रमेंऽश्मभूतं यत्पुण्डरीकं

पुरमध्यस् इस्थम्। तृत्रापि दृहं गृगनं विशोकस्तस्मिन् यद्न्तस्तदुपांसित्व्यम्॥ अनेन पश्चम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>नीललोहितः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥५॥

अग्निश्चं म् इन्द्रंश्च मे सोमंश्च म् इन्द्रंश्च मे सिवृता चं म् इन्द्रंश्च मे सरंस्वती च म् इन्द्रंश्च मे पूषा चं म् इन्द्रंश्च मे बृह्स्पतिश्च म् इन्द्रंश्च मे मित्रश्चं म् इन्द्रंश्च मे वरुणश्च म् इन्द्रंश्च मे त्वष्टां च म् इन्द्रंश्च मे धाता चं म् इन्द्रंश्च मे विष्णुंश्च म् इन्द्रंश्च मेऽिश्वनौं च म् इन्द्रंश्च मे म्रुतंश्च म् इन्द्रंश्च मे विश्वं च मे देवा इन्द्रंश्च मे पृथिवी चं म् इन्द्रंश्च मे प्रिन्तिश्चं च म् इन्द्रंश्च मे द्रांश्च म् इन्द्रंश्च मे पूर्वा चं म् इन्द्रंश्च मे प्रजापंतिश्च म् इन्द्रंश्च मे॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्।

नीराजनम्— यो वेदादौ स्वंरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः। तस्यं प्रकृतिंलीनस्य यः परंः स महेश्वरः॥

अनेन षष्ठम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>ईशानः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥६॥

अ्शुश्चं मे र्शिमश्च मेऽदाँभ्यश्च मेऽधिंपतिश्च म उपा्रश्चश्चं मेऽन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं मे मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्तश्चं मे मृन्थी चं म आग्रयणश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे ध्रुवश्चं मे वैश्वान्रश्चं म ऋतुग्रहाश्चं मेऽतिग्राह्यांश्च म ऐन्द्राग्नश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे मरुत्वतीयांश्च मे माह्नेन्द्रश्चं म आदित्यश्चं मे सावित्रश्चं मे सारस्वतश्चं मे पौष्णश्चं मे पात्नीवतश्चं मे हारियोजनश्चं मे॥ भूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्।

नीराजनम्— सुद्योजातं प्रंपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥ अनेन सप्तम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>विजयः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥७॥

इध्मश्चं मे बहिंश्चं मे वेदिश्च मे धिष्णियाश्च मे सुचंश्च मे चम्साश्चं मे ग्रावाणश्च मे स्वरंवश्च म उपर्वाश्चं मेऽधिषवंणे च मे द्रोणकलुशश्चं मे वायव्यांनि च मे पूत्भृचं म आधवनीयंश्च म आग्नींग्नं च मे हिव्धांनं च मे गृहाश्चं मे सदंश्च मे पुरोडाशांश्च मे पच्ताश्चं मेऽवभृथश्चं मे स्वगाका्रश्चं मे॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्।

नीराजनम्— वामदेवाय नमौं ज्येष्ठाय नमेः श्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालाय नमः कलंविकरणाय नमो बलंविकरणाय नमो बलाय नमो बलंप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमों मनोन्मनाय नमः॥

अनेन अष्टम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>भीमः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥८॥

अग्निश्चं मे घर्मश्चं मेऽर्कश्चं मे सूर्यश्च मे प्राणश्चं मेऽश्वमेधश्चं मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्चं मे शक्वंरीर्ङ्गुलंयो दिशंश्च मे युज्ञेनं कल्पन्तामृक्षं मे सामं च मे स्तोमंश्च मे यज्ञंश्च मे दीक्षा चं मे तपंश्च म ऋतुश्चं मे वृतं चं मेऽहोरात्रयोंर्वृष्ट्या बृहद्रथन्त्रे चं मे युज्ञेनं कल्पेताम्॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। नीराजनम्— अघोरैंभ्योऽथ् घोरैंभ्यो घोर्घोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वृशर्वेभ्यो नमंस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ अनेन नवम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>देवदेवः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥९॥

गर्भाश्च मे वृथ्साश्चं मे त्र्यविश्च मे त्र्यवी चं मे दित्यवाचं मे दित्यौही चं मे पश्चाविश्च मे पश्चावी चं मे त्रिवृथ्सश्चं मे त्रिवृथ्सश्चं मे त्रिवृथ्सा चं मे तुर्यवाचं मे तुर्योही चं मे पष्टवाचं मे पष्टौही चं म उक्षा चं मे वृशा चं म ऋष्मश्चं मे वृहचं मेऽनृङ्वां चं मे धेनुश्चं म आयुंर्यज्ञेनं कल्पतां प्राणो यज्ञेनं कल्पतामपानो यज्ञेनं कल्पतां व्यानो यज्ञेनं कल्पतां चश्चंर्यज्ञेनं कल्पतां श्रोतं यज्ञेनं कल्पतां मनों यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पतां यज्ञो यज्ञेनं कल्पताम्॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। नीराजनम्— तत्पुरुषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥

अनेन दशम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>भवोद्भवः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१०॥ एकां च मे तिस्रश्चं मे पश्चं च मे स्प्त चं मे नवं च म एकांदश च मे त्रयोंदश च मे पश्चंदश च मे स्प्तदंश च मे नवंदश च म एकंविश्शितिश्च मे त्रयोंविश्शितिश्च मे पश्चंविश्शितिश्च मे स्प्तिविश्शितिश्च मे नवंविश्शितिश्च म एकंत्रिश्शच मे त्रयंस्त्रिश्शच मे चतंस्त्रश्च मेऽष्टौ चं मे द्वादंश च मे षोडंश च मे विश्शितिश्चं मे चतुंविश्शितिश्च मेऽष्टाविश्शितिश्च मे द्वात्रिश्शच मे षद्गिश्शिच मे चत्वारिश्शचं मे चतुंश्चत्वारिश्शच मेऽष्टाचंत्वारिश्शच मे वार्जश्च प्रस्वश्चांपिजश्च ऋतुंश्च सुवंश्च मूर्धा च् व्यश्चियश्चाऽऽन्त्यायुनश्चान्त्यंश्च भौवनश्च भुवंनश्चाधिपतिश्च॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्।

नीराजनम्— ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ अनेन एकादश-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः आदित्यात्मकः श्री-रुद्रः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥११॥

[इडां देवहूर्मनुंर्यज्ञनीर्बृह्स्पतिंरुक्थामदानिं शश्सिष्द्विश्वं-देवाः सूँक्तवाचः पृथिवि मात्मा मां हिश्सीर्मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं वदिष्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वाचमुद्यासश् शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अवन्तु शोभाये पितरोऽनुंमदन्तु॥]

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ रुद्रपद्पाठः॥

ॐ। गणानांम्। त्वा। गुणपंतिमितिं गुण-पृतिम्। हवामुहे। कविम्। कवीनाम्। उपमश्रंवस्तममित्युंपमश्रंवः-तमम्॥ ज्येष्ठराजमिति ज्येष्ठ-राजम्। ब्रह्मणाम्। ब्रह्मणः। पते। एतिं। नः। शृण्वन्। ऊतिभिरित्यूति-भिः। सीद। सादंनम्॥ नमंः। ते। रुद्र। मन्यवैं। उतो इतिं। ते। इषवे। नमंः॥ नर्मः। ते। अस्तु। धन्वंने। बाहुभ्यामितिं बाहु-भ्याम्। उता ते। नमंः॥ या। ते। इषुंः। शिवतमेति शिव-तमा। शिवम्। बभूवं। ते। धर्नुः॥ शिवा। शरव्यां। या। तवं। तयाँ। नः। रुद्रा मृड्यू॥ या। ते। रुद्रा शिवा। तुनूः। अघोरा। अपांपकाशिनीत्यपांप-काशिनी॥ तयाँ। नः। तनुवाँ। शन्तंमयेति शम्-तमया। गिरिंशन्तेति गिरिं-शन्ता अभीतिं। चाकशीहि॥ याम्। इषुम्ं। गिरिशन्तेतिं गिरि-शन्त। हस्तेंं। (१)

बिर्भर्षि। अस्तंवे॥ शिवाम्। गिरित्रेतिं गिरि-त्र। ताम्। कुरु। मा। हिर्सीः। पुरुषम्। जगंत्॥ शिवेनं। वर्चसा। त्वा। गिरिशा अच्छां। वृदामसि॥ यथां। नः। सर्वम्ं। इत्। जगंत्। अयक्ष्मम्। सुमना इतिं सु-मनाः। असंत्॥ अधीति। अवोच्त्। अधिवक्तेत्यंधि-वक्ता। प्रथमः। दैव्यः। भिषक्॥ अहीन्ं। च्। सर्वान्ं। जम्भयन्ं। सर्वाः। च। यातुधान्यं इतिं यातु-धान्यः॥ असौ। यः। ताम्रः। अरुणः। उत। बुभुः।

सुमङ्गल इति सु-मङ्गलेः॥ ये। च। इमाम्। रुद्राः। अभितः। दिक्षु। (२)

श्रिताः। सहस्रश इति सहस्र-शः। अवेति। एषाम्। हेर्डः। ईमहे॥ असौ। यः। अवसर्पतीत्यंव-सर्पति। नीलंग्रीव इति नीलं-ग्रीवः। विलोहित् इति वि-लोहितः॥ उत्त। एनुम्। गोपा इतिं गो-पाः। अदृश्न्। अदृशन्। उदहार्यं इत्युंद-हार्यः॥ उत। एनम्। विश्वां। भूतानिं। सः। दृष्टः। मृडयाति। नः॥ नर्मः। अस्तु। नीलंग्रीवायेति नीलं-ग्रीवाय। सहस्राक्षायेतिं सहस्र-अक्षायं। मीदुषे॥ अथो इति। ये। अस्य। सत्वानः। अहम्। तेभ्यः। अकरम्। नमः॥ प्रेतिं। मुश्च। धन्वंनः। त्वम्। उभयौः।

आर्त्नियोः। ज्याम्॥ याः। च। ते। हस्ते इषंवः। (३)

परेतिं। ताः। भगव इति भग-वः। वप्॥ अवृतत्येत्यंव-तत्यं। धनुंः। त्वम्। सहंस्राक्षेति सहंस्र-अक्ष्। शतेंषुध इति शतं-इषुधे॥ निशीर्येतिं नि-शीर्यं। शल्यानांम्। मुखां। शिवः। नः। सुमना इति सु-मनाः। भवा विज्यमिति वि-ज्यम्। धर्नुः। कपर्दिनः। विशंल्य इति वि-शल्यः। बाणंवानिति बाणं-वान्। उता अनेशन्। अस्य। इर्षवः। आभुः। अस्य। निषङ्गर्थिः॥ या। ते। हेतिः। मीढुष्टमेतिं मीढुः-तम्। हस्तैं। बुभूवं। ते। धनुः॥ तया। अस्मान्। विश्वतः। त्वम्। अयुक्ष्मया। परीति। भुज्॥ नर्मः। ते। अस्तु। आयुधाय। अनांततायेत्यनां-

त्ताय। धृष्णवें॥ उभाभ्यांम्। उत। ते। नमंः। बाहुभ्यामितिं बाहु-भ्याम्। तवं। धन्वंने॥ परीतिं। ते। धन्वंनः। हेतिः। अस्मान्। वृण्कु। विश्वतंः॥ अथो इतिं। यः। इषुधिरितींषु-धिः। तवं। आरे। अस्मत्। नीतिं। धेहि। तम्॥ (४)

नमंः। हिरंण्यबाहव इति हिरंण्य-बाहवे। सेनान्यं इतिं सेना-न्यै। दिशाम्। च। पत्ये। नमः। नमः। वृक्षेभ्यः। हरिकेशेभ्य इति हरि-केशेभ्यः। पुशूनाम्। पत्तेये। नर्मः। नमंः। सस्पिञ्जराय। त्विषीमत् इति त्विषी-मते। पृथीनाम्। पतंथे। नमंः। नमंः। बुभुशायं। विव्याधिन इति वि-व्याधिने। अन्नानाम्। पत्ये। नर्मः। नर्मः। हरिकेशायेति हरि-केशाय। उपवीतिन् इत्युंप-वीतिनैं। पुष्टानांम्। पतये। नर्मः। नर्मः। भवस्यं। हेत्ये। जगताम्। पत्ये। नर्मः। नर्मः। रुद्रायं। आतताविन इत्याँ-तताविनें। क्षेत्रांणाम्। पतंये। नमंः। नमंः। सूतायं। अहंन्त्याय। वनानाम्। पत्तये। नर्मः। नर्मः। (५) रोहिताय। स्थपतये। वृक्षाणांम्। पतये। नर्मः। नमंः। मुन्त्रिणै। वाणिजायं। कक्षांणाम्। पतंये। नमंः। नमंः। भुवन्तयें। वारिवस्कृतायेतिं वारिवः-कृतायं। ओषंधीनाम्। पतंये। नमंः। नमंः। उचैर्घोषायेत्युचैः-घोषाय। आकुन्दयंतु इत्यां-कुन्दयंते। पृत्तीनाम्। पत्ये। नर्मः। नर्मः। कृथ्स्वीतायेतिं कृथ्स्न-वीतायं। धावते। सत्वनाम्। पत्रये। नर्मः॥ (६)

नमंः। सहंमानाय। निव्याधिन इतिं नि-व्याधिनें। आव्याधिनींनामित्यां-व्याधिनींनाम्। पतंये। नमंः। नमंः। ककुभायं। निषङ्गिण इति नि-सङ्गिनै। स्तेनानौम्। पत्रये। नमंः। नमंः। निषङ्गिण इतिं नि-सङ्गिनैं। इषुधिमत इतींषुधि-मतें। तस्कराणाम्। पत्रये। नमंः। नमंः। वश्चते। परिवर्श्चत इति परि-वश्चते। स्तायूनाम्। पत्तये। नर्मः। नमेः। निचेरव इति नि-चेरवें। परिचरायेति परि-चरायं। अरंण्यानाम्। पतंये। नर्मः। नर्मः। सृकाविभ्य इति सृकावि-भ्यः। जिघा रसद्भ इति जिघार सत्-भ्यः। मुष्णुताम्। पत्ये। नमंः। नमंः। असिमद्ध इत्यंसिमत्-भ्यः। नक्तम्। चरद्ध इति चरत्-भ्यः। प्रकृन्तानामिति प्र-कृन्तानाम्। पत्ये। नमः। नर्मः। उष्णीषिणै। गिरिचरायेतिं गिरि-चरायं। कुलुश्चानाम्। पतंये। नर्मः। नर्मः। (७)

इषुंमद्र्य इतीषुंमत्-भ्यः। धन्वाविभ्य इति धन्वावि-भ्यः। च। वः। नमः। नमः। आत्नवानेभ्य इत्याँ-त्नवानेभ्यः। प्रतिद्धानेभ्य इति प्रति-द्धानेभ्यः। च। वः। नमः। नमः। आयच्छंद्र्य इत्यायच्छंत्-भ्यः। विसृजद्र्य इति विसृजत्-भ्यः। च। वः। नमः। नमः। अस्यद्र्य इत्यस्यंत्-भ्यः। विध्यद्र्य इति विध्यंत्-भ्यः। च। वः। नमः। नमः। आसीनेभ्यः। शयानेभ्यः। च। वः। नमः। नमः। स्वपद्र्य इति स्वपत्-भ्यः। जाग्रद्र्य इति जाग्रंत्-भ्यः। च। वः। नमः। नमः। तिष्ठद्र्य इति तिष्ठंत्-भ्यः। धावंद्र्य इति धावंत्-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। स्भाभ्यः। स्भापंतिभ्य इति स्भापंति-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। अश्वेभ्यः। अश्वंपतिभ्य इत्यश्वंपति-भ्यः। च। वः। नर्मः॥ (८)

नमंः। आव्याधिनींभ्य इत्यां-व्याधिनींभ्यः। विविध्यंन्तीभ्यः। इति वि-विध्यंन्तीभ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। उगंणाभ्यः। तृ श्हृतीभ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। गृथ्सेभ्यः। गृथ्सपंतिभ्यः इति गृथ्सपंतिभ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। व्रातेंभ्यः। व्रातंपितिभ्यः इति व्रातंपितिभ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। नमंः। गृणेभ्यः। गृणपंतिभ्यः इति गृणपंति-भ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। नमंः। विरूपेभ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। विरूपेभ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। महन्द्र्यः इति महत्भ्यः। श्रुष्ठकेभ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। गृणेभ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। पृथिभ्यः इति पृथि-भ्यः। अपृथेभ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। पृथिभ्यः इति पृथि-भ्यः। अपृथेभ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। पृथिभ्यः (९)

रथंपतिभ्य इति रथंपति-भ्यः। च। वः। नमः। नमः। सेनाभ्यः। सेनाभ्यः। सेनानिभ्य इति सेनानि-भ्यः। च। वः। नमः। नमः। श्रृत्यः इति श्रृत्तः। स्रृत्तिः स्रृत्तिः। स्रृत्तिः स्रृतिः। च। वः। नमः। नमः। तक्षभ्य इति तक्षं-भ्यः। रथकारेभ्यः इति रथ-कारेभ्यः। च। वः। नमः। नमः। कुलालेभ्यः। कुमरिभ्यः। च। वः। नमः। पुञ्जिष्टेभ्यः। निषादेभ्यः। च। वः। नमः। नमः। नमः। च्रृक्तः इति धन्वकृतः। धन्वकृत्यः इति धन्वकृतः। च। वः। नमः। नमः। मृग्युभ्यः इति मृग्यु-भ्यः। श्रृनिभ्यः। स्र्विभ्यः। स्र्वेष्ठः। स्र्वेष्ठः। स्र्वेष्ठः। स्र्वेष्ठः। स्र्वेष्ठः। स्र्वेष्ठः। स्र्वेष्ठः। स्र्वेष्ठः। स्र्वेष्ठः। स्र्वेष्यः। स्र्वेष्यः। स्र्वेष्ठः। स्

इति श्वनि-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। श्वभ्य इति श्व-भ्यः। श्वपंतिभ्य इति श्वपंति-भ्यः। च। वः। नर्मः॥ (१०)

नमंः। भ्वायं। च। रुद्रायं। च। नमंः। श्वायं। च।
पशुपतंय इति पशु-पत्ये। च। नमंः। नीलंग्रीवायेति
नीलं-ग्रीवाय। च। शितिकण्ठायेति शिति-कण्ठांय। च।
नमंः। कपर्दिनें। च। व्युप्तकेशायेति व्युप्त-केशाय। च।
नमंः। सहस्राक्षायेति सहस्र-अक्षायं। च। शत्यंन्वन इति
शत-धन्वने। च। नमंः। गिरिशायं। च। शिपिविष्टायेति
शिपि-विष्टायं। च। नमंः। गिरिशायं। च। शिपिविष्टायेति
शिपि-विष्टायं। च। नमंः। मीदुष्टंमायेति मीदुः-तमाय। च।
इष्मत् इतीष्-मते। च। नमंः। ह्रस्वायं। च। वामनायं।
च। नमंः। बृह्ते। च। वर्षीयसे। च। नमंः। वृद्धायं। च।
संवृध्वंन इति सम्-वृध्वंने। च। (११)

नर्मः। अग्नियाय। च। प्रथमायं। च। नर्मः। आश्वै। च। अजिरायं। च। नर्मः। शीघ्रियाय। च। शीभ्याय। च। नर्मः। ऊर्म्याय। च। अवस्वन्यायेत्यंव-स्वन्याय। च। नर्मः। स्रोतस्याय। च। द्वीप्याय। च॥ (१२)

नमंः। ज्येष्ठायं। च। किन्ष्ठायं। च। नमंः। पूर्वजायेतिं पूर्व-जायं। च। अपुरजायेत्यंपर-जायं। च। नमंः। मध्यमायं। च। अपुर्वलभायेत्यंपर-गुल्भायं। च। नमंः। जुघन्यांय। च। बुध्नियाय। च। नमंः। सोभ्याय। च। प्रतिसूर्यायि। प्रति-सूर्याय। च। नमंः। याम्याय। च। क्षेम्यांय। च।

नमंः। उर्वर्याय। च। खल्याय। च। नमंः। श्लोक्याय। च। अवसान्यायेत्यंव-सान्याय। च। नमंः। वन्याय। च। कक्ष्याय। च। नमंः। श्रवायं। च। प्रतिश्रवायेति प्रति-श्रवायं। च। (१३)

नमंः। आशुषेणायेत्याशु-सेनाय। च। आशुरंथायेत्याशु-रथाय। च। नमंः। शूरांय। च। अविभिन्दत इत्यंव-भिन्दते। च। नमंः। वर्मिणे। च। वरूथिने। च। नमंः। बिल्मिने। च। क्वचिने। च। नमंः। श्रुतायं। च। श्रुत्सेनायेति श्रुत-सेनायं। च॥ (१४)

नमंः। दुन्दुभ्याय। च। आह्नन्यायेत्याँ-हृन्न्याय। च। नमंः। धृष्णवेँ। च। प्रमृशायेति प्र-मृशायं। च। नमंः। दूतायं। च। प्रहितायेति प्र-हिताय। च। नमंः। निषक्षिण् इति नि-सङ्गिनैं। च। इषुधिमत् इतीषुधि-मतेँ। च। नमंः। तीक्ष्णेषंव इति तीक्ष्ण-इषवे। च। आयुधिनैं। च। नमंः। स्वायुधायेति सु-आयुधायं। च। सुधन्वेन इति सु-धन्वेन। च। नमंः। सुत्याय। च। पथ्याय। च। नमंः। काट्यांय। च। नमंः। नाद्याय। च। नमंः। सूद्याय। च। स्र्रस्याय। च। नमंः। नाद्यायं। च। वैशन्तायं। च। (१५)

नमंः। कूप्यांय। च। अवट्यांय। च। नमंः। वर्ष्यांय। च। अवर्ष्यायं। च। नमंः। मेध्यांय। च। विद्युत्यांयेतिं वि-द्युत्यांय। च। नमंः। ई्रियांय। च। आतुप्यांयेत्यां-तुप्यांय। च्। नर्मः। वात्यांय। च्। रेष्मियाय। च्। नर्मः। वास्तव्यांय। च। वास्तुपायेतिं वास्तु-पायं। च॥ (१६)

नर्मः। सोमाय। च। रुद्रायं। च। नर्मः। ताम्रायं। च। अरुणायं। च। नर्मः। शृङ्गायं। च। पृशुपतंय इतिं पशु-पतंये। च। नर्मः। उग्रायं। च। भीमायं। च। नर्मः। अग्रेवधायेत्यंग्रे-वधायं। च। दूरेवधायेतिं दूरे-वधायं। च। नर्मः। हुन्ने। च। हनीयसे। च। नर्मः। वृक्षेभ्यः। हरिकेशेभ्य इति हरि-केशेभ्यः। नर्मः। तारायं। नर्मः। शृम्भव इतिं शम्-भवें। च। म्योभव इतिं मयः-भवें। च। नर्मः। शृङ्करायेतिं शम्-करायं। च। म्यस्करायेतिं मयः-करायं। च। नर्मः। शिवायं। च। शिवतंरायेतिं शिव-तराय। च। (१७)

नमंः। तीर्थ्याय। च। कूल्याय। च। नमंः। पार्याय। च। अवार्याय। च। नमंः। प्रतरंणायति प्र-तरंणाय। च। उत्तरंणायेत्युंत्-तरंणाय। च। नमंः। आतार्यायेत्याँ-तार्याय। च। आलाद्यायेत्याँ-लाद्याय। च। नमंः। शष्य्याय। च। फेन्याय। च। नमंः। सिक्त्याय। च। प्रवाह्यायेति प्र-वाह्याय। च॥ (१८)

नर्मः। इरिण्याय। च। प्रपथ्यायिति प्र-पथ्याय। च। नर्मः। किर्शिलाये। च। क्षयंणाय। च। नर्मः। कपर्दिनैं। च। पुल्रस्तयें। च। नर्मः। गोष्ठ्यायेति गो-स्थ्याय। च। गृह्याय। च। नर्मः। तल्प्याय। च। गेह्याय। च। नर्मः। काट्याय। च। गृह्वरेष्ठायेति गह्वरे-स्थायं। च। नर्मः। हृद्य्याय। च। निवेष्यायेति नि-वेष्याय। च। नर्मः। पार्स्याय। च। रजस्याय। च। नर्मः। शुष्क्याय। च। हृरित्याय। च। नर्मः। लोप्याय। च। उलप्याय। च। (१९)

नमंः। ऊर्व्याय। च। सूर्म्याय। च। नमंः। पुर्णाय। च। पूर्णशृद्यायिति पर्ण-शृद्याय। च। नमंः। अपगुरमाणायत्यप-गुरमाणाय। च। अभिष्ठत इत्यभि-ष्ठते। च। नमंः। आख्खिदत इत्या-खिदते। च। प्रख्खिदत इति प्र-खिदते। च। नमंः। वः। किरिकेभ्यः। देवानाम्। हृदयेभ्यः। नमंः। विक्षीणकेभ्य इति वि-क्षीणकेभ्यः। नमंः। विचिन्वत्केभ्यः। नमंः। आनिर्हतेभ्य इत्यानिः-हृतेभ्यः। नमंः। आमीवत्केभ्यः इत्यानिः-ह्तेभ्यः। नमंः। आमीवत्केभ्यः इत्यानिः-ह्तेभ्यः। नमंः। आमीवत्केभ्यः इत्यानिः-ह्तेभ्यः।

द्रापें। अन्धंसः। प्रते। दरिद्रत्। नीलंलोहितित् नीलं-लोहित्॥ एषाम्। पुरुषाणाम्। एषाम्। प्रशूनाम्। मा। भेः। मा। अरः। मो इतिं। एषाम्। किम्। चन। आममत्॥ या। ते। रुद्र। शिवा। तृनः। शिवा। विश्वाहंभेषजीतिं विश्वाहं-भेषजी॥ शिवा। रुद्रस्यं। भेषजी। तयां। नः। मृड। जीवसें॥ इमाम्। रुद्रायं। त्वसें। कप्रिंनें। क्षयद्वीरायेति क्षयत्-वीराय। प्रेति। भ्रामहे। मृतिम्॥ यथां। नः। शम्। असंत्। द्विपद् इति द्वि-पदें। चतुंष्यद् इति चतुंः-पदे। विश्वम्ं। पुष्टम्। ग्रामें। अस्मिन्। (२१)

अनांतुर्मित्यनां-तुर्म्॥ मृडा। नः। रुद्र। उत। नः। मयंः। कृिष्। क्षयद्वीरायिति क्षयत्-वीरायः। नमसा। विषेमः। ते॥ यत्। शम्। च। योः। च। मनुः। आयज इत्यां-यजे। पिता। तत्। अश्यामः। तवं। रुद्र। प्रणीताविति प्र-नीतौ॥ मा। नः। महान्तम्। उत। मा। नः। अर्भकम्। मा। नः। उक्षन्तम्। उत। मा। नः। उक्षितम्॥ मा। नः। वधीः। पितरम्। मा। उत। मातरम्। प्रियाः। मा। नः। तनुवंः। (२२)

रुद्र। रीरिषः॥ मा। नः। तोके। तनये। मा। नः। आयंषि। मा। नः। गोषुं। मा। नः। अश्वंषु। रीरिषः॥ वीरान्। मा। नः। रुद्र। भामितः। वधीः। ह्विष्मंन्तः। नमसा। विधेम्। ते॥ आरात्। ते। गोघ्न इतिं गो-घ्ने। उत। पूरुषघ्न इतिं पूरुष-घ्ने। श्वयद्वीरायेतिं श्वयत्-वीराय। सुम्नम्। अस्मे इतिं। ते। अस्तु॥ रक्षां। च। नः। अधीतिं। च। देव। ब्रूहि। अधां। च। नः। शर्म। यच्छ। द्विबर्हा इतिं द्वि-बर्हाः॥ स्तुहि। (२३)

श्रुतम्। गृर्तसद्मितिं गर्त-सदम्ं। युवांनम्। मृगम्। न। भीमम्। उपहृत्नुम्। उग्रम्॥ मृडा। जिर्त्रे। रुद्र। स्तवांनः। अन्यम्। ते। अस्मत्। नीति। वपन्तु। सेनाः॥ परीति। नः। रुद्रस्यं। हेतिः। वृणक्तु। परीतिं। त्वेषस्यं। दुर्मितिरितिं दः-मृतिः। अघायोरित्यंघा-योः॥ अवेतिं। स्थिरा। मृघवंद्र्य इतिं मृघवंत्-भ्यः। तुनुष्व। मीढ्वंः। तोकायं। तनयाय। मृड्य॥ मीढुंष्टमेति मीढुंः-तुम्। शिवंतमेति शिवं-तुम्। शिवः। नः। सुमना इति सु-मनाः। भव॥ प्रमे। वृक्षे। आयुंधम्। निधायेति नि-धायं। कृत्तिम्। वसानः। एति। चर। पिनांकम्। (२४)

बिभ्रंत्। एतिं। गृहि॥ विकिरिदेति वि-किरिदा विलोहितित वि-लोहिता नर्मः। ते। अस्तु। भृगव इतिं भग-वः॥ याः। ते। सहस्रम्ं। हेतर्यः। अन्यम्। अस्मत्। नीतिं। वपन्तु। ताः॥ सहस्रांणि। सहस्रधेतिं सहस्र-धा। बाहुवोः। तवं। हेतर्यः॥ तासांम्। ईशांनः। भृगव इतिं भग-वः। प्राचीनां। मुखां। कृथि॥ (२५)

सहस्राणि। सहस्रश इति सहस्र-शः। ये। रुद्राः। अधीति।
भूम्याँम्॥ तेषाँम्। सहस्र्योजन इति सहस्र-योजने। अवेति।
धन्वांनि। तन्मसि॥ अस्मिन्। महिता अर्णवे। अन्तरिक्षे।
भवाः। अधि॥ नीलंग्रीवा इति नीलं-ग्रीवाः। शितिकण्ठा इति शिति-कण्ठाः। शर्वाः। अधः। क्षमाचराः॥ नीलंग्रीवा इति नीलं-ग्रीवाः। शितिकण्ठा इति शिति-कण्ठाः। दिवम्। रुद्राः। उपिश्रेता इत्युपं-श्रिताः॥ ये। वृक्षेषुं। सस्पिञ्जराः। नीलंग्रीवा इति नीलं-ग्रीवाः। विलोहिता इति वि-लोहिताः॥ ये। भूतानाम्। अधिपतय इत्यधि-पृत्यः। विशिखास इति वि-शिखासः। कप्रदिनः॥ ये। अन्नेषु। विविध्यन्तीति वि-विध्यन्ति। पानेषु। पिबंतः। जनान्॥ ये। पृथाम्। पृथिरक्षंय इति पिथ-रक्षंयः। पृलुबृदाः। यृत्युधंः॥ ये। तीर्थानि। (२६)

प्रचर्न्तीतिं प्र-चरंन्ति। सृकावंन्त् इतिं सृका-वृन्तः। निषक्षिण् इतिं नि-सङ्गिनः॥ ये। एतावंन्तः। च। भूयार्थसः। च। दिशः। रुद्राः। वितस्थिर इतिं वि-तस्थिरे॥ तेषांम्। सहस्रयोजन इतिं सहस्र-योजने। अवेतिं। धन्वांनि। तन्मसि॥ नमः। रुद्रेभ्यः। ये। पृथिव्याम्। ये। अन्तरिक्षे। ये। दिवि। येषांम्। अन्नम्ं। वातः। वर्षम्। इषंवः। तेभ्यः। दशं। प्राचीः। दशं। दक्षं। दक्षं। दक्षं। दक्षं। दक्षं। दक्षं। तेभ्यः। नमः। ते। नः। मृह्यन्तु। ते। यम्। द्विष्मः। यः। च। नः। द्वेष्टं। तम्। वः। जम्भें। दधामि॥ (२७)

त्र्यम्बक्मिति त्रि-अम्बक्म्। यजामहे। सुगन्धिमिति सुगन्धिम्। पुष्टिवर्धनमिति पुष्टि-वर्धनम्॥ उर्वारुकम्। इव।
बन्धनात्। मृत्योः। मुक्षीय। मा। अमृतात्। यः। रुद्रः। अग्नौ।
यः। अफ्रिक्त्यंप्-सु। यः। ओषधीषु। यः। रुद्रः। विश्वाः।
भुवना। आविवेशेत्याः-विवेशः। तस्मैः। रुद्रायं। नमः। अस्तु॥
॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



॥ मन्त्रपुष्पम्॥

ॐ भृद्रं कर्णेभिः शृणुयामं देवाः। भृद्रं पंश्येमाक्षिभिर्यजंत्राः। स्थिरेरक्नैंस्तुष्टुवारसंस्तुनूभिः। व्यशेम देविहेतुं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रों वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नंः पूषा विश्ववंदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृह्स्पतिंर्दधातु॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

योऽपां पुष्पं वेदं। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भंवति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भंवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। अग्निर्वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। योँऽग्नेरायतंनं वेदं॥

आयतंनवान् भवति। आपो वा अग्नेरायतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतेनं वेदं। आयतंनवान् भवति। वायुर्वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यो वायोरायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति॥

आपो वै वायोग्यतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। असौ वै तपंत्रपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। योऽमुष्य तपंत आयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वा अमुष्य तपंत आयतंनम्॥

आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। चन्द्रमा वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यश्चन्द्रमंस आयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वै चन्द्रमंस आयतंनम्। आयतंनवान् भवति॥ य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। नक्षंत्राणि वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यो नक्षंत्राणामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वै नक्षंत्राणामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। य पुवं वेदं॥८२॥

योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। पूर्जन्यो वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यः पूर्जन्यंस्याऽऽयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वै पूर्जन्यंस्याऽऽयतंनम्। आयतंनवान् भवति। य पुवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं॥

आयतंनवान् भवति। संवथ्सरो वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यः संवथ्सरस्याऽऽयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वे संवथ्सरस्याऽऽयतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योंऽपसु नावं प्रतिंष्ठितां वेदं। प्रत्येव तिष्ठति॥

राजाधिराजायं प्रसह्यसाहिनें। नमों वयं वैंश्रवणायं कुर्महे। स मे कामान्कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैंश्रवणो दंदातु। कुबेरायं वैश्रवणायं। महाराजाय नमः॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ दशशान्तयः॥

ॐ भृद्रं कर्णेभिः शृणुयामं देवाः। भृद्रं पंश्येमाक्षिभिर्यजंत्राः। स्थिरेरङ्गैस्तुष्टुवारसंस्तुनूभिः। व्यशेम देविहेतं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववंदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यीं अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृह्स्पतिर्दधातु॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥१॥

ॐ नमो ब्रह्मणे नमों अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम् ओषंधीभ्यः। नमों वाचे नमों वाचस्पतिये नमो विष्णंवे बृह्ते कंरोमि॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥२॥

नमों वाचे या चोदिता या चानुंदिता तस्यैं वाचे नमो नमों वाचे नमों वाचस्पतंये नम ऋषिंभ्यो मन्नकृद्धो मन्नपितभ्यो मा मामृषंयो मञ्जकृतो मञ्जपतंयः परांदुर्माहमृषींन्मञ्जकृतो मन्नपतीन्परादां वैश्वदेवीं वाचंमुद्यास शिवामदंस्तां जुष्टां देवेभ्यः शर्म मे द्यौः शर्म पृथिवी शर्म विश्वमिदं जगंत्। शर्म चन्द्रश्च सूर्यश्च शर्म ब्रह्मप्रजापती। भूतं वंदिष्ये भुवंनं वदिष्ये तेजों वदिष्ये यशों वदिष्ये तपों वदिष्ये ब्रह्मं वदिष्ये सत्यं विदिष्ये तस्मां अहमिदमुंपस्तरंणमुपंस्तृण उपस्तरंणं मे प्रजायै पश्नां भूयादुपस्तरंणमहं प्रजायै पश्नां भूयासं प्राणांपानौ मृत्योमां पातं प्राणांपानौ मा मां हासिष्टं मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं वदिष्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वाचंमुद्यास र शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अवन्तु शोभायै पितरोऽनुंमदन्तु। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥३॥ शं नो वार्तः पवतां मातिरश्वा शं नंस्तपतु सूर्यः।

शं नो वातः पवतां मात्रिश्वा शं नस्तपतु सूर्यः। अहानिशं भवन्तु नः श॰ रात्रिः प्रतिधीयताम्। शमुषा नो व्युच्छतु शमादित्य उदेतु नः। शिवा नः शन्तमा भव सुमृडीका सरंस्वति। मा ते व्योम स्न्हिशं। इडांये वास्त्वंसि वास्तुमद्वांस्तुमन्तों भूयास्म मा वास्तोंश्छिथ्स्मह्यवास्तुः स भूंयाद्योंऽस्मान्द्वेष्टि यं चं वयं द्विष्मः। प्रतिष्ठासिं प्रतिष्ठावंन्तो भूयास्म मा प्रतिष्ठायांश्छिथ्स्मह्यप्रतिष्ठः स भूंयाद्योंऽस्मान्द्वेष्टि यं चं वयं द्विष्मः। आ वांत वाहि भेषजं वि वांत वाहि यद्रपंः। त्वश् हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयंसे। द्वाविमो वातौं वात आ सिन्धोरा पंरावतः॥

दक्षं मे अन्य आवातु परान्यो वातु यद्रपंः। यद्दो वांतते गृहें ऽमृतंस्य निधिर्हितः। ततों नो देहि जीवसे ततों नो धेहि भेषजम्। ततों नो मह आवंह वात आवांतु भेषजम्। शम्भूर्मयोभूर्नो हृदे प्र ण आयू ५ षि तारिषत्। इन्द्रंस्य गृहोंऽसि तं त्वा प्रपंद्ये सगुः सार्श्वः। सह यन्मे अस्ति तेन। भूः प्रपंद्ये भुवः प्रपंद्ये सुवः प्रपंद्ये भूर्भुवः सुवः प्रपंद्ये वायुं प्रपद्येऽनौर्तां देवतां प्रपद्येऽश्मानमाखणं प्रपंद्ये प्रजापंतेर्ब्रह्मकोशं ब्रह्म प्रपंद्य ओं प्रपंद्ये। अन्तरिक्षं म उर्वन्तरं बृहद्ग्रयः पर्वताश्च यया वातः स्वस्त्या स्वंस्तिमान्तयां स्वस्त्या स्वंस्तिमानंसानि। प्राणापानौ मृत्योर्मा पातं प्राणांपानौ मा मां हासिष्टं मियं मेधां मियं प्रजां मय्यग्निस्तेजों दधातु मियं मेधां मियं प्रजां मयीन्द्रं इन्द्रियं दंधातु मियं मेधां मियं प्रजां मिय सूर्यो भ्राजों दधातु॥

द्युभिर्क्तुभिः परिपातम्स्मानरिष्टेभिरिश्वना सौभंगेभिः। तन्नो मित्रो वर्रुणो मामहन्तामिदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्योः। कयां निश्चित्र आ भ्वदूती सदावृधः सखाँ। कया शिचेष्ठया वृता। कस्त्वां सत्यो मदानां मश्हिष्ठो मध्सदन्धंसः। दृढाचिदारुजे वसुं। अभी षुणः सखींनामिवता जीरितृणाम्। शृतं भवास्यूतिभिः। वयः सुपूर्णा उपंसेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः। अपं ध्वान्तमूणुंहि पूर्धि चक्षुंमुगुर्ध्यंस्मान्निधयेव बद्धान्॥

शं नों देवीर्भिष्टंय आपों भवन्तु पीतयें। शं योर्भिस्नंवन्तु नः। ईशांना वार्याणां क्षयंन्तीश्चर्षणीनाम्। अपो यांचामि भेषजम्। सुमित्रा न आप ओषंधयः सन्तु दुर्मित्रास्तस्में भूयासुर्यों ऽस्मान्द्वेष्टि यं चं वयं द्विष्मः। आपो हि ष्ठा मंयोभुवस्ता नं ऊर्जे दंधातन। महे रणांय चक्षंसे। यो वंः शिवतंमो रस्स्तस्यं भाजयतेह नंः। उशतीरिंव मातरंः। तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ॥

आपों जनयंथा च नः। पृथिवी शान्ता साग्निनां शान्ता सा में शान्ता शुच शमयत्। अन्तिरक्षिश शान्तं तद्वायुनां शान्तं तन्में शान्तश शुच शमयत्। द्यौः शान्ता सादित्येनं शान्ता सा में शान्ता शुच शमयत्। शमयत्। पृथिवी शान्तिरन्तिरक्षिश शान्तिर्द्यौः शान्तिर्दिशः शान्तिरवान्तरदिशाः शान्तिर्गिः शान्तिर्वायः शान्तिरादित्यः

शान्तिश्चन्द्रमाः शान्तिर्नक्षेत्राणि शान्तिरापः शान्तिरोषंधयः शान्तिर्वनस्पतंयः शान्तिर्गीः शान्तिरजा शान्तिरश्वः शान्तिः पुरुषः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिं ब्राह्मणः शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः शान्तिमें अस्तु शान्तिः। तयाहर शान्त्या सर्वशान्त्या मह्यं द्विपदे चतुंष्पदे च शान्तिं करोमि शान्तिंमें अस्तु शान्तिः। एह श्रीश्च हीश्च धृतिश्च तपों मेधा प्रंतिष्ठा श्रद्धा सत्यं धर्मश्चेतानि मोत्तिष्ठन्तुमनूत्तिष्ठन्तु मा माङ् श्रीश्च हीश्च धृतिश्च तपो मेधा प्रंतिष्ठा श्रद्धा सत्यं धर्मश्चेतानिं मा मा हांसिषुः। उदायुंषा स्वायुषोदोषंधीना १ रसेनोत्पर्जन्यंस्य शुष्मेणोदंस्थाममृता १ अनु। तचक्षुंर्देवहितं पुरस्तांच्छुऋमुचरत्। पश्येम श्ररदेः शतं जीवेम शरदेः शतं नन्दाम शरदेः शतं मोदाम शरदेः शतं भवीम शरदेः शत श्रुणवीम श्रुरदेः श्रुतं प्रब्रंवाम शरदेः शतमजीताः स्याम शरदेः शतं ज्योक्र सूर्यं दृशे। य उदंगान्महतोऽर्णवाहिभ्राजंमानः सरिरस्य मध्याथ्स मां वृषभो लोहिताक्षः सूर्यो विपश्चिन्मनंसा पुनातु। ब्रह्मणश्चोतंन्यसि ब्रह्मण आणी स्थो ब्रह्मण आवपनमसि धारितेयं पृथिवी ब्रह्मणा मही धारितमेनेन महदन्तरिक्षं दिवं दाधार पृथिवी सदेवां यदहं वेद तदहं धारयाणि मा मद्वेदोऽधिविस्नंसत्। मेधामनीषे माविंशता समीची भूतस्य भव्यस्यावंरुध्ये सर्वमायुरयाणि सर्वमायुरयाणि।

आभिर्गीर्भिर्यदतों न ऊनमाप्यांयय हरिवो वर्धमानः। यदा स्तोतृभ्यो महिं गोत्रा रुजािसं भूयिष्ठभाजो अधं ते स्याम। ब्रह्म प्रावादिष्म तन्नो मा हांसीत्। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥४॥

ॐ सन्त्वां सिश्चामि यजुषां प्रजामायुर्धनं च॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥५॥

शं नों मित्रः शं वर्रणः। शं नों भवत्वर्यमा। शं न् इन्द्रो बृह्स्पतिः। शं नो विष्णुंरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मांसि। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मं विद्यामि। ऋतं विद्यामि। सृत्यं विद्यामि। तन्मामंवतु। तद्क्तारंमवतु। अवंतु माम्। अवंतु वृक्तारम्। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥६॥

ॐ तच्छुं योरावृंणीमहे। गातुं युज्ञायं। गातुं युज्ञपंतये। दैवीं स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥७॥

ॐ सह नांववत्। सह नौं भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेज्ञस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥८॥

ॐ सह नांववतु। सह नौं भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः दशशान्तयः 155

शान्तिः॥९॥

ॐ सह नांववत्। सह नौं भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेज्ञस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥१०॥